ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थाक—५३

सम्पादक एव नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन

PACHPANKA PHER
[One Act Plays]
VIMLA LUTHARA

BHARATIYA JNANPITH
PUBLICATION

Second Edition 1963
Price Rs 3 00

o

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
प्रधान कार्यालय
९ अलीपुर पार्क प्लेस कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र
३६२०।२१नेताजी सुभाषमार्ग दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड रोड वाराणसी-५
मुद्रक
सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी-५
द्वितीय सस्करण १९६३
मूल्य तीन रुपये

अनुक्रम

पचपनका फेर



[अण्डर सेक्रेटरी हरगोपाल अपने दफ्तरमें बैठे फ़ाइलें देख रहे हैं। कमरा अन्य सरकारी दफ्तरोंकी भाँति सीधे सादे ढगसे सजा है। बडी-सी मेजपर फाइलोंके ढेर, क़लमदान, टेलेफोन, एशट्रे, पानीका गिलास इत्यादि रखे हैं। सामने दो-चार कुरसियाँ आने-जानेवालोंके लिए पडी हैं। दीवारपर एक कैलेण्डर टँगा है जिसपर उनके मन्त्रीजीकी तसवीर है। हरगोपाल बडी गम्भीरतासे किसी फाइलको पढनेमें व्यस्त हैं। एक क्लर्क हाथमें एक-दो फाइलें लिये आता है।]

हरगोपाल — और फाइलें ले आये? पहले ही क्या मेरे पास कम थी? इन्हें ही निपटानेमें पाँच-छह दिन लग जायेंगे। [मुसकराकर] तुम्हारा जो नया अफसर आयेगा उसके लिए भी तो कुछ काम बाकी रहने दो।

क्लर्क — साहब, यह फाइल तो बहुत आवश्यक है।

हरगोपाल — तो क्या हुआ? ऐसी भी क्या आवश्यक होगी—आठ-दस दिन इधर-उधर होनेसे कोई पहाड थोडे ही टूट पडेगा।

क्लर्क — नही, साहब, यह मामला बहुत टेढा है। बिहार सरकार-वाला झगडा और किसीकी समझमें नही आयेगा। आप तो इसको कई सालसे देख रहे है, आपको तो फाइलका एक-एक शब्द याद है।

हरगोपाल — [चापलूसीसे प्रसन्न होकर] अच्छा। तो यह रख जाओ, किन्तु इसके बाद और कोई फाइल मत ले आना। ज़रा सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबको मेरे पास भेजना।

[illegible]

क्लर्क [जाते हुए] बहुत अच्छा, साहब !

हरगोपाल [स्वत] फाइलें भेजे चले जाते हैं। देखूंगा इतना काम और कौन सँभालता है ! [टेलेफ़ोन बजता है] हैलो हाँ, कमला भई, क्षमा करो, भूल गया अभी लो। [घण्टी बजाता है। चपरासी आता है] देखो, तुम साइकिल लेकर जल्दी जाओ। बच्चूकी छुट्टी हो गयी होगी, उसे स्कूलसे लेकर घर पहुँचा दो और फिर राशन लाना। और कोई काम हो तो बीबीजीसे पूछ लेना। [टेलेफ़ोनपर] बस अभी पहुँच जायेगा पाँच मिनिटमें मैं क्या कर रहा हूँ ? अरे, वही जो रोज़ करता हूँ हाँ, अरजी लिख दी है कि रिटायर हो जानेके बाद भी दो महीने तक सरकारी बँगलेमें रहनेकी आज्ञा दी जाये नियम यही है कि दो महीनेसे अधिक मकान नहीं रखा जा सकता हाँ, तीस साल काम तो किया है, पर सरकार कोई इसके लिए अपनेको आभारी थोड़े ही समझती है

[बालकराम आता है। उसे बैठनेके लिए सकेत करके फ़ोनपर] तुम कह रही थी न कि दरियागंजमें तुम्हारे किसी रिश्तेदारका बड़ा-सा घर है, उसका कुछ हिस्सा मिल जायेगा – दरियागंज अच्छी जगह है शोर ? रहते-रहते आदत पड़ जायेगी कठिन ही दिखाई देता है ख़ैर घरपर आकर बात करूँगा। [टेलेफोन रख देता है। बालकरामसे] कहो, मेरे काग़ज़ तैयार हुए कि नहीं अभी ? लगवा लेते मेरा अँगूठा पेन्शनके काग़ज़ोंपर तो इस कामसे भी निश्चिन्त हो जाता।

बालकराम साहब, उसी काममें लगा हूँ। आपकी पेन्शनको कम्युट करानेके कागज़ तो टाइप हो गये हैं। प्रॉविडेण्ट फण्डका ड्राफ्ट भी तैयार हो रहा है। अब सर्विसका प्रमाणपत्र मिल जाये तो सारी फाइल आपके पास ले आऊँ।

हरगोपाल तुम्हें क्या हो गया, बालकराम ? तुम तो इतने सुस्त कभी नहीं थे।

बालकराम मैं तो भरसक प्रयत्न कर रहा हूँ। अपनी ओरसे तो सब ठीक-ठाक करके भेजा था, पर अकाउण्टेण्ट जनरलके दफ्तरने तीन हफ्ते फाइल दबाये रखनेके बाद अब यह पूछा है कि आपने जो १९३८ में पन्द्रह दिनकी छुट्टी ली थी वह १४ सितम्बरको दोपहरसे पहले शुरू हुई थी या बादमें ?

हरगोपाल यह अकाउण्टेण्ट जनरल तो बड़ी ही मुसीबत है। अच्छा, जितनी जल्दी हो सके इस कामको पूरा करो।

बालकराम साहब, आपके कामकी तो मुझे सबसे अधिक चिन्ता रहती है।

हरगोपाल वही रहनी है। मैं यह फाइलें देख रहा हूँ – बहुत कच्चा काम करके भेज रहे हैं दफ्तरवाले।

बालकराम [मुँह लटकाकर] क्या बताऊँ साहब, जबसे आपके जानेका सुना है, काममें जरा भी मन नहीं लगता। और मुझे ही क्या, सारे दफ्तरमें ऐसी उदासी छा गयी है कि क्या कहें। जिसे देखो हाथपर हाथ धरे बैठा है। आपने हमें जिस प्रेम और सहानुभूतिसे काम सिखाया है, क्या हम उसे कभी भूल सकते हैं ?

हरगोपाल — मैंने तो केवल अपना कर्त्तव्य पालन किया है। तुम लोगोंको अपने बच्चोंकी तरह सिखाया है। प्यार भी किया, उत्साह भी बढाया, डाँटा भी।

बालकराम — इसीलिए तो आपके जानेका इतना खेद हो रहा है, साहब आप जैसा अफसर हमें कहाँ मिलेगा! हमारी सरकार भी कमाल करती है—जो योग्य अफसर हो उसे काम करनेका ज्यादा मौका देना चाहिए। लेकिन नही, सरकार कुछ समझती ही नही, अब देखिए न, आपके काममे एक साल और लाभ उठा सकती थी, परन्तु माना ही नही।

हरगोपाल — क्या लेता एक साल और नौकरी करके? अच्छा है इस चुग़ली, चापलूसी, पक्षपातके वातावरणसे दूर हो जाऊँगा। तीस साल सवेरेसे शाम तक फाइल-ही-फाइल—इनसान थक भी जाता है।

बालकराम — यह तो ठीक है, लेकिन सारा दिन कामके बिना भी तो आपका मन नहीं लगेगा।

हरगोपाल — नही, मैं तो अब आराम करना चाहता हूँ। शहरसे दूर एक छोटी-सी झोपडी डाल लेंगे। कुछ जमीन, कुछ गाय-बकरी, कुछ धर्मचर्चा रहेगी।

[illegible] — इतना काम करनेके बाद आपको विश्राम करनेका पूरा हक है। लेकिन हमारा क्या होगा? हमे तो अपने लिए घबराहट हो रही है। न जाने आपकी जगह कौन आयेगा, कैसा स्वभाव होगा?

[एक बाईस-तेईस वर्षका युवक, मुँहमे पाइप लगाये कमरेमें बेधडक आता है, फिर बालकरामको देखकर जरा रुक जाता है।]

हरगोपाल — आइए, आइए, कपूर साहब !

कपूर — नही, आप काममे व्यस्त मालूम पडते है । मै फिर किसी समय आ जाऊँगा ।

हरगोपाल — नही, कोई ऐसा जरूरी काम नही । आप बैठिए तो । कहिए, कैसे आना हुआ ?

[बालकराम आदरसे उठ जरा पीछे जाकर खड़ा हो जाता है]

कपूर — ऐसे ही, सवेरेसे यह सडी हुई फाइले देखते-देखते थक गया । सोचा आपसे ही जरा गपशप रहे ।

हरगोपाल — ओहो, यह बात है !

कपूर — बात तो यही है । दो साल हो गये अण्डर सेक्रेटरी बने हुए । बुरे फँसे है, दोस्त ! न ठीक तरहसे खाना न पीना । किसी कामके लिए अवकाश ही नही मिलता । तुम कैसे खुशकिस्मत हो । रिटायर हो रहे हो, मजे करोगे । घर बैठे पेन्शन पाओगे । और हम ? काश, मैं भी रिटायर हो सकता !

हरगोपाल — घबराओ नही, धीरे-धीरे काममें मन लगने लगेगा ।

कपूर — भगवान् करे कि ऐसा हो ! मै तो मर जाऊँगा फाइले देखते-देखते ।

हरगोपाल — नही, ऐसा नही होता । शुरूमे थोडी घबराहट होती है, फिर तो ऐसा मन लगता है कि जैसे फाइलोके विना गति ही न हो । दस दिनकी छुट्टी भी लो तो जीवन शून्य मालूम देता है ।

कपूर — नही जी, हमसे यह न होगा। मैं तो प्रयत्न कर रहा हूँ कि किसी राजदूतके साथ विदेश चला जाऊँ। वहाँ वडे मज़े रहेंगे। वहाँका काम ही मिलना-मिलाना, इकट्ठे वैठकर खाना-पीना और ऐश करना हैं। आशीर्वाद दो कि मेरी इच्छा पूर्ण हो। [घड़ी देखकर] अरे, साढे चार हो गये! मैं चलता हूँ।

हरगोपाल — ऐसी भी क्या जल्दी! चले जाना।

कपूर — नही, मैंने क्लवमे किसीके साथ टेनिस खेलनेका वादा कर रखा है। कल मिलूँगा, अभी तो आप हैं न चार-पांच दिन? [जाता है।]

हरगोपाल — [वालकरामसे] देखा, वालकराम, इन नये अफसरोको?

बालकराम — मैं तो डर रहा हूँ कि ऐसे ही कोई साहव आपकी जगह आ गये तो हमारी क्या गति होगी।

हरगोपाल — तुम्हारी तो जो गति होगी सो होगी ही, सरकारकी क्या होगी? कलको यह लडका डिप्टी सेक्रेटरी वन जायेगा। क्या तो यह नोट लिखेगा और क्या दफ्तर चलायेगा!

।लकर । — साहव, पुराने अफसरोंका काम करनेका तथा काम लेनेका ढग और था।

— मुझे याद है, हमने काम किस तरह किया और कैसे सीखा, वह जमाना और था। एक दिन दफ्तरसे जाने लगे, साढे छह वज चुके थे। साहवने वुलाकर कहा, "मिस्टर हरगोपाल, यह कुछ काम आ गया है। इसे तुम्ही निवटा सकते हो। कल सवेरे तक पूरा मिलना चाहिए।" साहव तो कहकर चले गये, लेकिन मैंने न खाना खाया,

न सोया। रात-भर अकेले दफ्तरमे वैठकर, उसी कमरेमे जहाँ अव तुम वैठते हो, काम पूरा किया। सुवह नौ वजे साहवकी मेज़पर पहुँचा दिया तो साँस ली।

वालकराम — क्या कहने, साहव, आपके।

हरगोपाल — मै तो अव भी यही कहूँगा कि नौकरीमे दो वाते वडी ज़रूरी हैं – स्वामिभक्ति और सच्चरित्रता। इनके विना काम आगे चल ही नही सकता। खैर, हमने तो अच्छा-वुरा जैसा हुआ निवटा दिया। अव तुम जानो और तुम्हारे नये साहव जाने।

वालकराम — नये साहव तो जव आयेगे देखा जायेगा, पहले आपका काम तो करके ले आऊँ। अभी तो आप ठहरेंगे न थोडी देर ?

हरगोपाल — [हँसते हुए] हाँ, मुझे कोई टेनिस या पोलो खेलने थोडे ही जाना है।

[वालकराम जाता है।]

[परदा]

[हरगोपालके घरका गोल कमरा। हरगोपाल कमरेमें वडे अन्यमनस्क भावसे इधर-उधर चक्कर लगा रहे है। अलमारी खोलकर एक किताव निकालते है। उसके पन्ने इधर-उधर उलटते है, फिर उसको टपसे वन्द कर देते है। दूसरी निकालते हैं, उसकी भी यही गति होती है। फिर अँगीठीपर रखी तसवीरें उठाकर इधर-उधर रखते हैं। फूलदानमें-से फूल निकालकर खिड़कीके वाहर फेंकते है। उनके हर-एक कामसे वेचैनी झलकती है। वैठकर अखवार पढनेकी कोशिश करते हैं। फिर अखवार भी जोरसे पटक देते है। खिसियाने होकर आवाज देते हैं।]

पटरन्वा फेर

हरगोपाल — कमला! यह गन्ध कैसी आ रही है?

कमला — [अन्दरसे] नही तो, गन्ध तो कोई नही।

हरगोपाल — किसी चीज़के जलनेकी बू है।

कमला — नारायणने अँगीठी जलानेके लिए कागज़ डाला होगा, या दालका पानी उबल रहा होगा।

हरगोपाल — और वह रायसिंह कहाँ है? मेरे जूतोपर अभीतक पॉलिश नही हुई।

कमला — उसे बाज़ार भेजा है। अभी लौटकर पॉलिश कर देगा। आपको कोई दफ्तर थोडे ही जाना है।

हरगोपाल — [चिढ़कर] दफ्तर नही जाना है तो जूतोपर पॉलिश भी नही होगी, धोबी कपडे भी नही लायेगा, कमीजोमें बटन भी नही लगेंगे? तो भगवे कपडे पहनकर फिरा करूँ?

कमला — [कमरेमें प्रवेश करते हुए] क्या हो गया है आपको? ज़रा-ज़रा-सी बातपर खीझने लगे है। तुम्ही बताओ नौकरको सुबह सब्ज़ी लेने न भेजूँ तो खाना समयपर कैसे तैयार होगा?

[illegible]ाल — जैसे पहले होता था।

[illegible]ा — पहले तो चपरासी सुबह आता था, साइकिलपर सब चीजें ला देता था। अब रायसिंहको पैदल जाना पडता है, तो देर तो लगेगी ही।

[illegible]गोपाल — और सामान बाँधना तो अभीतक शुरू ही नही किया।

कमला — आप कुछ तय भी तो करें, कहाँ जाना है, क्या करना है?

हरगोपाल — जाना कहाँ है! यह भी भली कही! अभी तो दरियागज ही जायेंगे, और कहाँ?

कमला इतने चिड़चिड़े क्यों हो गये हैं आप ?

हरगोपाल तुम तो बात-बातमें ताने देती हो ।

कमला ताने कौन देता है ? मैंने तो सरल-स्वभाव पूछा कि कहाँ जाना है। उसी हिसाबसे सामान बाँधूँ। आप कह रहे थे न कि देहरादूनके पास, पर्वतोंकी छाया-तले झोपड़ी बनाकर रहेंगे। वरना दरियागंजके लिए सामान बाँधनेकी क्या जरूरत है! अभी चपरासी ठेला लेकर आता है तो बहुत-सी चीजें लदवाकर भेज देती हूँ। उसमें देर ही क्या लगेगी!

हरगोपाल [झल्लाकर] चपरासी भी तो नहीं आया अभीतक ।

कमला इसमें मेरा तो कोई दोष नहीं ।

[हरगोपाल अपने लड़केको आवाज देता है]

हरगोपाल जीत! ओ जीत! जरा इधर आना। जल्दी! [जीत आता है] पड़ोसवालोंके यहाँसे जाकर जरा टेलेफोन करके पूछो कि चपरासी दफ्तरसे चला कि नहीं अभी ?

जीत अच्छा, पिताजी! [जाता है]

हरगोपाल कैसे कृतघ्न हैं ये लोग! मैंने ही इसे नौकर करवाया, फिर इनके ऊपरवालोंको छोड़कर इसे पक्का करवाया। कहता था कि जबतक जीऊँगा आपका दास बनकर रहूँगा।

कमला पिछले छह सालोंसे सारे दिन यहीं पड़ा रहता था। चाय, पानी, खाना, कपड़ा—अपना ही नहीं, अपने बच्चोंका भी। आज बच्चा बीमार है तो कल लड़कीका गौना। अब कहेगा साहब क्या बताऊँ, छुट्टी ही नहीं मिलती।

हरगोपाल — उस सुपरिण्टेण्डेण्टके बच्चेको तो देखो, कितनी चापलूसी करता था साहव, आपका गुलाम हूँ, जिस समय कहिएगा हाजिर हो जाऊँगा। देख लो, दो महीने हो गये, कभी सूरत दिखाई दी उसकी ?

[जीत आता है]

जीत — पिताजी, उनका टेलेफोन खराव है।

कमला — क्या मुसीवत है ! मुए टेलेफोन भी उठाकर ले गये। पेन्शन क्या मिली आफत आयी। भला पूछो, यहाँ टेलेफोन लगा रहनेसे किसीको क्या तकलीफ थी ? अव मुँह उठा-कर दरवाज़ेको घूर-घूरकर देखो कि कव चपरासी आये और काम शुरू हो।

[हरगोपालके दो पुराने पेन्शन पानेवाले मित्र प्रवेश करते है। कमला नमस्कार करके चुपकेसे अन्दर चली जाती है।]

हरगोपाल — आइए, आइए, चोपडा साहव, नन्दा साहव !

नन्दा — घूमने निकले थे। सोचा अव तो तुम भी हमारी बिरादरीमे सम्मिलित हो गये, जरा देखते चले, क्या हो रहा है।

डा। — कहो, क्या कर रहे हो ?

गोपाल — मक्खियाँ मार रहा हूँ, और क्या करना है !

— हमने तो आपसे पहले ही कहा था कि अपना एक नियम वना लो, प्रात काल सैर करने चला करो—हमारी उमरके लोगोके लिए वहुत जरूरी है। प्रात कालके वायु-सेवनसे एक तो पाचन-शक्ति ठीक रहती है, दूसरे आत्माको भी शान्ति मिलती है।

हरगोपाल — कहते तो आप शायद ठीक ही होंगे, परन्तु सैर भी कितनी देर करूँ, आठ बजे नहीं, नौ बजे घर आ जाऊँगा। फिर भी सारा दिन पड़ा है।

चोपड़ा — किसी समाजके सदस्य बन जाओ। नहा-धोकर गये, दो घण्टे वहाँ बिता आये। अपने कई साथी मिल जाते हैं। ज़रा गपशप चलती है। दिल बहला रहता है।

नन्दा — मैं तो पुस्तकालय चला जाता हूँ। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ देखी, कुछ तसवीरें। ज़मानेकी नब्ज़पर जैसे हाथ रखा हो—दुनिया किस चाल चलती है।

हरगोपाल — ज़मानेकी चालका पता तो घर बैठे ही लग जाता है—निजी अनुभवसे। पेन्शन कम्यूट अभीतक नहीं हुई। दफ्तर-वाले कागज़ अर्थ-विभागके पास बताते हैं, और वहाँवाले दफ्तरके पास। बात वहीकी-वही है।

चोपड़ा — मेरी रायमें तो पेन्शन कम्यूट कराओ ही नहीं। मैंने क्या लिया पेन्शन कम्यूट कराके—तीस हज़ार मिला था, दस हज़ार व्यापारमें लगाया, दस हज़ारके शेयर खरीद लिये। न इसमें-से कुछ मिला, न उसमें-से कुछ वसूल हुआ, बल्कि रुपया ही फँस गया। मैं तो कहता हूँ वही सात हज़ार रुपये अच्छे रहे जो लड़कीकी शादीमें ख़र्च किये। कम्यूट न कराता तो पाँच सौ रुपये महीने तो आते।

नन्दा — पेन्शन पाना भी जीवनमें नयी उलझनें पैदा कर देता है। तुमको ज़बरदस्ती यह महसूस कराया जाता है कि अब तुम बूढ़े और बेकार हो गये, चाहे तुम कितने ही हृष्ट-पुष्ट क्यों न हो।

चोपड़ा — मैं तो समझता हूँ यह असूल ही ग़लत है कि मनुष्य पचपन सालकी उमरमें रिटायर हो। हाई कोर्टके जजोंको देखो, साठ-पैंसठ साल तक काम करते हैं।

हरगोपाल — [मुसकराकर] और हमारे नेता तो इस उमरपर आकर शादी करते हैं। साठ-सत्तर सालके होकर मन्त्री बनते हैं। रिटायर होते तो इनको न कभी किसीने देखा न सुना।

नन्दा — ऐसे तो बहुत-से लोग हैं। डॉक्टरोंको ही देख लो। जवानको कोई पूछता नहीं। कहते हैं, अनाड़ी है, अनुभव नहीं, चाहे वह कितना ही योग्य क्यों न हो।

हरगोपाल — तो हम सरकारी नौकरोंने ही क्या अपराध किया है जो हमें इतनी जल्दी नौकरीसे अलग कर दिया जाता है? बेकार ही अपनी हीनताका, चाहे शारीरिक हो या मानसिक, अनुभव होने लगता है।

नन्दा — ठीक कहते हो दोस्त! देख लो, जो लोग हमारे आगे पीछे फिरा करते थे वह भी अब परवा नहीं करते, तो दूसरोंकी भली कही। मैंने तो इसी उलझनसे निकलनेके लिए एक-दो जगह नौकरी भी की।

[illegible] — अच्छा!

[illegible] — लेकिन उसमें एक बड़ी अड़चन यह है कि एक-आध सालके लिए ही नौकरी मिलती है। इतने कम समयमें इनसान अपनी योग्यताका प्रमाण भी क्या दे!

हरगोपाल — पेन्शन पाना क्या इतना बुरा समझा जाता है? तब तो, भैया, मैं नहीं करूँगा ऐसी नौकरी।

चोपड़ा तो करोगे क्या ?

हरगोपाल देहरादूनके जंगलोंमें एक बहुत सुन्दर स्थान है। एक ओर नाला बहता है, दूसरी ओर बरफीले पानीका झरना है। एक बार उधर घूमने गये थे तो देखा था। तबसे मनमें यही विचार आता है कि वहीं एक झोपड़ी डाल लूँ। कितनी शान्ति मिलती है प्रकृतिकी गोदमें ! न किसीका लेना न देना।

चोपड़ा कल्पना तो अच्छी है, लेकिन ऐसा होना कठिन है।

हरगोपाल क्या कठिनाई है ?

चोपड़ा तुम्हारा खाना कौन बनायेगा ?

हरगोपाल मेरी पत्नी।

नन्दा और झरनेको कबतक देखा करोगे ? एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चौथे दिन चाहोगे उसमें डूब मरूँ।

[चोपड़ा और नन्दा हँसते हैं]

हरगोपाल तुम लोग तो इसे मजाक समझ रहे हो।

चोपड़ा मजाक ही तो है यह। अरे भाई, न अखबार मिलेगा, न डाकिया आयेगा। कोई हनीमून मनाने तो जा नहीं रहे हो कि सारे दिन पत्नीकी सूरत देखकर काट दोगे।

नन्दा स्वयं तो मुसीबत उठाओगे ही—पत्नीको क्यों साथमें घसीटते हो ?

चोपड़ा दोनों बैठकर सारे दिन लड़ाई-झगड़ा करोगे। यह बहकी-बहकी बातें छोड़ दो। कोई कामकी बात करो। शहरसे दूर ही रहना चाहते हो तो पाँच-दस एकड़ जमीन खरीद

लो। खेती करो, हल चलाओ। स्वय भी सुख भोगोगे, देशको भी लाभ होगा। आजकल जितना पैसा जमीन पैदा कर रही है और किसी काममें नही मिलेगा। मै सच कहता हूँ कि यदि मैंने अपना पैसा इधर-उधर न फँसाया होता तो मै तो खेती ही करता।

नन्दा यह वानप्रस्थ आश्रमकी वेकार जिन्दगीसे तो हजार दर्जे अच्छा रहेगा।

हरगोपाल नही, भई, यह मुझसे न होगा। सारा दिन आकाशकी ओर देखते रहो कि कब वर्षा हो और कब खेतोमे बीज उगें। मैंने तो निश्चय कर लिया है कि एकान्तमे बैठकर गीता, वेद तथा उपनिषदोका अध्ययन करूँगा।

चोपडा [घडी देखकर व्यग्यसे] अच्छा तो, सन्यासीजी, प्रणाम। अब हमें आज्ञा दीजिए।

हरगोपाल बैठो न, जल्दी क्या है ?

चोपड़ा भई, अभी स्नान आदि करना है, फिर समाज जाऊँगा।

नन्दा आजके अखबारमे एक विज्ञापन है। मै तो उसके लिए अरजी भेजना चाहता हूँ। छोटे-छोटे बच्चे हैं, मै तो सन्यासका विचार भी नही कर सकता।

[दोनों उठकर चल देते हैं]

[illegible] कमला! कमला!

कमला [अन्दरसे ही] सामान बांध रही हूँ।

हरगोपाल थोडी देरके लिए छोड दो। जरा इधर आओ, जरूरी काम है।

[कमला आती है]

कमला — कहो, अब क्या सूझी ?

हरगोपाल — देखो, व्यंग्य करना छोड दो। मेरी सलाह है कि तुम लोग तो चलो दरियागंज और मैं जाता हूँ देहरादून। वहाँ दस-पन्द्रह दिन इधर-उधर देखभालकर जगहका प्रबन्ध करके तुम लोगोको बुला लूँगा।

कमला — तो उषाको होस्टलमे भेज दे ?

हरगोपाल — हाँ।

कमला — और जीत ?

हरगोपाल — वह भी बोर्डिङ्गहाउसमे ही रहेगा।

कमला — देख लो, मुझे तो इसमें कोई आपत्ति नही। दोनोको होस्टलमे भेजनेसे दो-ढाई सौ रुपये खर्च होगे। सौ-दो सौ अपने लिए भी चाहिए। देख लो, जैसे उचित समझो।

हरगोपाल — [चौकन्ने होकर] दो-ढाई सौ। दो-ढाई सौ तो मुश्किलसे पन्शन ही मिलेगी।

कमला — तो जैसे आप कहिए।

[हरगोपाल गहरी सोचमें पड जाते हैं]

हरगोपाल — वहाँ क्या। कुछ समझमे नही आता।

कमला — [बाहर किसीके पैरोंकी आवाज सुनकर] डाकिया मालूम देता है, देखें क्या लाया है ?

[बाहर जाती है और दो पत्र हाथमे लिये लौट आती है]

हरगोपाल — किसके है ?

कमला	दोनो आप ही के नाम है। एक तो सरकारी मालूम देता है।
	[देती है।]
हरगोपाल	[सरकारी खत खोलकर पढता है। फिर दाँत पीसता है] कैसे उल्लू इकट्ठे हुए हैं इस दफ्तरमें! काश, मै इस समय वहाँ होता, सबको सीधा करके रख देता।
कमला	क्यो, अब क्या फरमाते है ?
हरगोपाल	कहते हैं अपना सिर! पूछते है कि मैंने नौकरी किस दिन शुरू की थी ? अरे, काठके उल्लुओ, मेरी सर्विस-बुक देखो, अपना रेकॉर्ड देखो। कुछ नही तो पचास जगह लिखा होगा परन्तु कौन मेजपर-से उठकर अलमारीमे ढूँढे ? घण्टी बजायी, टाइपिस्टको बुलाया और चिट्ठी लिखवा दी। उनका क्या बिगडता है, मुझे पेन्शन मिले न मिले।
कमला	आप किसी दिन स्वय ही जाकर यह काम करवाइए।
हरगोपाल	यह भी करके देखूँगा। [दूसरा लिफाफ़ा उठाता है। बडे ध्यानसे उसे देखता है।]
कमला	किसका है ?
हरगोपाल	इस लिखाईको तो मै नही पहचानता।
	[पत्र खोलकर पढने लगता है। चेहरेपर हल्की-सी मुसकराहट आती है, जो धीरे-धीरे खुशीका रूप धारण कर लेती है। उत्तेजित होकर कुरसीपर-से उठ बैठता है।]
कमला	क्या है ?
हरगोपाल	बस, छोड दो सब पैकिङ्-वैकिङ्। तुम मेरे कपडे ठीक करो।

कमला	[उत्तेजित होकर] क्या खुशखबरी है ?
हरगोपाल	इससे बड़ी खुशखबरी और क्या हो सकती है ! यह देखो, यह नार्मल हाई स्कूल तथा कॉलेजकी मैनेजिङ् कमेटीकी ओरसे बुलावा आया है, कहते हैं "हमको एक मैनेजरकी जरूरत है। हमे पता चला है कि आप अभी-अभी रिटायर हुए है। हमारे बड़े सौभाग्यकी बात होगी यदि आप हमारे स्कूलके लिए काम करना स्वीकार कर सकें। हमें खेद है कि हम आपको उतना वेतन न दे सकेंगे जितना आपकी उच्च स्थितिके आदमीको मिलना चाहिए। फिर भी हम आशा करते है कि आप बच्चोंकी पढाईकी ओर ध्यान करते हुए इसे दानकर्म समझकर ही ढाई सौ रुपये स्वीकार कर लेंगे। यदि आपको यह स्वीकार हो तो आप दिसम्बर-की पहली " [कमलासे] सुना ! दिसम्बरकी पहली, अर्थात् कलसे काम शुरू कर दूँ।
कमला	[खुशीसे] यह तो बड़ी अच्छी बात है।
हरगोपाल	[उत्तेजित होकर] देखा ! ऐसे देता है भगवान्। लो अब करो तैयारी। रायसिंह, ओ रायसिंह, जल्दी जूतोंपर पॉलिश करो। जीत, इधर आओ।
जीत	[दूरसे] आया, पिताजी !
हरगोपाल	जल्दी आओ, अपनी साइकिल लेकर, जरूरी काम है। [कमलासे] निकालो मेरी पैण्ट, धोबीके पास ले जाये इस्तिरीके लिए। नारायण, अरे नारायण, खानेमें कितनी देर है ? [कमलासे] तुम जरा जाओ न, जल्दी तैयार करवा दो।
कमला	इतने उतावले क्यों हो रहे हो ? कल तक सब ठीक हो जायेगा।

हरगोपाल — देखो, अब बैठकर बातें बनानेका समय नहीं है। [उसकी बाँह पकड़कर उठा देता है] तुम जाओ, मेरे कपड़े निकालो, अच्छी-सी कमीज़ निकालना – वह नीली पापलेन-की। मुझे अभी जाना होगा।

[उसे दरवाजेके अन्दर धकेल देता है। चपरासी आता है]

चपरासी — साहब, ठेला लाया हूँ।

हरगोपाल — [झुड़ककर] जहन्नुममें जाओ तुम और तुम्हारा ठेला! सवेरेसे कहाँ था?

चपरासी — बात यह है कि

हरगोपाल — चुप रहो! सब जानता हूँ मैं। तुम नमकहराम हो। जाओ भाग जाओ यहाँसे। कलसे हमारा नया चपरासी आयेगा।

उषा — [शोर सुनकर आते हुए] पापा, मैं पढनेकी कोशिश कर रही हूँ। परसों मेरी परीक्षा है और आप

हरगोपाल — परीक्षा तो परसों है। मुझे तो कल जाना है।

उषा — कहाँ जाना है कल?

हरगोपाल — यह बातें पीछे होती रहेंगी। उषा, तुम जल्दीसे मेरा पेन और पैडका कागज लाओ। मुझे स्वीकृति लिखकर भेजनी है।

[उषा कोनेमें रखी मेजपर कागज कलम ढूँढती है]

हरगोपाल — जल्दी करो। इस घरमें कभी कोई चीज वक्तपर नहीं मिलती।

[उषा कागज लाती है। हरगोपाल बैठकर लिखना शुरू करता है।

[परदा]

लाइन-क्लीअर



[रेलवे स्टेशनका दृश्य। यात्रियों, कुलियों तथा अपने इष्टमित्रोंको विदा करने आनेवाले अन्य लोगोंके हाव-भावोंसे पता लग रहा है कि गाड़ी छूटने ही वाली है। दायीं ओर पुलका एक भाग और सीढ़ियाँ दिखाई दे रही हैं। एक अधेड़ पुरुष, जो एक मैला-सा नीला कोट पहने है, जिसके पीतलके बटनोंपर पॉलिश नहीं है, एक ओरसे आता है। उसके पीछे कुछ युवक हैं, जो उसके विद्यार्थी मालूम होते हैं। रंगमंचके बीचमें आकर वह रुक जाता है और सबको चुप करनेके लिए अपना हाथ ऊपर उठाता है।]

शिक्षक

रेलवे कानूनकी किताबमें जो कुछ लिखा होता है, उससे वास्तविकताका कोई सम्बन्ध नहीं होता, रेलगाड़ियोंको चलानेके लिए कुछ और ही अनुभवोंकी आवश्यकता होती है। मैं आज जान-बूझकर तुम लोगोंको यहाँ लाया हूँ, ताकि इस समय, जब कई गाड़ियाँ आती और छूटती हैं, तुम्हें कुछ मतलबकी बातें बता सकूँ। जब तुम लोग परीक्षा पास करनेके बाद टिकिट चेकर, बुकिङ्-क्लर्क और असिस्टेण्ट स्टेशन-मास्टर बनोगे, तब यह बातें तुम्हारे काम आयेंगी। अच्छा, अब आँखें खोलकर देखते जाओ कि क्या होता है।

[एक यात्री बेतहाशा भागता हुआ आता है। उसके पीछे कुली सामान उठाये हुए है। कुलीको इस बातकी कोई चिन्ता नहीं कि यात्रीको गाड़ी मिलती है या नहीं।

देरसे आनेवाले यात्रियोंकी तरह यह आदमी भी जगहकी तलाशमें एक डिब्बेमें दूसरे डिब्बेमें झाँकता हुआ चक्कर काटता है। जब उसे अपनी जगह नहीं मिलती, तो वह रिजर्वेशन क्लर्कके पास जाता है, जो एक सूचीको देख रहा था।]

यात्री — [बेदम होकर] क्या आप बता सकते हैं कि मेरी सीट किस डिब्बेमें है? मेरा नाम एम डी मिश्रा है। कानपुरके लिए दूसरे दर्जेमें मेरी सीट रिज़र्व है।

रिजर्वेशन क्लर्क — मिश्रा? अभी देखता हूँ। हाँ, आपका नाम था तो, लेकिन क्योंकि आप गाडी छूटनेके समयसे दस मिनिट पहले नहीं आये, इसलिए आपकी सीट दूसरेको दे दी गयी।

मिश्रा — लेकिन मेरी सीट तो रिज़र्व थी।

रिज़र्वेशन क्लर्क — इसीलिए तो दस मिनिट पहले तक हमने उसे खाली रखा।

मिश्रा — ओह! लेकिन मुझे जरूरी जाना है। आप मुझे कोई दूसरी सीट नहीं दे सकते?

[illegible]शन क्लर्क — यह तो बहुत मुश्किल है, सब डिब्बे भरे हुए हैं। [अपनी हथेली किसी मतलबसे खुजाते हुए] फिर भी मैं कोशिश कर सकता हूँ।

[illegible] — बडी मेहरबानी।

[मिश्रा अपनी जेबमें-से कुछ निकालता है और रेल्वेके प्रतिनिधिको चुपकेसे दे देता है। इस कारवाईका जिक्र न तो टाइमटेबलमें है, न रेलवे कानूनकी किताबमें।]

रिजर्वेशन क्लर्क — अच्छा, मेरे साथ आइए।

[दोनों नामनेवाले डिब्बेके पास जाते हैं ।]

रिजर्वेशन क्लर्क [दरवाजा खोलते हुए] आप अपना सामान अन्दर रखिए, नीचेवाली तीन नम्बरकी सीट है आपकी ।

मित्रा आपका बहुत-बहुत शुक्रिया ।

[क्लर्क चाबीसे रिजर्वेशन लेबलका खाना खोलकर एक नाम काट देता है, और उसकी जगह मित्राका नाम लिख देता है ।]

रिजर्वेशन क्लर्क अच्छा, जनाब, अब आप आरामसे बैठिए । [जाता है]

शिक्षक गाड़ी प्लेटफार्मपर आनेसे पहले ही रिजर्वेशन लेबिलपर कुछ नकली नाम लिख दिये जाते हैं, जैसे, मिस्टर और मिसेज राय, मिस्टर दत्त, मिस्टर सिंह । लेकिन कभी पूरा नाम नहीं लिखना चाहिए । नहीं तो कभी-न-कभी जरूर पकड़े जाओगे । प्रसिद्ध व्यक्तियोंके नाम भी नहीं लिखने चाहिए, जैसे, अगर कहीं ओंकारनाथ ठाकुर, या मोरारजी देसाई या मैथिलीशरण गुप्तका नाम लिख दिया, तो मुसीबतमें पड़ जाओगे । समझे ?

[स्टेशनका घण्टा घनघनाकर बजता है, इंजन सीटी देता है, एक नवयुवक गार्ड बायीं ओरसे आता है और जनाने डिब्बेके सामने खड़े होकर हरी झण्डी हिलाता है ।]

शिक्षक कुछ देखा तुम लोगोंने ?

एक विद्यार्थी देखा

शिक्षक गार्ड जनाने डिब्बेके सामने खड़ा है । युवक हमेशा यही

करते हैं, लडके तो लडके ही रहेंगे। जब ये लोग बुड्ढे हो जायेंगे, तो अपने ही या बरफवाले डिब्बेसे सीटी बजा दिया करेंगे और वहींसे झण्डी हिला देंगे।

[इंजन फिर सीटी बजाता है और गाड़ी धीरे-धीरे चलने लगती है। एक आदमी भागता हुआ आता है और गाड़ीकी दिशामें अपना हाथ तेजीसे हिलाता है।]

यात्री — क्या गाडी छूट गयी?

शिक्षक — मालूम तो यही देता है। दूसरी गाडी छह पैंतीसपर जाती है।

यात्री — दूसरी गाडीसे क्या मतलब? मैं इसी गाडीमे उतरा था। उस गधे कुलीने मेरा ट्रंक इसी गाडीमें ही छोड दिया। अब कैसे मिले?

शिक्षक — गाडी?

यात्री — नहीं, मेरा ट्रंक।

शिक्षक — यह तो मेल गाडी थी — मुझे तो आशा नहीं अब आपको अपना ट्रंक मिल सकेगा। क्या उसमे कोई कीमती चीज थी?

[illegible] — अरे, उसमे न जाने क्या-क्या था।

[illegible]क्षक — खैर, वह लास्ट प्रॉपर्टी ऑफिसमे दाखिल हो जायेगा, तब आप उसे वापस ले सकते हैं।

यात्री — मुझे इसकी आशा नहीं, क्योंकि मुझे मालूम है रेलवे विभागमें कैसी लूटखसोट मचती है।

शिक्षक — अगर ट्रंकमे कुछ ज्यादा कीमती माल नहीं है, तो उसके लिए इतनी तकलीफ उठाना बेकार है।

यात्री — उसमे कुछ रुपये भी थे — सौ रुपये।

शिक्षक — अगर एक हजार रुपयेका मामला होता तो स्टेशन सुपरिण्टेण्डेण्टने कह-सुनकर रास्तेके किसी छोटे स्टेशनपर गाडीको रोका जा सकता था।

यात्री — [चिल्लाकर] बात यह है कि मुझे अब ठीकसे याद आ गया, उसमे करीब पाँच-छह सौ रुपये और कुछ जरूरी कागजात थे।

शिक्षक — [यात्रीको ठिकानपर लाकर] आपके नुकसानका मुझे दुःख है। मै आपकी सहायता करनेको तैयार हूँ, लेकिन [धीरेसे उसके कानमे] वह स्टेशन सुपरिण्टेण्डेण्ट बडा बेईमान है।

यात्री — बीस रुपयेमे काम हो जायेगा ?

शिक्षक — [सिर हिलाते हुए] अजी, बीस रुपयेकी तरफ तो वह देखेगा भी नही।

यात्री — तीस चालीस पचास ?

शिक्षक — नही, जी। इतनेसे क्या होता है। अच्छा, मुझे क्षमा कीजिए, अब मुझे दूसरे प्लेटफार्मपर जाना है—ड्यूटी है मेरी। मै तो यही चाहता था कि आपके कुछ काम आ सकूँ—खैर। [जानेके लिए उद्यत होता है।]

यात्री — अच्छा, मै सौ रुपये दे सकता हूँ। [शिक्षक सिर हिलाता है।] अच्छा, तो डेढ सौपर बात तय रही।

शिक्षक — अगर आप दो सौ दे सके, तो मै और ज्यादाके लिए नही कहूँगा। गाडी दूर निकली जा रही है।

यात्री — यह सरासर बेईमानी है। खैर, मैं दो सौ देनेको तैयार हूँ। मुझे ट्रक कब मिलेगा ?

शिक्षक — आप रिफ्रेशमेण्ट रूममें बैठिए। मैं जल्दी ही सब बात तय करके आता हूँ।

यात्री — अच्छी बात है।

[यात्री रिफ्रेशमेण्ट रूमकी तरफ़ जाता है और उस दिनको कोसता जाता है, जिस दिन इतनी रफ़्तारसे चलनेवाले इंजनका आविष्कार हुआ था।]

शिक्षक — [अपने विद्यार्थियोंसे] देखा किस सफ़ाईसे काम किया।

सब विद्यार्थी — क्या बात है! लेकिन उस यात्रीको ट्रक वापस कैसे मिलेगा ?

शिक्षक — इस गाडीको अगले स्टेशनपर दूसरी गाडीको निकल जानेके लिए आधे घण्टे रुकना पडेगा। भगतराम, तुम ए. एस. एम. से जाकर कहो कि टेलेफोन करके अगले स्टेशनसे वह ट्रक ट्रॉलीसे वापस मँगवा ले।

तराम — वह अपना हिस्सा नहीं माँगेगा ?

तुम भी निरे बुद्धू हो। वर्षों पहले ऐसी बातोंका इन्तज़ाम हो चुका है। रेलवेमें हमेशासे ऐसा होता आया है। हाँ, तुम सबको चाय मिलेगी।

विद्यार्थी — सिर्फ़ चाय ही ?

शिक्षक — अभी तुम लोग इन तरकीबोंको सीख ही रहे हो, यह न भूलो। जब तुम खुद काम करने लगोगे, तो रेल कर्मचारियोंकी सब सुविधाएँ तुम्हें स्वयं मिल जायेंगी।

[भगतराम जाता है ।]

रामप्रताप — जिन खोये हुए सामानका कोई दावा नही करता, उसका क्या होता है ?

निरीक्षक — हम लोग उसकी अच्छी तरह जांच-पडताल करते है । अगर उनमे कोई खाने-पीनेकी चीज़ होती है, तो हम लोग उसका उचित उपयोग करते है । और अगर कोई कामकी चीज़ होती है, तो आगे कुछ करने-से पहले दो या तीन वार अच्छी तरह सोचते-समझते है । [आँख मारकर वह अपना मतलब स्पष्ट करता है] उसमे-से कुछ चीज़े तो हम लास्ट प्रॉपर्टी आफिसको भेज देते है—वह भी कभी-कभी । लेकिन एक बातका हम विशेष तौरपर ध्यान रखते है—किसी सामानका ताला नही टूटना चाहिए, जबतक कि वह ताले खराब ही न हो और ठीकसे बन्द न किये गये हो ।

भीमसेन — मेरे एक सम्बन्धी जो कुछ वर्ष पहले रेलवेकी नौकरीसे रिटायर हुए है, मुझसे कह रहे थे कि अगर टोकरीमे-से आम निकालने हो, तो वज़न पूरा करनेके लिए उनकी जगह टोकरीमे पत्थर भर देने चाहिए ।

निरीक्षक — यह पुराना तरीका अब बदल गया है । अब हम वज़न पूरा नही करते, क्योंकि लोगोंकी शिकायत है कि पत्थरोंसे दबकी बचे हुए आम भी खराब हो जाते है । जनताकी इच्छाका लिहाज तो करना ही चाहिए ।

भीमसेन — ठीक है ।

[illegible] — सील्डबन्द कनस्तरोंमें-से घी कैसे निकाला जाता है ?

निरीक्षक — सन १९३९ तक तो यह तरीका था कि सील तोड़कर घी

निकाल लिया और फिर सील लगा दी। लेकिन महायुद्धके दिनोमे काम इतना बढ गया कि कोई जल्दीका तरीका खोजना पडा। आजकल जो तरीका चालू है, वह तो यह है कि एक खुदरे चाकूको कनस्तरके जोडपर मारकर जितना घी चाहो निकाल लो।

मोमसंन कीलसे सूराख करके क्यों नही निकाला जाता ?

शिक्षक क्योंकि तब यह नही मालूम होगा कि कनस्तर गिर पडनेसे टूटा है। अच्छा, अब इस विषयको यही समाप्त कर देना चाहिए। १४ डाऊन गाडी अब आती ही होगी। अब मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि टिकिट कैसे चेक किये जाते है। किसी और दिन मै तुम्हे मालगोदाम ले जाकर दिखाऊगा कि फरनीचर गाडीपर कैसे लादा जाता है, ताकि छोटे-छोटे सफरमें भी वह टूट-फूटकर बराबर हो जाये। यह हाल उन लोगोंके फरनीचरका होता है, जो उसकी हिफाजतके लिए कुछ नही देते। मै तुम्हे रेलवेके गणितके बारेमे भी बताऊँगा। [जोरसे घण्टी बजती है।] गाडी पिछले स्टेशनसे छूट गयी है। चलो, पुलकी सीढियोंके पास चलकर खडे हो।

[सब विद्यार्थी शिक्षकके पीछे-पीछे चलते है। इस प्लैटफॉर्मपर सुनसान हो जाता है, क्योंकि गाडी दूसरे प्लेटफॉर्मपर आ रही है। पुलके नीचे एक कुली सामान ढोनेके ठेलेके ऊपर पडा सो रहा है। प्लैटफॉर्मपर उल्टा सीधा सामान पडा है। कुछ कुली दौड़ा भी रहे है और लापरवाहीसे सामानकी ओर देख लेते है, उनकी बलासे-सामान खो जाये। एक कुली सामान गिराकर

उठाकर आता है और एक कीमती थरमस बोतलको जमीनपर गिरा देता है। दर्शक उसके टूटनेकी आवाजसे चौंक जाते हैं, लेकिन कुली बड़े इतमीनानसे उसे उठाकर आगे चल देता है, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। दो बौखलाये हुए यात्री एक-दूसरेको रोककर पूछते हैं।]

पहला यात्री — बम्बई एक्सप्रेस कितनी लेट आ रही है ?

दूसरा यात्री — मुझे नही मालूम। आपको मालूम है कि भटिण्डा मेल आ गयी या नही ?

पहला यात्री — एक गाड़ी तो अभी छूटी है। कही वही तो भटिण्डा मेल नही थी ?

[दोनों परेशान होकर चले जाते हैं।]

शिक्षक — तुम्हारी रेलवे कानूनकी किताबमें लिखा है कि सफर पूरा होनेपर यात्रियोंको अपने टिकिट स्टेशनपर दे देने चाहिए। यह तुम्हारी खुशकिस्मती ही होगी अगर हर यात्री चुपचाप तुम्हें अपना-अपना टिकिट देता हुआ चला जाये। भगतराम, अगर तुम इस ड्यूटीपर हो, तो क्या करोगे ?

भगतराम — मैं इन पुलकी सीढ़ियोंपर खड़ा होकर या हममें-से दो खड़े होकर यात्रियोंसे टिकिट लेते जायेंगे।

शिक्षक — [अपना सिर हिलाते हुए] तुम तो बुद्धू हो। दूसरा टिकिट-चेकर बेकार तुम्हारे साथ फँसा रहेगा। फिर गाड़ीके दूसरी ओर उतरनेवाले बगैर टिकिटके यात्रियोंको पकड़नेके लिए भी उसकी ज़रूरत पड़ेगी। भीमसेन, तुम क्या करोगे ?

भीमसेन मैं सीढियोंके ऊपरवाले सिरेपर खडा होकर एक दरवाजा वन्द कर लूँगा और दूसरेपर खुद मजवूतीसे जम जाऊँगा ।

शिक्षक ठीक है, इसके वाद ?

भीमसेन तव मैं एक-एक करके लोगोंको वाहर निकलने दूँगा और उनके टिकिट होशियारीसे देखता रहूँगा ।

शिक्षक सव नये रगरूट यही गलती करते हैं। रेलवे और अन्य सरकारी दफ्तरोंमे जो लोग अपना काम इतने ध्यानमे करते हैं, उनके वाल जल्दी ही सफेद हो जाते है और पेन्शनके समयमे वर्षों पहले ही वह मर जाते हैं। सफलताका भेद यह है कि ज्यादातर काम तो सरसरी तौरपर आगे वढाया और कभी-कभी वह सरगरमी दिखायी कि पता लगे वाकईमे तुम वडी मेहनतसे काम करते हो।

दीनदयाल लेकिन अगर किसी गलत आदमीपर हाथ पड जाये तो ?

शिक्षक मैं वही वतानेवाला था। यह तजरवेसे ही आता है, जो तुम्हें कोई भी नही सिखा सकता। मैं भी तुम्हे वही वातें वता सकता हूँ, जिनसे तुम्हें कुछ सहायता मिलेगी। जव यात्रियोंकी भीड होती है, तो लोग कई तरहके टिकिट तुम्हें देकर चले जाते हैं। पिछले कुम्भ मेलेमें हमें तकरीवन एक हजार वजन तौलनेकी मशीनके टिकिट मिले, जिनपर लिखा होता है 'तुम्हारे मित्र अच्छे होंगे', 'तुम्हारी यात्रा अच्छी रहेगी', 'अन्त भला तो सव भला' या 'ईमानदारी सवसे अच्छी नीति है'। करीव तीन हजार तो पुराने प्लेटफार्म टिकिट थे और सैकडो टिकिट गाजियावादसे दिल्ली या ओखलासे निजामुद्दीन या पूनासे वम्वईके थे। गात गो

विज़िटिङ् कार्ड और करीब इतने ही सिगरेटके कूपन थे
[घण्टी जोरसे बजती है ।] लो अब गाडी आ ही गयी । अबतक मैंने जो कुछ कहा, उसका सबूत भी मिल जायेगा । अब तुम यहाँ खडे होकर टिकिट चेक करो, और जैसा भी टिकिट तुम्हे दिया जाये ले लो । लेकिन जैसे ही मै इशारा करूँ, उस आदमीको पकड लेना ।

[गाडी आनेकी आवाज सुनकर कुली और खोमचेवाले इधर-उधरसे आकर प्लेटफ़ॉर्मपर खडे हो जाते हैं ।]

शिक्षक — भीमसेन और दीनदयाल, तुम दोनो वहाँ खडे हो जाओ, मै तुम्हारे पीछे खडा रहूँगा ।

[गाडी आती है । पुलके ऊपर भीडकी धकापेल होने लगती है ।]

दीनदयाल — [एक यात्रीसे] आपका टिकिट कहाँ है ?

यात्री — यह लीजिए ।

भीमसेन — [दूसरे यात्रीसे] टिकिट दिखाइए, जनाब ।

यात्री — यह लीजिए, जनाब ।

शिक्षक — [दोनोंके कानमें फुसफुसाकर] अरे, इतने लम्बे-लम्बे [illegible] बोलकर क्यो दम फुला रहे हो ! सिर्फ़ 'टिकिट ?' 'टिकिट ?' कहो ।

दीनदयाल — अच्छी बात है । हम उस आदमीसे टिकिट मांगते है – वह दुबला-पतला और गरीब मालूम होता है, उसने जरूर टिकिट नहीं खरीदा होगा ।

शिक्षक — यह बात नहीं है । अगर वह बेईमान होना, तो मोटा-ताजा

और अमीर होता। गरीब लोग हमेशा टिकिट खरीद लेते और केवल मध्यवर्गीय और अमीर वर्गके लोग ही टिकिट खरीदनेकी तकलीफ नही उठाते।

भीमसेन [भीडमे एक आदमीकी ओर संकेत करते हुए] वह आदमी कुछ गडबड मालूम होता है, मुझसे निगाह बचा रहा है। उसका टिकिट जरूर देखना चाहिए।

शिक्षक [मुसकराते हुए] तुम चाहो तो देख लो, लेकिन इसके पास टिकिट है। तुमसे वह इसलिए निगाह नही मिला रहा है, क्योकि वह भेगा है [हँसी]। वह, उस आदमीको देखो, जो कुलियोपर बिगड रहा है और अपने ढेर सारे सामानकी ओर इशारा कर रहा है। मै इन धोखेबाजोको अच्छी तरह पहचानता हूँ। भीमसेन जरा उसकी मिजाज-पुरसी तो करना जाकर।

भीमसेन [उसके पास जाकर] टिकिट ?

यात्री [अकडकर] क्या ? तुम हो कौन ?

भीमसेन मै कोई भी हूँ, आप टिकिट दिखाइए।

यात्री क्या तुम टिकिट-चेकर हो यहाँ ?

भीमसेन [साहसपूर्वक] हाँ।

यात्री तुमने अपनी वरदी क्यो नही पहन रखी है ? क्या नाम है तुम्हारा ?

[कुछ गडबड देखकर शिक्षक जल्दीसे वहाँ पहुँचता है।]

शिक्षक इसके नाम और वरदीसे आपको मतलब ? जब आपसे टिकिट माँगा तो आपको दे देना चाहिए।

यात्री — यह भी खूब रहा! पर, जनाब, आप कौन हैं?

शिक्षक — मैं एक रेलवे कर्मचारी हूँ।

यात्री — आप भी अपनी पूरी वरदीमें नहीं हैं! आपका नाम क्या है?

शिक्षक — जनाब, मुझे धोखा देनेकी कोशिश मत कीजिए। टिकिट दिखाइए, नहीं तो मैं पुलिसको बुलाता हूँ।

यात्री — पुलिसको बुलाना बेकार रहेगा।

शिक्षक — [अपनी हथेली खुजाते हुए] अब आपने कायदेकी बात की है।

यात्री — मेरे पास टिकिट नहीं है। पर देखिए, इससे शायद आपका काम चल जाये [वह अपनी जेबसे पीतलका रेलवेके बड़े अफसरोंका पास निकालकर दिखाता है, जिसे देखकर शिक्षक और भीमसेन दोनों चकरा जाते हैं।] और आप, जो कुछ भी आपका नाम हो, कल सुबह साढे दस बजे मेरे दफ्तरमें हाजिर हो जाइएगा।

शिक्षक — [मरी-सी आवाजमें] बहुत अच्छा, हुजूर।

[रेलवेका वह अफसर शानके साथ वहाँसे चल देता है। शिक्षक गश खाकर वहीं ढेर हो जाता है। विद्यार्थी जल्दीसे उठाकर ठेलेपर डालकर बाहर ले जाते हैं।]

[परदा]

नीम हकीम

•

[अमरनाथके सोनेका कमरा। अच्छा बड़ा और विधिपूर्वक सुसज्जित। प्रातःकालके सूर्यका प्रकाश खिड़कीके परदोंसे छनकर आ रहा है। कोई साढ़े आठ बजे होंगे। अमरनाथ पलंगपर लेटा कुछ बेचैनीसे करवटें ले रहा है। पास रखी मेजपर रीडिंग्-लैम्प, एक दो किताबें, सिगरेटका डिब्बा तथा चायके जूठे बरतन पड़े हैं। सुनीति, उसकी धर्मपत्नी आती है]

सुनीति — आप अभीतक लेटे हुए हैं, दफ्तर नहीं जाना है क्या ?

अमरनाथ — तबीयत कुछ सुस्त है, सोचता हूँ आज आराम ही किया जाये।

सुनीति — रात-भर ताश खेलोगे तो तबीयत सुस्त होगी ही।

अमरनाथ — पिछले शनिवारका किस्सा तुम्हे अभीतक भूला नहीं, कई बार माफी भी माँग चुका हूँ।

सुनीति — मुझे आपके ब्रिज खेलनेमें तो कोई आपत्ति नहीं—यही, घण्टे-दो घण्टे ... किन्तु रात-रात-भर जगना हो तो ...

अमरनाथ — फिर वही कहानी, तुम तो समझती हो कि चालीस वर्षका [illegible] हुआ बस हो गया, नौ बजे सो जाना चाहिए, सवेरे उठकर सैर करने जाना चाहिए।

सुनीति — अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना कोई पाप है क्या ?

अमरनाथ — किन्तु कुछ आज़ादी भी तो हो—तुम तो ऐसे लेक्चर देती हो जैसे कई वर्षोंका रोगी हूँ।

सुनीति — [पलंगपर बैठकर पुचकारती हुई] सुन बोलो सुन।

[करुण स्वरमे] मेरी बलासे, आजसे कुछ न कहूगी केवल जब छोटे-छोटे बच्चोको देखती हूँ तो [ऑखोमे बडे-बडे ऑसू टपकनेकी राह देखते है ।]

अमरनाथ [प्रेमसे उसका हाथ थपककर] तुम निन्ना काहेको करती हो, मुझे स्वय इन चीजोका ध्यान रहता है । चाहू तो अब भी दफ्तर जा सकता हूँ, और शर्त लगाकर कहता हूँ कि आठ घण्टे काम कर लेनेके बाद भी कुछ न हो ।

सुनीति ईश्वर करे आप सदा आरोग्य रहे । आपकी तबीयत जरा भी सुस्त होती है तो मन घबराने लगता है । नही-नही, तुम दफ्तर नही जाओ, आराम करो, आज भी और कल भी।

अमरनाथ अरे, शाम तक ठीक हो जाऊगा । जरा दो-चार घण्टे चैन-से सोना मिल जाये ।

सुनीति तो मै आपका नाश्ता यही लाती हू ।

अमरनाथ क्या कहने, नेकी और पूछ पूछ ।

सुनीति और हजामतका पानी ?

अमरनाथ नाश्तेके बाद ।

[सुनी]ति बच्चे ढाई बजे तक स्कूलसे नही लौटते, तुम नाश्ता करके दो-तीन घण्टे चुपचाप सो लो ।

[अमरनाथ] बहुत अच्छा ।

[सुनीति जाती है, अमरनाथ सिगरेट सुलगाता है । किताब उठाकर पढने लगता है । आधा मिनिट भी न पार पाया होगा कि माँ आती है ।]

माँ क्यो बेटा बुखार है क्या ?

पञ्चानन [illegible]

अमरनाथ — नही तो, ऐसे ही जरा आराम करनेको मन चाहता है।

माँ — [माथेपर हाथ लगाती फिर गालोपर] कुछ गरम मालूम होता है।

अमरनाथ — नही तो।

माँ — और तुम सिगरेट पिये जा रहे हो, न मालूम तुम लोगोको क्या हो गया है, अपने स्वास्थ्यका तनिक भी ध्यान नही करते।

अमरनाथ — माँ आज सवेरेसे यह पहला सिगरेट है, दिन-भरमें दो-तीन पी लेनेसे तो कोई हानि नही होती।

माँ — न होती हो। परन्तु कोई लाभ भी तो नही होता। यदि धुएँको बाहर ही निकालना है तो पहले अन्दर ही काहेको ले जाओ। कुछ खाया भी है सुबहसे या सिगरेटपर ही जोर है?

अमरनाथ — अभी लाती है सुनीति।

माँ — तुम मानोगे तो नही परन्तु तुम्हारी तकलीफकी जड तो यही है। दिन-भर काम करना और खानेमे सुस्ती।

अमरनाथ — अभी दूध पीऊँगा माँ।

माँ — एक प्याले दूधसे क्या होगा? आधा तो उसमे पानी मिला होता है। अरे बेटा, तुम्हारे-जैसे काम करनेवालोको तो खुराक अच्छी खानी चाहिए। मेरा बस चले तो तुम्हे सुबह उठते ही पराठा, मक्खन और आधा सेर दही खिलाऊँ।

अमरनाथ — कलसे ऐसा ही करूँगा।

मॉ किन्तु जबतक खाओगे नही दफ्तर कैसे जाओगे ? मैने सुनीतिसे कहा है तुम्हें हलवा बनाकर देवे ।

अमरनाथ उससे तो पेट खराब होगा

[घण्टी बजती है]

मॉ ज़रा देखना तो कौन है ?

[मॉ आती है और अमरनाथके दोस्त द्वारकादासको साथ लिये आती है]

द्वारकादास साइकिलमे पंचर था मैने सोचा आज तुम्हारी मोटरकी सैर करे

मॉ तुम लोगोको चलना तो जैसे भूल ही गया हो, तभी नित्य नयी बीमारियाँ आती हैं । [अमरनाथसे] तुम्हारे पिताजी तो गरमी-सर्दीमे दफ्तर पैदल ही जाते थे । आज-कल भी प्रात उठकर पहला काम उनका घूमने जाना है । भगवान् न करे, सुना कभी उनको बीमार, इस उम्रमे भी ।

अमरनाथ मै भी सोमवारसे रोज़ सवेरे घूमने जाऊगा । मॉ, सुनीति-को कहो न हमारे दोनोके लिए नाश्ता लाये ।

[मॉ जाती है]

[illegible] धन्यवाद ! मै तो अभी-अभी नाश्ता करके निकला हूँ । कबसे तकलीफ है ?

[illegible] कुछ नही, शरीरमे थकावट सी मालूम देती है, दो चार दिन आराम करनेसे ठीक हो जाऊँगा ।

द्वारकादास चाहे तुमको विश्वास नही फिर भी मेरी राय [illegible]

दिखा लेना ही अच्छा है, क्या मालूम किस नामुराद बीमारीके लक्षण हों ।

अमरनाथ — मैं इतनी जल्द घबरानेवाला नहीं। मेरी सेहत अच्छी-भली है और किसी ऐसी-वैसी बीमारीका कोई डर नहीं।

द्वारकादास — यह तो तुम्हारा विचार है। सम्भव है एक्सरेसे किसी और गड़बड़का पता चले।

अमरनाथ — खैर, आज तो आराम करने दो, कल देखा जायेगा।

द्वारकादास — नहीं भइया, क्या मालूम, कल तक बातका बतंगड़ ही न बन जाये। कहाँ है तुम्हारा टेलेफोन, डॉक्टरको पूछूँ ?

अमरनाथ — नहीं-नहीं, डॉक्टर-वाक्टरको मत बुलाओ।

द्वारकादास — वाह! खूब कही, तुम क्या समझते हो, तुम बीमार पड़े हो और मैं डॉक्टरको दिखाये बिना चला जाऊँ, यह अच्छी मित्रता है! कहाँ है टेलेफोन? डॉक्टर लालको कहता हूँ कि अभी आयें।

अमरनाथ — अच्छा भई, तुम्हारी इच्छा, किन्तु उसे बुलाकर क्या करोगे? टेलेफोनपर ही बात कर लो न!

द्वारकादास — जबतक वह देखेगा नहीं बतायेगा कैसे?

[द्वारकादास जाता है। अमरनाथ लम्बी श्वास लेता है, छाती ठोंकता है, नब्ज देखता है, जबान निकालकर देखनेका यत्न करता है, कुछ चिढ़-सा जाता है, सुनीति नाश्ता लिये आती है]

सुनीति — [ट्रे को मेजपर रखते हुए] कैसी है तबीयत?

अमरनाथ — अभीतक तो एक मिनिट-भर चैन नहीं मिला।

सुनीति — यह खा लो, फिर चुपके पड़ जाओ।

अमरनाथ — यही करूँगा।

[फिर घण्टी बजती है]

[सुनीति जाती है और अपने मामा तथा मामीको साथ लिये आती है]

मामा — [घबराये हुए] क्यों अमरनाथ, क्या तकलीफ है ?

अमरनाथ — [नमस्कार करते हुए] नहीं, कुछ नहीं, जरा सी [illegible] है। आप बैठिए न, मामीजी ?

मामी — [अमरनाथके माथेपर हाथ रखकर] पसीना आ रहा है और कुछ ठण्डा मालूम देता है। कम्बल ओढ़ [illegible] !

अमरनाथ — अभी लेता हूँ। [मामासे] आप तो अगले हफ्ते आनेवाले थे न ?

मामा — क्या तुम्हें मेरा पत्र नहीं मिला ? [अमरनाथ सिर हिलाता है] मैं भी कहूँ कि कुछ [illegible] ही कारण होगा, जो तुम स्टेशनपर नहीं पहुँचे, परन्तु मैंने डाकखानेमें [illegible] डाला था। लखनऊ बहुत तपने लगा था, हमने [illegible] हफ्ता तुम्हीं लोगोंके पास और रह लें।

अमरनाथ — यह तो आपकी कृपा है।

मामा — [नाड़ीको टेको मसककर] [illegible] तुम [illegible] सब कुछ खाओगे ?

अमरनाथ — एक प्याला दूध [illegible] है ? और फिर [illegible]

मामा — मैंने अभी [illegible] स्वास्थ्य-[illegible] डॉक्टर [illegible]

क्योंकि उनसे पेटमें हवा पैदा होती है और अँतडियोंमें गाँठ बँध जानेका भय रहता है

अमरनाथ — सच ? मेरा तो विचार है कि सब डॉक्टर दूधके बारेमें एकमत है कि इसके बराबर और कोई चीज़ नही, चाहे बीमारीमें हो चाहे सेहतमें।

मामा — वह पुरानी बातें है। यह पत्रिका मैने आते-आते लखनऊ स्टेशनपर ही खरीदी थी। अमरीकी पत्रिका है। झूठ नही कह सकते, दिखाऊँ तुम्हे [मामीसे] ज़रा मेरे बैगमें-से निकालना

अमरनाथ — अच्छा तो एक-आध सन्तरा खा लेता हूँ।

मामा — सन्तरा, नही कदापि नही, बहुत ठण्डा होता है। तुम्हे उबली हुई तरकारीके सिवाय और कुछ नही खाना चाहिए।

मामा — यदि मुझसे पूछो तो

अमरनाथ — [चिढकर] जी नही।

मामा — [अनसुनी करके] मेरी रायमें तो सब खाना बन्द कर देना चाहिए।

अमरनाथ — बिलकुल बन्द ?

मामा — हाँ बिलकुल, खानेसे बोझ होता है और शुद्ध रक्तके प्रवाहमें रुकावट होती है, खाली पेट सबसे अच्छा।

[तारकादास अन्दर आता है। अमरनाथ उसका अपने मामा व मामीसे परिचय कराता है। नमस्कार होते है]

त

है, और मैने

दफ्तरसे छुट्टी ले ली है। तुम्हें अकेला छोड़ जानेको दिल नही मानता।

अमरनाथ — मेरे पास काफी लोग है, तुम काहेको अपना दिन बरबाद करोगे।

द्वारकादास — दफ्तरमें ऐसा कौन-सा जरूरी काम है जो कल तक नही रुक सकता। हम काम करते है अपनी खुशीके लिए न कि जान मारनेको।

अमरनाथ — [हताश होकर] जैसी तुम्हारी इच्छा, कोई जरूरी तो न था।

द्वारकादास — यदि तुम्हारी तबीयत अच्छी हुई तो दोपहरको ही चला जाऊँगा।

मामा — सुनीति, यह नाश्तेकी ट्रे उठवा दो, आज इन्हें कुछ न खाना चाहिए।

अमरनाथ — एकाध टोस्टमे क्या होता है ?

मामा — न, न, कदापि नही

सुनीति — मामाजी, यदि इनकी तबीयत चाहती है तो थोड़ा-सा खा लेनेमें क्या हर्ज है ?

मामा — मुझे तुम लोगोंके यह नये तरीके पसन्द नहीं कि जो जी चाहे खाने दो। इसका तो जी चाहेगा आइसक्रीम खाऊँ, कबाब खाऊँ, तो क्या मैं खाने दूंगा, नहीं, जब तक मैं इस घरमें हूँ, यह नहीं होने दूंगा, और जब तक अमरनाथ स्वस्थ नहीं हो जाता, मैं यहाँसे जानेका नहीं।

अमरनाथ — आप सफरके बाद थके हुए होंगे, जरा आराम कर लीजिए।

सुनीति हां, आइए, आपका सामान कोनेवाले कमरेमे रखवा दिया है।

मामा तुम मेरी चिन्ता न करो, अमरनाथकी सेहत मुझे अपने आरामसे बहुत बढकर है। [जेबमें-से एक बोतल निकालता है] देखो जी, तुम यह तीन गोलियां तो अभी खा लो। सुनीति थोडा गरम पानी लाओ तो मै शर्त लगाकर कहता हूं कि आधे घण्टेके अन्दर-अन्दर अच्छे हो जाओगे।

अमरनाथ कैसी गोलियां है ये ?

मामा यह पीछे बताऊंगा, पारेको एक विशेष प्रकारसे तैयार किया गया है। सुनीति, लाना गरम पानी '

अमरनाथ गरम पानीकी जगह चाय जो पी लूं तो ?

मामा [कठोरतासे] नही, सुनीति लाओ ?

[सुनीतिको विवश होकर जाना पड़ता है]

मामा यह गोलियां सदा सफल ही हुई है।

मामा किन्तु देवराज बिचारेके तो सारे शरीरपर दाने-दाने निकल आये थे न।

अमरनाथ [घबराकर] है, क्या कहा ?

मामा नहीं, कुछ नही, इससे तो बल्कि यह विश्वास हो जाता है कि दवाई असर कर गयी।

[सुनीति पानीका गिलास लिये आती है।]

अमरनाथ मामाजी, गोलियोंके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, परन्तु अभी डाक्टर जो आ रहा है '

मामा — मुझे इन एलोपैथिक डॉक्टरोंपर तनिक भी विश्वास नहीं इनकी अंगरेजी दवाइयाँ हम हिन्दुस्तानियोंको माफिक नहीं आती ।

अमरनाथ — मैं भी उतना ही देशभक्त हूँ, जितने आप, शायद कुछ अधिक । परन्तु मेरा यह विश्वास है कि मानव शरीर, चाहे अफ्रीकाके हब्शीका हो चाहे रूसीका, चाहे चीनी व जापानीका, चाहे अँगरेज तथा हिन्दुस्तानीका, उन्हीं पाँच तत्त्वोंका बना है और बीमारीके कीड़े उत्तर दक्षिण तथा पूर्व पश्चिम नहीं देखते ।

मामा — यह तो तुम्हारा विचार है न, यदि तुमने इन साम्राज्यवादी देशोंका इतिहास ध्यानसे पढ़ा है तो तुम्हें मालूम होना चाहिए कि ये एलोपैथिक दवाइयाँ बाहर भेजनेका अभिप्राय यही था कि पिछड़े हुए देशोंका धन अपने पास खींचा जाये । अब जब कि हिन्दुस्तान आजाद है

अमरनाथ — [व्यंग्य-मुसकराहटसे] जय हिन्द ! जय भारत !

मामा — हाँ, तुम नौजवानोंमें ऐसा ही उत्साह होना चाहिए । लो अब खा लो यह गोलियाँ ।

[अमरनाथ हथेलीपर गोलियाँ रखता है और आस पास खड़े मित्र-सम्बन्धियोंको सम्बोधित कर, बेधड़क तमाम गोलियाँ निगल लेता है, मानो कोई वीर राजपूत प्राणोंकी बाजी लगाकर रणमें कूद पड़े]

अमरनाथ — आह !

मामा — कुछ फर्क मालूम हुआ ?

अमरनाथ — अभीतक तो नहीं ।

मामा — अभी देखो दो-चार मिनिटमें फर्क मालूम होने लगेगा। यह हमारे प्राचीन आयुर्वेदकी सबसे उत्तम दवा है। पारेको संखियेमें मिलाकर गोबरमें जलाया जाता है। [अमरनाथ काँप उठता है] बहुत लाभदायक है। ठीक प्रकारसे बनायी गयी हो तो हर तरहके रोगको नष्ट कर देती है। इसे बनाते समय केवल एक चीजका विशेष ध्यान रखना चाहिए — संखिया चालीस दिन तक बकरीके दूधमें भीगा रहना चाहिए नहीं तो रोगीको जानका खतरा रहता है।

अमरनाथ — हाय ! कैसी अद्भुत चीज है। यह गोलियाँ तो ठीक प्रकारसे बनी हैं न ?

[सुनालिका चेहरा पीला पड़ जाता है]

मामा — निस्सन्देह। तुम्हारे लिए तो मैंने नयी बोतल खोली है

अमरनाथ — [माथेका पसीना पोंछकर] यदि जीता रहा तो सारी उम्र आपका आभारी रहूँगा।

[illegible] — [कुछ भयभीत] डॉक्टर साहब नहीं आये अबतक किसलिए ?

मामा — [हँसकर बात टालकर, अमरनाथसे] नहीं, मुझे धन्यवाद देनेकी आवश्यकता नहीं, मेरा कुछ स्वभाव ही ऐसा है, मैं किसीको रोगसे पीड़ित नहीं देख सकता। जी चाहता है उसका वहीं अन्त कर दूँ।

मामा — मुझे इन एलोपैथिक डॉक्टरोंपर तनिक भी विश्वास नहीं। इनकी अंगरेज़ी दवाइयाँ हम हिन्दुस्तानियोंको माफ़िक नहीं आतीं।

अमरनाथ — मैं भी उतना ही देशभक्त हूँ, जितने आप, शायद कुछ अधिक। परन्तु मेरा यह विश्वास है कि मानव शरीर, चाहे अफ़्रीकाके हब्शीका हो चाहे रूसीका, चाहे चीनी व जापानीका, चाहे अंगरेज़ तथा हिन्दुस्तानीका, उन्हीं पाँच तत्त्वोंका बना है और बीमारीके कीड़े उत्तर दक्षिण तथा पूर्व पश्चिम नहीं देखते।

मामा — यह तो तुम्हारा विचार है न, यदि तुमने इन साम्राज्यवादी देशोंका इतिहास ध्यानसे पढ़ा है तो तुम्हें मालूम होना चाहिए कि ये एलोपैथिक दवाइयाँ बाहर भेजनेका अभिप्राय यही था कि पिछड़े हुए देशोंका धन अपने पास इकट्ठा किया जाये। अब जब कि हिन्दुस्तान आज़ाद है

अमरनाथ : [व्यंग्य-मुसकराहटसे] जय हिन्द! जय भारत!

मामा — हाँ, तुम नौजवानोंमें ऐसा ही उन्माद होना चाहिए। लो अब खा लो यह गोलियाँ।

[अमरनाथ हथेलीपर गोलियाँ रखता है और आस पास खड़े मित्र-सम्बन्धियोंको सम्बोधित कर, बेधड़क तरीक़ेसे गोलियाँ निगल लेता है, मानो कोई वीर राजपूत प्राणोंकी बाज़ी लगाकर रणमें कूद पड़े]

अमरनाथ — आह!

मामा — कुछ फ़र्क़ मालूम हुआ?

अमरनाथ — अभीतक तो नहीं।

मामा — अभी देखो दो-चार मिनिटमे फर्क मालूम होने लगेगा। यह हमारे प्राचीन आयुर्वेदकी सबसे उत्तम दवा है। पारेको सखियेमे मिलाकर गोबरमे जलाया जाता है। [अमरनाथ काँप उठता है] बहुत लाभदायक है। ठीक प्रकारसे बनायी गयी हो तो हर तरहके रोगको नष्ट कर देती है। इसे बनाते समय केवल एक चीजका विशेष ध्यान रखना चाहिए – सखिया चालीस दिन तक बकरीके दूधमें भीगा रहना चाहिए नही तो रोगीको जानका खतरा रहता है।

अमरनाथ — सच ! कैसी अद्भुत चीज है। यह गोलियाँ तो ठीक प्रकार से बनी है न ?

[सुनीतिका चेहरा पीला पड़ जाता है]

मामा — निस्सन्देह। तुम्हारे लिए तो मैंने नयी बोतल खोली है

अमरनाथ — [माथेका पसीना पोंछकर] यदि जीता रहा तो सारी उम्र आपका आभारी रहूँगा।

[illegible] — [कुछ सयमित] डॉक्टर साहब नही आये अबतक फिरसे देखूँ ?

मामा — [उसकी बात काटकर, अमरनाथसे] नहीं, मुझे धन्यवाद देनेकी आवश्यकता नही, मेरा कुछ स्वभाव ही ऐसा है, मै किसीको रोगसे पीडित नही देख सकता। जी चाहता है उसको वहीं अच्छा कर दूँ।

अमरनाथ — किसका, रोगीको ?

मामा — नही, रोगको ?

अमरनाथ — [दवा लेकर] धन्यवाद, क्या मै अब कुछ खा

सकता हूँ ? खाली पेट मखिरा खाना कभी लाभदायक नही हो सकता

मामा — इन गोलियोंके बाद तीन दिन तक कुछ नही खाना। फिर हर मगलवारको आधा सेर दूधमे आधा पाव घी मिलाकर पी जाओ यह तीन महीने तक करो।

अमरनाथ — हे भगवान्! डॉक्टर आ जाये तो शायद कुछ आराम मिले।

[घण्टी बजती है]

द्वारकादास — डॉक्टर लाल होगा अभी लाता हूँ उसे।

[जाता है और डॉक्टरको बडे गर्वके साथ लाता है]

डॉक्टर — [सीधा रोगीके पलगके पास जाकर] कैसी तबीयत है ?

अमरनाथ — कोई ऐसी बुरी तो नही।

डॉक्टर — जरा जबान निकालिए [अमरनाथ निकालता है] हूँ! [सुनीतिसे] एक चम्मच मँगवा दीजिए, गला देखना चाहता हूँ।

[देखता है]

अमरनाथ — आ-आ-आ-आ।

डॉक्टर — गला काफी खराब है, मैने पहले ही यही सोचा था, आज-कल कुछ हवामे ही है।

[स्टेथस्कोप लगाकर अमरनाथकी छाती देखता है, पेट दबाता है]

सुनीति — [मरायी हुई आवाजमें] गला ही है डॉक्टर साहब या कुछ ज्यादा।

पचपनका फेर

डॉक्टर — नही घबरानेकी कोई बात नही, मामूली तकलीफ है। एक इन्जेक्शन देता हूँ, शाम तक अच्छे हो जायेंगे।

[जेबमें-से सिरिंज निकालता है]

द्वारकादास — देखा अमर, मैं ठीक कहता था न दिखा लेना अच्छा होता है [डॉक्टरको सम्बोधित कर] आपकी सहायता करूँ ?

डॉक्टर — हाँ, धन्यवाद और मेरी रायमे आप लोग इनके पास बैठ कर बातें न करिए। इन्हें आरामकी जरूरत है।

मामा — हम लोग तो घर ही के है। आप समझ सकते है डॉक्टर साहब, हमारे दिलपर क्या बीत रही है इस वक्त। हम इसे इस हालतमें अकेला कैसे छोड सकते है ?

डॉक्टर — परन्तु आपके यहाँ बैठे रहनेसे रोगीको कोई लाभ तो नही होता।

मामा — कैसे नही ? हम इधर-उधरकी बाते करके उसका मन बहलायेगे।

मामी — [मामासे] जैसे डॉक्टर साहब कहते है वैसे ही कीजिए न। इनको मालूम है इन्हे कैसी तकलीफ है और उसके लिए कैसा इलाज होना चाहिए ?

[अमरनाथकी माँ अन्दर आती है। इतने लोगोंको इकट्ठा हुए देख कुछ घबराकर, चुप खडी रहती है।]

मामा — [illegible] नही जानते है यह लोग, चाहे दाँतका दर्द हो चाहे [illegible] चाहे पेटमें मोच यह तो पेन्सिलीन ही ठूँसेंगे।

[illegible] — [illegible] साहबके काममें बाधा न डालिए, इनका समय बहुत

कीमती हैं, इनकी यह भी बडी कृपा है कि इतनी जल्दी आ गये ।

[मामाको यह वाक्य चुभते हैं मानो अमरनाथने उनका अनादर किया है, परन्तु जबतक डॉक्टर इन्जेक्शन लगाता है, जबान बन्द हो रखते हैं]

डॉक्टर [सुनीतिसे] मुझे शामको खबर भेजिएगा ।

सुनीति जी अच्छा, और खानेके लिए ?

डॉक्टर जो चीज खाना चाहे, दीजिए ।

मामा [विस्मयसे] सच ?

डॉक्टर हाँ, जो चाहें खाये, केवल खटाई और मिर्चका ध्यान रखिएगा ।

[घण्टी होती है]

अमरनाथ [व्यंग्यसे] सुनीति, देखो तो अब कौन है ? मैंने किसी पब्लिक मीटिङ्का एलान तो नही किया था ।

[सुनीति जाती है]

. ी [मौका मिलते ही] गलेके लिए तो हमारा देशी इलाज सबसे अच्छा है · हल्दी और प्याजकी पुल्टिस बाँधो, देखा कितनी जल्दी अच्छा होता है ।

मामा हाँ, बात तो ठीक है और फिर कितना सस्ता—न हींग लगे न फिटकरी क्या विचार है डॉक्टर आपका ।

डॉक्टर क्या कहूँ साहब, आप तो मजबूर करते हैं । प्याज भी ता दस आने सेरके हिसाब बिकते है ।

[मामाका तीव्र जवाब सुननेसे पहले ही दरवाजा खुलता है और सुनीति और बलदेवप्रसाद, अमरनाथके दूसरे दोस्त, अन्दर आते हैं]

बलदेव — हमें क्या मालूम तुम इतने बीमार हो। खबर तो की होती। यह तो द्वारकादासने छुट्टीके लिए टेलेफोन किया तो हमें चिन्ता हुई।

अमरनाथ — [चिढ़कर] बीमार तो नहीं हूँ, परन्तु हैरान हूँ कि अब-तक जिन्दा बैठे हैं और होश भी ठिकाने ही मालूम देते हैं। अरे कोई कुरसियाँ, कोई बेंच वगैरह लाओ, कोई दरियाँ बिछाओ, जनताके बैठनेके लिए जगह तो बनाओ।

बलदेव — [कटाक्ष न समझकर] गला खराब मालूम होता है तुम्हारा आवाज भारी है।

अमरनाथ — सुबह तो अच्छा भला था, तबसे बोलना बहुत पड़ रहा है।

बलदेव — कोई दवाई खायी क्या?

अमरनाथ — हाँ, थोड़ा-सा संखिया, कुछ पारा, कुछ गोबर, कुछ पेनिसलीन कुछ बकरीके दूधका सत प्याजकी बुकनी खायी थी।

बलदेव — न न, प्याज मत खाना, होम्योपैथिक दवाईमें लहसुन और प्याज़की मनाही है।

अमरनाथ — तो क्या तुम भी अपनी दवाई खिलाओगे लाओ भइया, इसमें भी क्या इनकार करूँ?

बलदेव — [पोथा निकालकर] यह गोलियाँ, तीन-तीन घण्टे बाद।

अमरनाथ — [illegible] एकदम खाकर दिन-भरके लिए छुट्टी न कर दूँ।

बलदेव — हम होम्योपैथीमें छोटी-छोटी खुराक देते हैं।

मामा — एलोपैथिक डॉक्टरोंसे तो बहुत अक्लमन्द हो।

डॉक्टर — [तनकर] क्या कहा आपने ?

बलदेव — मैं डॉक्टर तो नहीं हूँ, परन्तु मैंने होम्योपैथीकी बहुत-सी किताबें पढ रखी हैं, कितना आकर्षण है होम्योपैथीमें। [डॉक्टरसे] यूनानी, आयुर्वेदिक तथा आप लोगोंकी दवाइयाँ बहुत-सी चीजोंको मिलाकर उनका सत निकालनेसे बनती हैं। हम लोग सोचते हैं कि उसे जैसे-जैसे पानीमें घोलते जाओ, उसकी ताकत बढती जाती है। एक कण, एक सेरसे ज्यादा असर करता है।

अमरनाथ — [व्यंग्यसे] और अणु, कणसे भी अधिक, हीरोशिमाकी तबाहीका कारण अणु-बम ही तो था।

डॉक्टर — [कटाक्षसे] तो अगली लड़ाई होम्योपैथिक लड़ाई ही होगी [खिलखिलाकर हँसता है] हा हा हा

अमरनाथ — [प्रभावित रूपसे] आप लोग मेरी बीमारीमें इतनी दिलचस्पी ले रहे हैं, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, परन्तु मैं सुबहसे बोल-बोलकर बहुत थक गया हूँ और आराम करना चाहता हूँ। आशा है आपको इसमें कोई आपत्ति न होगी।

बलदेव — [अमरनाथकी बातका कोई ध्यान न करके] तुम डॉक्टर लोग जो चाहे कहो परन्तु जो सत्य है उसको कौन छिपा सकता है। अच्छा बताओ तुम्हारे मरीजोंमें-से कितने फ़ीसदी मौतके मुँहमें जाते हैं ?

डॉक्टर — [कुछ विस्मित] वाह यह भी क्या सवाल है ? कुछ

पचपनका फेर

ददकिस्मत लोग जो हमे समयपर नही बुलाते मृत्यु-लोकको जाते ही है, परन्तु इतने तो नही होते कि डायरी रखूं ?

अमरनाथ [उत्तेजित हो] ज़रा, मेरी भी तो सुनो ।

[illegible] [कुछ परवाह न कर] डॉक्टर, आप डायरी रखे चाहे न रखे, समारको कोई फर्क नही पडता। ब्राजीलके प्रोफेसर [illegible]नसनने इस विषयपर जो आंकडे इकट्ठे किये है वह सबको मालूम है। उनका कहना है कि जितने लोग मरते है, उनमें-से ४० प्रतिशत एलोपैथिक डॉक्टरोंके हाथो, २० प्रतिशत आयुर्वेदके हाथो, २० प्रतिशत यूनानियोंके, १० प्रतिशत होम्योपैथोंके और १० प्रतिशत अपनी मौत मरते है।

अमरनाथ [[illegible]] इस हिसाबसे तो मेरी मौत ९० प्रतिशत निश्चित हो गयी है। सवेरे जो दवाइयाँ खायी है उनसे ७० प्रतिशत तो अबतक मर चुका हूँ, बाकी मौत भी धीरे-धीरे आती मालूम दे रही है। सुनीति, मेरी इन्श्योरेन्सके सब कागज मेरी मेजके सबसे नीचेवाले खानेमें बन्द पडे है, मेरे बच्चोंका ध्यान रखना मा[illegible] ।

सो[illegible] [उसके पास जाकर] क्या कह रहे हो अमर, होश [illegible] [illegible] । डाक्टर साहब, मेरे बच्चेको [illegible] ।

[illegible] [[illegible]] चलिए आप लोग सब बैठकमें चलिए, [illegible] करने दीजिए।

[illegible] [illegible] हो [illegible] आपको [illegible] मालूम है कि [illegible] हिन्दोस्तान [illegible] [illegible] करने [illegible]

आती है तो मुझे ही बुलाते है इससे क्या साबित होता है ?

अमरनाथ — इससे यह साबित होता है कि अब मुझे उठकर कुछ करना चाहिए। [घण्टी बजती ह]

अब यह कौन है ? भगवान्के लिए उनसे कहो कि इस शोकी सीटें सब बुक हो चुकी है, अब शामको साढे छह बजेके शोमें आवें।

[घण्टी फिर बजती है। जोरसे दरवाजेको पीटनेका शोर होता है। दरवाजा धमाकेके साथ खुलता है और बच्चे चिल्लाते हुए आते है]

सुनीति — [घड़ी देखकर] आज यह लोग साढे ग्यारह बजे ही आ गये!

[एक लड़का और एक छोटी लड़की दौड़ते हुए अन्दर घुस आते है]

लड़का — छुट्टी ! छुट्टी !! छुट्टी हो गयी [ताली बजता है] हुर्रे ! हुर्रे !!

अमरनाथ — [सिरपर हाथ रखकर] हे भगवान् !

सुनीति — [विकल होकर] उनको भी स्कूल आज ही क्या बन्द करना था

लड़का — पापा, मेरे साथ क्रिकेट खेलोगे न ?

लड़की — [बापसे लिपटकर] नहीं हम चिडियाघर जायेगे। है न पापा ?

[इस समय कमरेमे ग्प्र शोर है। प्रत्येक मनुष्य अपनी-

अपनी डॉक्टरी बघार रहा है। मामी अपनी पुलटिसपर ज़ोर दे रही है। मामा अपनी गोलियोंपर। अमरनाथ उठकर अलमारीके पास जाता है और कपड़े निकालता है]

सर्वांगि — आप क्या कर रहे हैं ?

अमरनाथ — मुझे चैन और आरामकी बहुत ज़रूरत है और अभी। इसलिए मैं आफिस जा रहा हूँ, आफिस, समझी! कुछ चैन मिल सकता है तो वहीं।

[परदा]

हीरोइन

[महान फिल्म कम्पनीके डायरेक्टर रूपेन्द्रस्वरूपका कमरा। कमरे-में वे सब सामग्री उपस्थित हैं जो इतने बड़े कलाकारकी सुविधाके लिए आवश्यक है। एक बड़ी मेज, दो तीन टेलेफोन, कुछ सचित्र फिल्मी पत्रिकाएँ, कुछ नायक-नायिकाओंके फ़ोटो, एक दो सुन्दर सी ऐश-ट्रे इत्यादि। सामने बैठे सेक्रेटरीको कुछ लिखा रहे हैं। टेलेफोन बजता है। सेक्रेटरी टेलीफ़ोन उठाकर कान से लगाता है, फिर उसे रूपेन्द्रस्वरूपकी ओर बढ़ाता है।]

रूपेन्द्र — कौन है?

सेक्रेटरी — किसी लड़कीकी आवाज है।

रूपेन्द्र — [टेलीफ़ोन] हलो — जी, हाँ, मैं ही बोल रहा हूँ, आप-का [illegible] नाम क्या है? जानकी। जानकी कौन? [illegible] मिली थी — हाँ, हाँ ठीक है। तो आप [illegible] वह तो हमारे स्टूडियोसे पाँच मिनिट-का रास्ता [illegible] आ जाइए — हाँ, सीधे यहीं आइए। [illegible] [दूसरा टेलेफोन, जो स्टूडियोके अन्दर [illegible] काम करनेवालोंके लिए है, उठाता है और नम्बर [illegible]]

[illegible] कहना ज़रा मेरे पास आये।

[illegible] तुम यह लेटर टाइप [illegible]

[illegible] है। इकबाल आता है]

रूपेन्द्र   आइए, मुकुलेश साहब! आज एक नयी मुसीबत आनेवाली है।

मुकुलेश   क्यो, क्या हुआ?

रूपेन्द्र   वही गडबड जो एकआध बार पहले भी कर चुका हूँ। क्या बताऊँ, कुछ समझमे नही आता। मालूम नही नशेमे था या क्या बात थी

मुकुलेश   आखिर हुआ क्या है?

रूपेन्द्र   भई, अभी-अभी किसी जानकीका टेलेफोन आया था। मुरादनगरसे आयी है। कहती है कि पिछले महीने जब मै कुछ नये चेहरोकी खोजमें वहाँ गया था तो उससे भी भेट हुई थी और मैने कहा था कि बम्बई आओ तो तुम्हे अपनी किसी पिक्चरमे पार्ट दूँगा। मुझे तो इस समय कुछ भी याद नही आ रहा है।

मुकुलेश   अब चिन्ता करनेसे क्या लाभ? आने दीजिए। जब मुसीबत मोल ले ही ली तो उससे निबट भी लेंगे।

[जानकी आती है – युवा, सुन्दर, सुडौल, आकर्षक]

[कुरसीसे उछलकर] ओ हो, आप है! बहुत प्रसन्नता हुई आपसे मिलकर। कब आयी आप?

नकी   मै कल दोपहरको आयी थी। सोचा, सबसे पहले आप ही से मिल लूँ।

रूपेन्द्र   यह तो आपकी बडी कृपा है। कहिए, आपके पति महाशयने तो आज्ञा दे दी? आप कहती थी न उन्हें सिनेमासे बड़ा चिढ है।

जानकी नही जी, वह इतनी आसानीसे माननेवाले नही है।

रूपेन्द्र तो आपके साथ आये है क्या ?

जानकी नही मै उनसे लड़कर आयी हूँ।

रूपेन्द्र [मुसकराकर] यह तो बहुत अच्छा किया आपने। अब आप बिना किसी बन्धन व सकोचके अपना फिल्मी जीवन आरम्भ कर सकती है, वैसे भी आप सिनेमामे काम करती तो पतिको तो कभी-न-कभी त्याग ही देती। आपने पहलेसे ही फैसला कर लिया, अच्छा किया, बहुत अच्छा किया। हाँ, आप इनसे मिलिए। यह है मुकुलेशचन्द्र, हमारे असिस्टेण्ट डायरेक्टर। [मुकुलेश और जानकी परस्पर हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं।] तो, मुकुल साहब, आप अपना काम कीजिए। शूटिङ् करवा रहे थे शायद ?

मुकुलेश जी, हाँ।

रूपेन्द्र तो आप चलिए, मै इन्हे भी अभी लाता हूँ, स्टूडियो दिखानेके लिए।

[मुकुलेश उठकर जाता है। जानकी कमरेके चारो ओर दृष्टि दौड़ाती है।]

रूपेन्द्र बम्बई पसन्द है आपको ?

जानकी एक ही तो बढ़िया शहर है हिन्दुस्तानमे। पसन्द कैसे न हो ?

रूपेन्द्र आपने यहाँके स्टूडियो देखे है ?

जानकी यहाँ तो देखने आयी हूँ।

रूपेन्द्र — आप तो फिल्म-जगत्की सबसे बडी रत्न बनेगी। आपका भविष्य उज्ज्वल है। आपको सभी नायिकाओसे ऊँचा न बना दिया तो बात रही!

जानकी — आपके प्रोत्साहन ने ही तो मुझे सिनेमामें आनेको उत्साहित किया है।

रूपेन्द्र — इसमे कोई शक नही। [रीझकर] आपका रूप-लावण्य जनताको ऐसा मोह लेगा कि क्या कहूँ! [जानकी शरमाकर आँखे नीची कर लेती है।] कैसी सुन्दर लग रही है आप इस समय! और यह हलका फीरोज़ी रग कैसा खिल रहा है आपपर! बस, थोडा-सा परिश्रम करना पडेगा आपको, फिर देखिए आपका यश कहाँ-कहाँतक फैलता है।

जानकी — यह तो आपकी कृपा है।

रूपेन्द्र — बस, आपका सहयोग चाहिए, सब काम ठीक हो जायेगा। आप ठहरी कहाँ है?

जानकी — यही पास ही एक होटलमे।

रूपेन्द्र — आपको वहाँ कष्ट तो नही? मेरे पास अच्छा बडा घर है। मै आपको एक दो कमरे दे सकता हूँ – बिल्कुल अलग।

जानकी — धन्यवाद, अभी तो मुझे कोई कष्ट नही। आवश्यकता होनेपर आपसे कह दूँगी।

रूपेन्द्र — हाँ, हाँ, जब भी आपको किसी प्रकारकी कोई कठिनाई हो आप निस्सकोच मेरे पास आइए। मै सब ठीक करवा दूँगा। अभी जरा मुझे एक मीटिङ्गमे जाना है। मै यही आधे घण्टे तक लौटूँगा। तबतक मै अपने पर्सनल सेक्रेटरी

डायरेक्टरको आपके पास भेजता हूँ। आप उससे भी मिल लीजिए।

[जाता है। कुछ देरमें एक व्यक्ति सिगरेटका धुआँ उड़ाता हुआ अन्दर प्रवेश करता है। यही है पब्लिसिटी डायरेक्टर – एक भड़कीला नौजवान जिसके रोम-रोममें स्फूर्तिका आभास है।]

पब्लिसिटी डायरेक्टर — तो आप हैं श्रीमती जानकी ?

जानकी — जी।

प० डा० — क्षमा कीजिए इस धृष्टताके लिए, परन्तु यह नाम हमारे यहाँ नहीं चलेगा। हमें तो कोई सुन्दर-सा मधुर-सा नाम चाहिए, जिसमें कुछ विलक्षणता हो, कुछ अनूठापन हो, जो लोगोंको नवीन-सा लगे। [सिर खुजलाता है।] कंचन कैसा रहेगा ? नहीं, कांचनलता। नहीं, यह भी नहीं। तो फिर रंजना ? ऊँ हूँ, अंजना ? हाँ, अंजना अच्छा नाम है। क्यों आपका क्या विचार है ? [जानकी चुप रहती है।] देखिए, आजसे आपका नाम अंजना हो गया।

जानकी — तो मैं अपने नामका क्या करूँ ?

प० डा० — माताजीको पत्र लिखते समय अपने ही नामसे हस्ताक्षर कर लीजिएगा। [जानकी कुछ घबरा-सी जाती है परन्तु पब्लिसिटी डायरेक्टर इसे बहुत सोचनेका समय नहीं देता।] अच्छा देखिए, फिल्मी नाम तो आपका चुन लिया। मैं फोटोग्राफरको भी बुलवा लेता हूँ। वह आपके [illegible] आकृति व आकर्षणके ऐसे-ऐसे फोटो खींचेगा कि आपकी [illegible] रोशनी होकर चमकेगी। तदनन्तर आप

	मुझे अपने बारेमें दो-चार बातें बता दीजिए। आपको कौन-सा रंग सबसे प्रिय है ?
जानकी	लाल।
प० डा०	आपको कौन-सा काम सबसे अधिक रुचिकर मालूम होता है ?
जानकी	कैसा काम ? समझी नही।
प० डा०	मै पूछ रहा था आपकी हाबी क्या है ?
जानकी	कशीदा काढना।
प० डा०	आप विवाहित हैं ?
जानकी	हाँ।
प० डा०	आपका घरेलू जीवन सुखमय है ?
जानकी	कभी था, अब नही है।
प० डा०	आपको कौन-सी मिठाई सबसे अधिक पसन्द है ?
जानकी	रसगुल्ले।
प० डा०	क्या आपने किसी सौन्दर्य-प्रतियोगितामें भाग लिया है ?
जानकी	नही। परन्तु इन सब प्रश्नोंका मेरे अभिनयसे क्या सम्बन्ध है ?
प० डा०	आप देखेंगी कि आपके बारेमे ऐसे-ऐसे अपूर्व लेख लिखूँगा कि आपको विश्वविख्यात नायिका न बना दिया तो कहिएगा। बच्चे-बच्चेकी जबानपर आपका नाम होगा। नवयुवकोंके अनगिनत पत्र आपके नाम आयेंगे। कोई पत्रिका ऐसी न होगी जिसमे आपका फोटो न हो। जिस रास्तेमे आप गुजरेंगी दर्शकोंकी भीड़ खड़ी रहेगी।

[जानकी उसकी ओर चकित नेत्रोंसे देखती है। पब्लि-सिटी डायरेक्टर जरा आवाज नम्र करके कहता है।]
परन्तु इसमें आपको सहयोग देना होगा। जैसे मैं कहूँ आप चलती जाइए। [जानकी उसपर प्रश्नात्मक दृष्टि डालती है।] हाँ, ठीक कह रहा हूँ। फिल्म तो चाहे डायरेक्टर ही बनाते होंगे, परन्तु अभिनेत्रियाँ तो हम ही बनाते हैं।

जानकी। [स्वगत] समझी।

प० डा० निश्चित। बिगाड़ना या बनाना हमारे बायें हाथका खेल है। किन्तु आप चिन्ता न कीजिए। आपका सितारा ऐसा चमकेगा कि देखनेवालोंकी आँखें चौंधिया जायेंगी।

जानकी। इस सद्भावना और सहानुभूतिके लिए धन्यवाद।

[पब्लिसिटी डायरेक्टर घण्टी बजाता है। चपरासी आता है।]

प० डा० [चपरासीसे] जरा फोटोग्राफर साहबको बुलाना।

[चपरासी जाता है।]

जानकी — अभीतक तो मैं बड़े आराममें हूँ।

[दरवाजा खुलता है। फ़ोटोग्राफ़र आता है।]

प० डा० — आइए, सलीम साहब, इनसे मिलिए। हमारी भावी, होनहार नायिका मिस अंजना। मैं इनके बारेमें एक लेख तैयार कर रहा हूँ। उसीके साथ दो-चार फोटो भी प्रकाशित करना चाहता हूँ। तुम ऐसे फोटो उतारो कि देखनेवाले दंग रह जायें।

फोटोग्राफर — [अबतक जानकीकी रूपरेखाको निर्निमेष नेत्रोंसे देख रहा था] आप मेरी ओरसे निश्चिन्त रहिए। ऐसा फोटो खींचूँगा कि दुनिया देखती रह जायेगी।

प० डा० — अच्छा, तो मैं चलता हूँ। [जानकीसे] अभी आपकी एक छोटी-सी जीवनी लिखकर लाता हूँ। आप पढ़ेंगी तो देखेंगी कि मेरी कलममें क्या जादू है।

[जाता है।]

फोटोग्राफर — [आवाज देता है] चपरासी!

चपरासी — [बाहरसे आकर] हुजूर!

[illegible] — देखो, कैमरा, लैम्प, पीछे रखनेके लिए पर्दे इत्यादि लाओ — जल्दी।

[चपरासी जाता है।]

फोटोग्राफ़र — [अंजनासे] मैं जरा देखना चाहता हूँ कि किस तरफसे आपका फोटो अच्छा आयेगा। जरा दायीं ओर देखिए तो अब जरा बायीं तरफ जरा गरदन ऊँची कीजिए

[illegible] दीजिए। [जानकी यह सब कुछ अप्रसन्नता-पूर्वक करती है।] क्षमा कीजिए, आपको कष्ट हो रहा है, परन्तु विवश हूं। देखना चाहता हूं कि किस एंगिलसे [illegible] लिया जाये तो सबसे अच्छा दिखाई देगा। हां, तो [illegible] जरा चेहरा टेढ़ा करके देखिए। यह अच्छा है। [illegible] सामनेकी साड़ी जरा ठीक कर लीजिए ताकि [illegible] बॉर्डर अच्छी दिखाई दे। एक बात और— [illegible] शॉटके लिए चोली ऐसी पहनिएगा जिसके गलेकी [illegible] कुछ नीची हो, इसकी जरा ज्यादा ही ऊंची है। [illegible] क्षमा कीजिए, आपको बहुत परेशान कर रहा हूं। अच्छा, [illegible] अपना पांव जरा आगे बढ़ाइए, नहीं, ऐसे नहीं, जरा [illegible] भी दिखाई दे और हां, ऐसे। [[illegible]] क्या कहूं मिस अंजना, आप-जैसी सूरत [illegible] देखी, वैसा साफ रंग है, वैसी मद-भरी [illegible] आकृति वैसी सुन्दर है। आपमें वे सब [illegible] हैं जो एक सफल और प्रसिद्ध नायिकाके लिए [illegible] है। जरा मुस्कराइए तो। हां, जरा-सा और। [illegible] सोचता कि सुरैया और नरगिसके घरमें [illegible]

उतारूँगा कि मालूम हो कोई अप्सरा स्वर्गसे उतर आयी है। [जरा धीमेसे] परन्तु इसके लिए आपको सहयोग देना होगा। [जानकीके माथेपर भृकुटी देखकर] अब-तक तो किसीने कैमरामैनसे बिगाड़कर कुछ लिया नही। पार्वती जरा शान दिखाने लगी थी। मैंने उसके फिल्मको ऐसा बिगाड़ा कि कही भी दो दिनमे अधिक नही चला।

जानकी सच? उस बेचारीको कितनी ठेस पहुँची होगी! मेरी तो हिम्मत नही होती काम करनेकी।

फ़ोटोग्राफर आपके साथ कोई ऐसे थोड़े ही करूँगा। घबराइए नही। इधर आइए, जरा लाइटके सामने बैठिए। ये फोटो शाम तक तैयार हो जायेंगे। कहिए, आपके पास कहाँ भिजवाऊँ या स्वयं लेता आऊँ?

जानकी मैं यहाँ निकट ही एक होटलमे ठहरी हूँ।

फोटोग्राफर होटलमे? वहाँ आपको क्या आराम मिलेगा!

जानकी अभीतक तो कोई कष्ट नही हुआ।

फ़ोटोग्राफर यदि तनिक भी कठिनाई हो तो मेरे यहाँ आ जाइए। मेरे पास एक अच्छा बड़ा-सा फ्लैट है जूहूमे। बरामदमे बैठो तो सामने समुद्रका ऐसा अच्छा दृश्य दिखाई देता है कि घण्टो बैठे देखा करो, कभी जी नही ऊबता।

जानकी [व्यंग्यमय मुसकराहटमे] मालूम होता है यहाँ मकानोंकी तगी नही है। हम तो सुनते थे कि बम्बईमे मकान मिलना असम्भव है। यहाँ तो मानो सब बड़े-बड़े बंगले खाली पड़े है।

फोटोग्राफर [बात टालनेके लिए] फोटो तो खिच चुके।

पचपनका फेर

जानकी — धन्यवाद ।

फोटोग्राफर — [चपरासीको बुलाकर] ये सब चीजे उठा ले जाओ ।

जानकी — [सस्मित उत्सुकतासे] आपने कहा शाम तक तैयार हो जायेंगे ?

फोटोग्राफर — मैं अभी डार्करूममें जाकर इन्हें तैयार करता हूँ । बहुत रसिक होता है फोटो बनानेका ढंग । आपने देखा कभी ?

जानकी — जी, नहीं ।

फोटोग्राफर — तो चलिए मेरे साथ । अभी सब समझा देता हूँ ।

जानकी — नहीं, इस समय नहीं, फिर कभी सही ।

फोटोग्राफर — जैसी आपकी इच्छा ।

[जाता है । जानकी कमरेमें कुछ क्षणके लिए अकेली रह जाती है । कुरसीसे उठकर दीवारपर टँगी तसवीरोंको ध्यानसे देखती है । साथ ही कुछ गुनगुनाने लगती है । एक व्यक्ति कमरेमें आकर चुपकेसे खड़ा हो जाता है और उसका गाना सुनने लगता है । यह साउण्ड इञ्जीनियर है ।]

सा० इं० [विस्मयसे] मैं आपका मतलब नही समझा ।

जानकी किसी खास मतलबसे तो नही कहा । यहांके लोग इतने नेक हैं कि क्या बताऊं ! सभीने मुझसे यही प्रश्न पूछा । प्रश्न ही नही पूछा, अपने घर तकमे रहनेके लिए भी निमन्त्रण दिया ।

सा० इं० मैं आपको जानता तो नही, परन्तु इतना अवश्य पहचानता हूँ कि आप फ़िल्म-संसार मे अभी नयी-नयी आयी है । आप क्या करती है या क्या करने आयी है, उससे तो मेरा कोई वास्ता नही । केवल इतना सावधान कर देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि यहांके लोगोमे बचकर रहना ।

जानकी धन्यवाद ! मैं अपनी रक्षा स्वयं कर सकती हूँ ।

सा० इं० जब नयी-नयी आती है तो सभी यही समझती है । और फिर आप तो भोली-भाली दिखती है । ध्यान रखना कही इनकी चिकनी-चुपडी बातोमे न आ जाना ।

जानकी आपकी नेक सलाहके लिए आभारी हूं । आशा है ऐसी स्थिति उत्पन्न न होगी ।

सा० इं० मुझे कुछ और नही कहना है सिवा इसके कि कोई आवश्य-कता हो तो मुझे अपना मित्र तथा हितैषी समझना, वैसे तो मैं आपको आपके काममे सहायता दूंगा । सिनेमामे आवाज बहुत बडी चीज है । देखा जाये तो इसीका तो सारा खेल है । माइक्रोफोनकी कुंजी अपने हाथमे है । चाहे तो आपकी आवाजमें बुलबुलकी-सी मिठास भर दूं, और चाहे तो आवाजको ऐसा कर दूं कि मालूम हो जैसे कोई मेढक टर्रा रहा हो ।

पनघटका प्र

[रूपेन्द्रस्वरूप वापस आता है। साउण्ड इंजीनियरकी ओर घूमकर देखता है मानो उसने उसकी बातचीतका अन्तिम भाग सुन लिया हो।]

रूपे० [साउण्ड इंजीनियरसे] आपने इनकी आवाज़ रेकॉर्ड कर ली?

सा० इं० जी, अभी करने जा रहा था।

[फोटोग्राफर एक हाथमें गीले नेगेटिव पकड़े अन्दर आता है]

फोटोग्राफर वाह! वाह! क्या तसवीरें उतरी हैं! देखिए, डायरेक्टर साहब।

रूपे० अभी देखता हूँ।

[फोटोग्राफर डायरेक्टरके पास कागज़ोंको हटाता हुआ जाता है।]

[illegible] [illegible], [illegible] बढ़िया चीज़ लिखी है। पढ़ने- [illegible]।

मैंने तो अबतक किसीको नही दी — चाहे तो निगमपापर हस्ताक्षर कर दे।

प० डा० हाँ, मिस अजना, डायरेक्टर साहब जो कह रहे हैं, वह सच है। ऐसा अवसर बहुत खुशकिस्मत लोगोको मिलता है।

जानकी बहुत कुछ धन्यवाद! आप लोग कितने नेक है! बम्बई शहर भी बहुत अच्छा है। रहनेके लिए जगह भी बहुत है। आप ही लोगोकी कृपासे मैंने इस पिछले आध पौन घण्टेमे बहुत कुछ सीख लिया है। सोचती हूँ मैं अपने छोटे-से नगर मे ही अधिक सुखी रहूँगी। नमस्कार! [उठकर दरवाज़ेकी ओर बढती है।]

रूपेन्द्र सुनिए तो, एक मिनिट ठहरिए। कुछ मालूम भी तो हो, मिस अजना' •

जानकी [दरवाजेपर क्षण-भर रुककर] मिस अजना नही, श्रीमती जानकी कहो। नमस्कार!

[जाती है। सब लोग एक दूसरकी ओर हक्का-बक्का देखते रह जाते है]

[illegible]न्द्र दिमाग खराब है इसका। ऐसा अच्छा अवसर खो दिया। और कभी कोई इतना करनेको तैयार न होगा। अब ना आकर मेरे दरवाजेपर नाक भी रगडे तो अन्दर पाँव न रखने दूँ।

[कहानी लेखक आता है — बहुत उत्तेजित]

कहानी ले० एक कहानी लिखकर लाया हूँ—मिस अजना [illegible]

पचपन का [illegible]

[चारों ओर देखकर] कहाँ गयी वह ?

रूपेन्द्र — क्या तुम पाँच मिनिट लेट पहुँचे, चिड़िया उड़ गयी हाथसे।

प० दा० — जो बेचते थे दवाए दर्दे दिल, वह दुकान अपनी बढ़ा गये।
खरा, साहब, कैसी कही। [रूपेन्द्रकी ओर हाथ बढ़ाकर]
लाइए हाथ।

[सब एक दूसरेकी ओर खिलखिलाकर हँसते हैं। हाथ मिलाते हैं]

[परदा]

महिला-मण्डल

[दैनिक 'समाचार' के सम्पादकीय आफिसका एक छोटा-सा कमरा। सब पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा अन्य प्रकारके अखबारोंसे लदी हुई टेबिल। आलमारियाँ भरी पड़ी हैं। दीवारोंपर सुन्दर स्त्रियोंके चित्र टँगे हैं जिनमें कि भिन्न भिन्न प्रकारकी क्रीमों, पाउडर तथा लिपस्टिकोंका प्रयोग करती हुई दिखायी गयी हैं। खिड़कीमें-से बाहर देखनेपर दूर तक ऊँची-ऊँची इमारत दृष्टिगोचर होती हैं। कमरा प्रायः खाली है, केवल एक पचास वर्षका व्यक्ति चश्मेवाला मेजपर बैठा बड़ी तेजीसे टाइपराइटर चला रहा है। उसके दायीं ओर टेलीफोन रखा है। सम्पादक साहब, [illegible] [illegible] एक पतले और दुर्बलतम पत्रकार, प्रवेश करते हैं]

इसलिए आनेमे कुछ देर हो गयी होगी। प्रकाश अभिनेत्री ‘सुन्दरलता’ से भेंट करने गये हैं।

सम्पादक — [नाक चढाकर] उँह! सुन्दरलता!!

मदनगोपाल — हमने अपने पाठकोको हर रविवारके दिन एक अभिनेत्रीके बारेमे बातचीत करनेका वचन दे रखा है। जो अधिक लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध हैं उनसे भेंट कर चुके हैं।

सम्पादक — अच्छा, जैसे जी मे आये करो, परन्तु उनकी फोटो मत छापना।

मदनगोपाल — हमारे पास उसकी पन्द्रह साल पहलेकी एक फोटो रखी है वह ऐसी बुरी नही। और उसने उसपर हस्ताक्षर भी कर रखे हैं।

सम्पादक — हस्ताक्षर! तुम्हारा मतलब उसके अँगूठेकी छापसे है?

मदनगोपाल — नही जी, बराबर हस्ताक्षर है और सामने यह भी लिखा है “मेरे सहस्रों फिल्मी मित्रोके नाम जिन्हे मुझसे अनुराग है।”

सम्पादक — इस सप्ताहका लेख क्या है?

मदनगोपाल — [घृणित भावसे] ‘गर्भवती स्त्रीके लिए उपयोगी बातें।’ देखिए, सम्पादक साहब आपके ‘महिला मण्डल’ की ‘प्रेम दीदी’ बने मुझे आज तीन मास हो गये हैं, अब मुझे कोई और काम दीजिए जो पुरुषोंके योग्य हो। इससे तो तंग आ गया हूँ। अजीब-अजीब पत्र आते हैं — [illegible] [illegible]। यह सुनिए, ‘प्रिय दीदी, तुम्हारा लेख ‘मुन्नी मुन्ना’ बहुत ही अच्छा लगा। अब मैंने फैसला कर लिया है कि एक बच्चा होना ही चाहिए, किन्तु मेरे स्वामी ‘नहीं’ [illegible]

[illegible]म [illegible] हैं ? अह !'

[illegible] — [illegible] और हिम्मत बाँधकर चलाय चलो, मैं किसी [illegible] खोजमें हूँ जिसको आपका काम सौंप सकूँ, [illegible] महीने तक तो मिल ही जानी चाहिए।

[illegible] — [illegible], [illegible] सौंप देनेमें मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। [illegible] मेरे बच्चोंका 'श्याम चाचा' बना दे परन्तु '[illegible]' की 'नवप्रिय दीदी' के बन्धनसे मुक्त [illegible]।

[illegible] — [illegible] याद आ गया, [illegible] जी, '[illegible]म पेन पाउडर' का नाम [illegible] जरूर लिखना। अभी [illegible] [illegible] सौंपनेके [illegible], और विज्ञापन [illegible], [illegible] चाहिए [illegible]।

दीदी' से बात करना चाहती हैं क्षमा कीजिए, इस समय तो वह बाहर गयी हुई हैं कह नहीं सकता सम्भव है 'ड्राई क्लीनर' के पास गयी हों। आप कुछ सन्देश देना चाहती हैं क्या? जी हाँ मैं लिख लेता हूँ [सन्देश दोहराता तथा लिखता है] श्रीमती जल मातुंगावालेने टेलेफोन करके पूछा है कि उनका नाम उन लोगोंकी सूचीमें क्यों नहीं प्रकाशित किया गया, जो बाटलीवालाकी पिछले बुधको जुहूपर चाँदनी रातकी पार्टीमें उपस्थित थे जी हाँ, मैंने लिख लिया। मुझे विश्वास है कि दीदीको इस भूलके लिए स्वयं बहुत खेद होगा हाँ, कुछ गलती हो हुई जी, अवश्य आते ही कह दूँगा। नमस्कार।

[टेलेफोन रखता है। प्रकाश आता है]

प्रकाश — [परेशानीसे कुरसीमें गिरते हुए] हूँ — कैसा जीवन कैसी स्त्री!

मदनगोपाल — क्यों, क्या हुआ?

प्रकाश — 'महिला-मण्डल'के लिए रूपरंगकी सखी 'सुन्दरकला'से पूरी भेंट करके आ रहा हूँ।

मदनगोपाल — जब तुम पहुँचे तो क्या कर रही थी?

प्रकाश — बाल रंग रही थी अपनी वर्षगाँठके शुभागमनपर।

मदनगोपाल — यह काम ही ऐसा है इसमें यह सब कुछ करना ही पड़ता है! अच्छा तुम जल्दीसे लेख तैयार करो। तीन बजेसे पहले देना है!

प्रकाश — अभी तो बहुत समय है।

मदनगोपाल — सम्पादक महाशय और मैनेजर तो स्वयं [illegible]।

प्रधान — [अपने टाइपराइटरमें कागज डालते हुए] मैंने उनसे कहा कि हमारे पाठकोंको उनके विवाह-सम्बन्धी विचारोंको जाननेकी बहुत उत्सुकता है। कहने लगीं मुझे शादीमें [illegible] नहीं। स्त्रियोंको शादी करनी ही चाहिए। जब मैं जवान थी तो मैं भी काफी शादी किया करती थी। अब अपना सारा समय अपनी कलाको अर्पित करती हूँ।

[illegible] — और अपनी [illegible]को ?

प्रधान — मैंने उनका 'नशाबन्दी', 'हिन्दुस्तानी क्रिकेट टीम', 'रेलवे [illegible]' तथा '[illegible]की कीमतें बढ़ाने'के बारेमें विचारोंका भी पता लगाया है।

[illegible] — [[illegible] कागजपर] अरे, दादा, तुम तो [illegible] आदमी हो, जरा बताना तो गर्भवती स्त्रीके [illegible] चाहिए ?

साफ-साफ लिखने लगूँ तो यह पत्रिका ही बन्द हो जाये [पास रखी पत्रिकाओंको थपककर] मैं समझता हूँ अब इन पत्रिकाओंको ही देखना पडेगा' तभी कुछ नये विचार आयेंगे। और देखो जी, यदि एक योग्य पत्रकार बनना है तो तुमको बहुत कुछ सीखना पडेगा। दुनियाकी वर्तमान समस्याओंको समझना पडेगा।

प्रकाश मैं तो राजनीतिक विषयोंपर विशेषता प्राप्त करना चाहता हूँ ताकि इन 'लीडरों' से टक्कर ले सकूँ।

मदनगोपाल यह व्यर्थकी बातें बन्द करो और मुझे काम करने दो।

[दोनों कुछ देर तक काम करते हैं। सातवलेकर आता है]

सातवलेकर नमस्कार, बहनो और भाइयो! इस सप्ताह स्त्री-समाजमें क्या विप्लव आया है।

मदनगोपाल सम्पादक साहब चक्कर लगा गये हैं और कह गये हैं कि 'महिला-मण्डल'का पृष्ठ तीन बजे तक उनके पास पहुंच जाना चाहिए। समय बहुत कम है, तुम कृपा करके बैठो और काम करो। पाठकोंके प्रश्नोंके उत्तर लिखकर मेरे हवाले करो।

सातवलेकर मेरा काम तैयार है, केवल टाइप करना रहता है। सच, यहां एक पढी-लिखी, चतुर, सुन्दर, युवतीका होना आवश्यक है जो हम लोगोंके साथ काम करे। कई प्रश्न ऐसे आत्मीय होते हैं कि उत्तर देनेमें सकोच होता है। यह देखो [दोनोंको एक सवाल दिखाता है, दोनों खिल-खिलाकर हँसते हैं] सच दिमाग थक जाता है, दिना-दिन बच्चोंकी लँगोटियाँ, रोगन रंग करनेकी शोभा, लिपस्टिको तथा दुबले होनेके साधनोंके विषयमें लिखते-

[illegible]ने । क्या, क्या [illegible] हो तुम ?

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] जागे धागा [illegible] सीधा जोड़ा, [illegible] नीचे [illegible]

[[illegible]]

[illegible] [illegible], अपने जीवनके तीन अमूल्य वर्ष मैंने अमरीका- [illegible] '[illegible]' [illegible] व्यय किये, मैं पूछता हूँ क्या [illegible] [प्रश्नका उत्तर नहीं मिलता । टाइपराइटर [illegible] । । [illegible] बन्द होती है ।]

[illegible] । । [illegible], [illegible] समाप्त हो [illegible] आप [illegible] दीजिए ।

[[illegible]]

[illegible]

। ।

प्रकाश — ह्विस्की और चीज (Cheese)।

सातवलेकर — मज़ाक नही करो

मदनगोपाल — 'हाइड्रोजन पेरोक्साइड' (Hydrogen Peroxide) और 'ग्लैसरीन' (Glycerine)।

सातवलेकर — यह अच्छा जँचता है, और फिर बहुत-से घरोंमे यह चीजे मौजूद होगी। मेरा विचार है थोडा-सा 'अमोनिया' (Ammonia) भी मिला दूँ [टाइप करता है] ग्लैसरीन एक हिस्सा, हाइड्रोजन पेरोक्साइड तीन हिस्से और अमोनिया छह हिस्से मिलाकर अच्छी तरह रगडो जबतक दाग न मिट जाये—[साथियोंसे] क्यो, क्या खयाल है ?

मदनगोपाल — बहुत अच्छा।

प्रकाश — कही तीनो चीजें मिलानेसे आग लगनेकी सम्भावना तो नही !

[टेलेफ़ोन फिर बजता है]

मदनगोपाल — प्रकाश ज़रा सुनना मैं ज़रा इस आकाक्षित मांका किस्सा समाप्त कर लूँ।

[illegible] — अच्छा [टेलेफ़ोन उठाता है] ' हूँ लीला दीदी ! जी ' अवश्य यही है मै उन्हे फोन देता हूँ [मदनगोपाल जोर-जोरसे हाथ हिलाकर समझाता है कि न कर दो] ज़रा ठहरिए वह अभी आ रही है

मदनगोपाल — [दबी आवाजसे] क्या गड़बड़ कर रहे हो ?

प्रकाश — [टेलेफ़ोनको हाथसे दबाते हुए] क्या यह भागा [illegible]

मदनगोपाल — यदि तुम दोनो पन्द्रह मिनिट भी अपने मुँह बन्द रख सको तो सम्भव है कुछ काम हो

सातवलेकर — केवल एक मिनिट लूँगा – यह देखिए "पूनासे एक युवती लिखती है कि वह बड़ी दुविधामे है, उसे समझ नही आ रही शादी किससे करे, एक खूबसूरत परन्तु निर्धन युवकसे जिसे वह प्रेम करती है, या एक सीधे-सादे अधेड़ पुरुषसे जिसके पास पैसा भी है घर भी···। कहती है उत्तर तुरन्त ही 'महिला-मण्डल'मे छाप दीजिए

मदनगोपाल — अमीर आदमी ही से करनी चाहिए।

सातवलेकर — यह तो कोई भी पत्रिका जिसे तरुणियोका तनिक भी अनुभव है कभी नही कहेगी कहना यह चाहिए कि अपने हृदयको टटोलो, यदि वास्तविक प्रेम है तो उसीपर अटल रहो। प्रेम अमूल्य वस्तु है उसकी तुलना रुपयेसे नही की जा सकती •

प्रकाश — कुछ भी लिख दो, आखिर शादी होती तो 'लौटरी' ही है, कितना भी सोच-विचार करो।

[सम्पादकका प्रवेश]

सम्पादक — यह क्या गज़ब कर डाला तुम लोगोने [हाथमे पकड़े हुए कुछ पत्र उनकी ओर हिला कर]–यह सात पत्र आये है और अखरोटोके लड्डू बनानेकी विधिपर–क्या लिखा था तुमने पिछले रविवारको ?

सातवलेकर — मैने बताया था कि प्राचीन युगामे लड्डू बनाते थे "अखरोट की गिरी, केलेका छिलका, आमकी गुठली और बबूलकी छालको पीसकर "

मदनगोपाल यदि तुम दोनों पन्द्रह मिनिट भी अपने मुँह बन्द रख सको तो सम्भव है कुछ काम हो

सातवलेकर केवल एक मिनिट लूँगा – यह देखिए " पूनासे एक युवती लिखती है कि वह बड़ी दुविधामें है, उसे समझ नहीं आ रही शादी किससे करे, एक खूबसूरत परन्तु निर्धन युवकसे जिसे वह प्रेम करती है, या एक सीधे-सादे अधेड़ पुरुषसे जिसके पास पैसा भी है घर भी···। कहती है उत्तर तुरन्त ही 'महिला-मण्डल'में छाप दीजिए "

मदनगोपाल अमीर आदमी ही से करनी चाहिए।

सातवलेकर यह तो कोई भी पत्रिका जिसे तरुणियोंका तनिक भी अनुभव है कभी नहीं कहेगी कहना यह चाहिए कि अपने हृदयको टटोलो, यदि वास्तविक प्रेम है तो उसीपर अटल रहो। प्रेम अमूल्य वस्तु है उसकी तुलना रुपयेसे नहीं की जा सकती "

प्रकाश कुछ भी लिख दो, आखिर शादी होती तो 'लौटरी' ही है, कितना भी सोच-विचार करो।

[सम्पादकका प्रवेश]

सम्पादक यह क्या गजब कर डाला तुम लोगोंने [हाथमें पकड़े हुए कुछ पत्र उनकी ओर हिला कर]–यह सात पत्र आये हैं और अखरोटोंके लड्डू बनानेकी विधिपर–क्या लिखा था तुमने पिछले रविवारको ?

सातवलेकर मैंने बताया था कि प्राचीन युगोंमें लड्डू बनाते थे "अखरोटकी गिरी, केलेका छिलका, आमकी गुठली और बबूलकी छालको पीसकर "

सम्पादक [बात काटकर] इन पत्रोंसे तो यह ज्ञात होता है कि कुछ कुटुम्ब बड़े पीडासे कराह रहे हैं और मुझे डर है कि वकीलोंसे सलाह ले रहे होंगे ।

सातवलेकर यह तो बुरी बात है मुझे विश्वास है उन्होंने कुछ गलत-सलत चीजें मिला दी होंगी ''

सम्पादक परन्तु तुमने यह विधि कहाँसे पायी ? क्या तुम्हारी घरवाली-की विशेषता है ?

[गुस्सा तेज है]

सातवलेकर [क्षमा-याचनाके भावसे] नही, मैंने स्वय बनायी थी, सोचा, नयी चीज है, अच्छी दिलचस्प रहेगी और फिर आपने देखा होगा कि इसमें राशनकी कोई चीज नही, लोगों-को कुछ तो पीडा सहनी ही पडेगी अपनी मातृ-भूमिके लिए

सम्पादक [मुसकराहट रोकनेपर भी नहीं रुकती] यदि लोगोंको बलि ही देना चाहते हो तो सीधी तरहसे कहो' ''

सातवलेकर यह पहली बार है कि मेरी बतायी गयी विधि गलत हुई, आपको याद होगा कि 'बैगनकी आईस-क्रीम' कितनी पसन्द आयी थी बहनोंको

सम्पादक प्रेसकी स्वतन्त्रताका यह मतलब तो नही कि जो जीमे आया छाप दिया, ध्यान रखो ऐसी शिकायत फिर न आये [जाता है]

सातवलेकर [माथा ठोंककर] यह फल मिलता है परिश्रम और मौलिकताके लिए [कोई उत्तर नहीं देता, टाइपराइटर निरन्तर चलते है कुछ देर]

मदनगोपाल [कागज टाइपराइटरमें-से निकालते हुए] शुक्र है भगवान्-का – समाप्त तो हुआ [अपना कागज निकालकर] और यह लो 'सुन्दरलता' से भेंट !

मदनगोपाल शाबाश ! तुम्हारा क्या हाल है सातवलेकर ?

सातवलेकर [स्पीड तेज करते हुए] बस एक आध मिनिट और "
[एक चंचल युवती आती है – 'महिला-मण्डल'के पुरुष उसको देखते हैं फिर एक दूसरेको कुछ अनुत्साहपूर्वक]

युवती नमस्कार ! मैं 'लीला दीदी' से मिलना चाहती हूँ।

[सातवलेकर मदनगोपालकी ओर सकेत करता है]

मदनगोपाल मुझे खेद है कि वह इस समय आफ़िसमें नही है

युवती अच्छा, तो मैं यही उनकी प्रतीक्षा करती हूँ आपको कोई बाधा तो न होगी

मदनगोपाल कदापि नहीं परन्तु 'दीदी' तो जल्दी लौटनेकी नहीं, वे अभी-अभी अस्पताल गयी हैं।

युवती बीमार हैं क्या ? [मदनगोपाल सिर हिलाता है]
ओह यह तो बुरी बात हुई, मुझे बहुत बुरा मालूम हो रहा है यह जानकर क्या कुछ खास बात है ?

` वलेक नही, कोई घबराहटकी बात नही वह जचगीके लिए गयी हैं।

युवती [खुशीसे] सच ! यह तो बडी खुशीकी बात है क्या पहला 'बेबी' है ?

प्रकाश पन्द्रहवां !

युवती [घबराकर] भगवान्के लिए, क्या आप सच कह रहे है ?

सातवलेकर घवराइए नही, सम्भव है चीदहवाँ ही हो, ठीक नही कह सकता [युवतीके पाँव शिथिल पड़ जाते हैं। वह लड़खड़ाने-सी लगती है। सातवलेकर उठकर उसे सहारा देकर गिरनेसे बचाता है]

[सम्पादक आता है]

सम्पादक यह क्या हो रहा है ? क्या यह भी अखरोटोंके लड्डूका फल है ? मैनेजर मेरी जान खा रहा है और तुम यहाँ 'अन्त नाटचम्' कर रहे हो

युवती पानी पानी

मदनगोपाल [कुछ कागज सम्पादकको देकर] यह रहा 'महिला-मण्डल' शामको आकर 'प्रूफ' देख लूँगा।

सम्पादक हाँ 'ठीक किन्तु इनका क्या होगा ?

मदनगोपाल यह 'दीदी' से मिलने आयी थी आप चिन्ता न कीजिए हम इनकी देखभाल कर लेंगे [सम्पादक जाता है] सातवलेकर, अव वताओ किसी युवतीको यूँ गश आ जाये तो उसे होशमे लानेका क्या उपाय है ?

सातवलेकर नही जानता डॉक्टर वुलवाओ

मदनगोपाल कोई शब्द-कोश, कोई होम्योपैथी, कोई स्वास्थ्य-रक्षाकी किताव देखो न ! और कुछ नही तो 'स्त्रीका गृहस्थ-ससार' ही देखो

[प्रकाश किताव उठाकर पन्ने जल्दी-जल्दीसे पलटता है]

[परदा]

मण्डल

कलाकार और नारी

[परदा उठनेपर मीनाक्षी और साधना दोनों बैठी बातें करती दिखाई देती हैं। घर अच्छा,बड़ा और सुसज्जित है। एक दो प्राकृतिक दृश्योंके चित्र, एक दो सुन्दर तथा कलापूर्ण ढगसे उतारे हुए फोटो, रेडियोग्राम, पेपरमाशीका टेबिल-लैम्प, तिब्बती फूलदान।]

मीनाक्षी नयी खबर सुनी?

साधना कौन-सी?

मीनाक्षी सुना है राधा और मनोहरमे फिर झगडा हुआ। कुछ लोगोका विचार है कि अब वे अलग हो जायेंगे। उनका वैवाहिक जीवन तो समाप्त ही समझो।

साधना यह तो होना ही था।

मीनाक्षी इसे तुम अनिवार्य क्यो समझती हो?

साधना मीना, ज़रा सोचो, उन दोनोमे अन्तर कितना है! उमरमे देखो तो भी और रूप-रग देखो तो भी। माना कि मनोहर-के पास पैसा है, पर उससे क्या? उसका सारा दृष्टिकोण इतना सकीर्ण है कि राधा-जैसी उदार विचारोवाली लडकीके लिए निभाना बहुत कठिन है। कहते है बेचारीने कोशिश तो बहुत की परन्तु सफल नही हुई। वह तो बात-बातमें सन्देह करने लगता है।

मीनाक्षी जबतक पति-पत्नीके विचारोमें समानता न हो जीवन दूभर हो जाता है।

साधना — पुरुष होते बड़े शक्की हैं। पत्नी ज़रा किसीकी ओर देखकर मुसकरायी नहीं कि उनकी छातीपर साँप लोटने लगता है।

मीनाक्षी — बिलकुल ठीक कहती हो। पुरुषोंका सारा रोमान्स और प्रेम शादी हो जानेपर न जाने कहाँ लोप हो जाता है। फिर तो दफ्तर या रोटी कमानेका धन्धा [टेलेफ़ोनकी घण्टी बजती है। उठाते हुए] गलत नम्बर होगा 'हैलो ! हाँ, बात कर रही हूँ प्रदर्शनी कौन-सी 'समझी मुझसे मिलना चाहते हैं ? क्या काम है ? 'हाँ, यदि ज़रूरी है तो आइए मैं घर ही पर हूँ हाँ चले आइए अभी। [टेलेफ़ोन रखती है।]

साधना — किसे बुलावा दे रही हो ?

मीनाक्षी — [हँसते हुए] मुझे स्वयं ही नहीं मालूम।

साधना — बनो मत।

मीनाक्षी — नहीं, सच कहती हूँ। कल राकेश और मैं शामको घूमने निकले तो पार्क स्ट्रीटमें जो चित्रकला प्रदर्शनी हो रही है, वहाँ जा पहुँचे। वहींका कोई चित्रकार है जो मुझसे मिलना चाहता है।

" " — तो मैं चलूँ, अपनी शॉपिङ् कर आऊँ। जिस काममे निकली थी वह तो रह ही गया। ऐसे ही गप्पें लगाने लगी तुमसे। [उठती है]– एक बात कहूँ ? ये कलाकार लोग बहुत रसिक होते हैं। [मुसकराकर] ज़रा सचेत रहना।

मीनाक्षी — तुम चिन्ता न करो। मैं इतनी आसानीसे किसीकी बातोंमें

आनेवाली नहीं। तुम न्यू मार्केट जा रही हो तो ज़रा-सा मेरा भी काम करती आना। मैंने दो साड़ियाँ ड्राइक्लीन करनेको दी थी। उन्हें जरा लेती आना। आज शामको चाहिए।

साधना — लाओ रसीद।

मीनाक्षी — लो, देती हूँ।

[मेजके खानेमें-से रसीद निकालकर देती है। साधना कागजके टुकड़ेको बटुएमें डालकर चलती है। मीनाक्षी उसे दरवाजे तक पहुँचाती है। फिर अपनी साड़ीको सामनेसे ठीक तरह सजाकर कन्धेपर सँवार लेती है। हैण्डबैगमें-से काम्पैक्ट निकालकर अपनी नाकपर पाउडर लगाती है, लिपस्टिकको ठीक करती है।

इतनेमें दरवाजेपर खटका होता है और आगन्तुक उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही अन्दर चला आता है। उसके बाल लम्बे-लम्बे हैं और कपड़ोंमें, चाल-ढालमें तथा मुसकराहट-में एक बेपरवाही-सी है, जो भली मालूम देती है। हाथमें सिगरेट तथा बगलमें एक बस्ता है।]

मीनाक्षी — आइए, बैठिए। आप ही ने टेलेफोन किया था ?

चित्रकार — जी। [बैठता है। फिर सिगरेटका एक लम्बा कश लगाकर उसे पास ही जमीनपर फेंक देता है और पैरोंसे मसल देता है] कल आप हमारी प्रदर्शनीमें आयी थीं। इस असीम कृपाके लिए मैं स्वयं आपको धन्यवाद देने आया हूँ। जिस रुचिसे आप तसवीरें देख रही थीं उससे प्रत्यक्ष है कि आपको कलासे प्रेम है, आप कलापारखी हैं।

मीनाक्षी — [बात काटकर] मुझे तो चित्रकलाका क ख ग भी नही आता ।

चित्रकार — जिस तन्मयतामे आप मेरा बनाया हुआ प्राकृतिक दृश्य देख रही थी, वह क्या भूलनेकी बात है ? सतरई रगकी साडी, हरे रगका पतला फूलदार किनारा, उसीसे मैच करती हुई चोली, पैरोमे भी वैसे ही रगकी चप्पल, घने काले बालोमे बेलेके फूलोकी बेनी बाँधे मानो आप उस प्राकृतिक दृश्यके अधूरेपनको सम्पूर्ण कर रही थी ।

मीनाक्षी — [कुछ विस्मयसे] सच ? आपको तो मेरी साडीका रग तक याद है !

चित्रकार — इसमे अचम्भेकी तो कोई बात नही । जितनी स्त्रियाँ वहाँ उपस्थित थी, उन सबमें-से आप ही की छवि अनुपम थी ।

मीनाक्षी — [अविश्वाससे] आप मुझे बनानेकी चेष्टा तो नही कर रहे हैं ?

चित्रकार — नही, कदापि नहीं, मै एक कलाकार हूँ, और कलाकारका मन व आँखें सदा सौन्दर्यको ढूँढते रहते है । वही उसकी प्रेरणा है, उसीसे उसे उत्साह मिलता है । आपके गलेमे छोटे-छोटे मोतियोकी नाजुक-सी माला कैसी शोभा दे रही थी ! यह क्या शब्दोमें बखान करनेकी बात है ? मै चाहता हूँ कि आप मुझे अपना चित्र बनानेकी अनुमति दें ।

मीनाक्षी — [हँसती है] आप तो ऐसी बातें करते हैं मानो आपको कोई मोनालिजा मिल गयी हो । आश्चर्य तो यह है कि आप गलेकी माला व पैरोंके जूतो-जैसी छोटी-छोटी चीजों-पर भी ध्यान देते है । मेरा तो विचार था कि पुरुषोंको

इन बातोमे रुचि ही नही होती – कमसे कम उन पुरुषोंको जिन्हें मै जानती हूँ। मेरे पति तो

चित्रकार — अरे, इन पतियोका जिक्र न कीजिए। मुझे तो इन लोगोंसे चिढ है।

मीनाक्षी — आप शायद अविवाहित है। घरमे पत्नी आने दीजिए, आपके विचार बदल जायेगे।

चित्रकार — विवाह ? भगवान् बचाये। यह पति-पत्नीका झंझट

मीनाक्षी — मेरे विचारमें तो आप बहुत नेक पति बनेंगे।

चित्रकार — नेक पतियोंसे तो मैं कोसो दूर भागता हूँ। मेरे दिलमें तो केवल उन्ही पतियोंके लिए श्रद्धा है जो मजेमे पीते हैं, खाते है, घर पहुँचकर पत्नीको पीट भी लेते है, और फिर उसे बडे प्रेमसे मनाते है, छोटी-बडी चीजें भेंट करते है, अपने अपराधोंके लिए क्षमा मांगते है। इससे घरमें कुछ चहल-पहल रहती है, वरना आम घरोंमें तो पति-पत्नी यो रहते हैं जैसे कोई मुसीबतके मारे कैदकी सजा भुगत रहे हो।

[मीनाक्षीको कुछ गुदगुदी-सी होने लगती है।]

चित्रकार — क्षमा कीजिए, मैं बहुत निस्संकोच होकर बातें कर रहा हूँ। किन्तु आप तो स्वयं कलाकार है। कलाकारके हृदयकी धडकनको समझती है। हाँ, कुछ सिगरेट होगे आपके पास ?

मीनाक्षी — मेरे पति तो पीते नही, परन्तु मेहमानोके लिए है।

[उठकर सिगरेट लेने जाती है।]

चित्रकार — तब तो काफी पुराने और बासी होगे। अच्छा, लाइए तो।

[मीनाक्षी टिन लाकर उसके पास रख देती है, चित्रकार

एक सिगरेट निकाल कर सुलगाता है और दियासलाईकी तीलीको फूँककर लापरवाहीसे मेजपर फेंक देता है। मीनाक्षी उसके हाव-भाव देख मुसकराती है।]

चित्रकार बहुधा लोग कहते है कि कलाकार पागल होते है। उलटी-सीधी बाते करते है, हवाई किले बनाते है। परन्तु मै उनमें-से नही हूँ। इसीलिए मै आपसे साफ साफ बात करना चाहता हूँ।

मीनाक्षी कहिए।

चित्रकार मै आपके रूप और सौन्दर्यसे इतना प्रभावित हुआ हूँ कि जबतक मै आपका चित्र न बना लूँगा मुझे चैन नही मिलेगा। इस छविको मै कैनवसपर उतारकर अमर बना देना चाहता हूँ। ऐसा चित्र बनेगा कि दुनिया याद करेगी। इसीलिए मैने आज यहाँ आनेका साहस किया है।

मीनाक्षी [हैरानीसे] आप मेरा चित्र बनाना चाहते है ?

चित्रकार हाँ, आपका। वही मेरा सबसे उत्तम चित्र होगा। क्या आपको अभीतक किसीने यह नही बताया कि आपमे कितना आकर्षण है !

मीनाक्षी [विनीत भावसे] आपको मुझसे अधिक सुन्दर कई और युवतियाँ मिली होगी। उनका चित्र बनाइए।

चित्रकार आप नही जानती, जब किसी कलाकारको मनचाही प्रतिमा मिल जाती है तो उसपर क्या बीतती है ! वह उसे छोड नही सकता, उसके लिए भटकता फिरता है।

मीनाक्षी चित्रकारोके मॉडल तो कम उमरकी तरुणावस्थाकी लडकियाँ होती हैं, न कि मेरी-जैसी अधेड।

चित्रकार — अधेड ? आप अपने-आपको अधेड कहती है ? मैं कहता हूँ कि जो मधुरता, जो आकर्षण बाईस-तेईस वर्षकी युवतीमें होता है वह किसी तरुणीमें नही हो सकता। कवि लोग भले ही उनकी यशगाथा गाते रहे, तरुणियोंमें न तो वह चतुराई होती है, न वह जाग्रति जो एक बाईस-तेईस वर्षकी युवतीमें। पचीस वर्षसे ऊपर भी वह सौन्दर्य नहीं रहता। वे कुछ ज्यादा ही बुद्धिमान् तथा कठोर हो जाती है। आप ही की उमर सर्वसम्पूर्ण है, अन्यून है। बताइए, आप मेरे स्टूडियोमें कब आ सकेंगी ?

मीनाक्षी — मैं वादा नही कर सकती। पहले तो मुझे अपने पतिसे पूछना होगा कि आप मेरा चित्र बना भी सकते है या नही। यदि वह मान भी जाये तो भी मेरा स्टूडियो जाना तो असम्भव है। आप ही को यहाँ आना पड़ेगा।

चित्रकार — यहाँ चित्र कैसे बन सकता है ? कोई फोटो तो नही उतारना जो पाँच मिनिटमे काम हो जायेगा। घरमे कई प्रकारकी बाधाएँ होगी, आपके मिलने-मिलानेवाले आते रहेंगे। सम्भव है आपकी सास ही आ टपके और मुझे बैठा देख आपसे घूँघट निकालनेको कहें [मुसकराता है।]

मीनाक्षी — [टालते हुए] आप फिर किसी समय आये तो इस विषय-पर ब्योरेवार बातचीत करेंगे।

चित्रकार — किन्तु आप अपना चित्र तो बनाने देंगी न ?

मीनाक्षी — कोई ऐसी आपत्ति तो नही होनी चाहिए।

चित्रकार — [उल्लसित] बहुत कृपा है आपकी। अब मै चलूँ, जाकर बढ़ियासे बढ़िया रग और कैनवस खरीदूँ। आज ही ले

लूँगा – अभी। कल रविवार है। परसों तक कौन प्रतीक्षा करेगा! [जेबमें हाथ डालता है] अरे, मेरा बटुआ कहाँ है? ट्राममें तो नही निकाल लिया किसीने? क्या आप कुछ रुपये दे सकेंगी? कितना बुरा मालूम होता है इस तरह माँगना। न मालूम आप क्या समझेंगी। मैं बहुत शरमिन्दा हूँ।

मीनाक्षी कितने रुपये चाहिए आपको?

चित्रकार यही कोई तीस पैंतीस।

मीनाक्षी [हैण्डबेग खोलकर उसमें-से निकालते हुए] इतने तो इस समय नही हैं मेरे पास। यह ले लीजिए। [दस-दसके दो नोट देती है।]

चित्रकार यही बहुत है काम शुरू करनेके लिए। अच्छा, तो फिर आपसे शीघ्र ही भेंट होगी। [जाता है]

[चित्रकारसे अपने रूप-रंगकी प्रशंसा सुन मीनाक्षी पुलकित भावसे हैण्डबेग खोलती है, और शीशा निकाल-कर बाल सँवारती है, सामने रखे फूलदानमें-से एक गुलाबका फूल तोड़कर बालोंमें लगाती है। इतनेमें राकेश आता है।]

राकेश [फ़ाइलें मेजपर रखकर, कोट उतार कुरसीके पीछे टाँगता है] हैलो!

मीनाक्षी जानते हो आज क्या हुआ?

राकेश [उत्सुक होकर] क्या?

मीनाक्षी अच्छा, वह पीछे बताऊँगी, पहले तुम यह बताओ कि तुम्हें आज नयी चीज़ क्या दिखाई दे रही है?

राकेश — हूँ "हूँ तुम्हारी साड़ी नयी है।

मीनाक्षी — नही, यह तो छह साल पुरानी है।

राकेश — और तो मुझे विशेष कोई चीज नही दिखाई दी।

मीनाक्षी — [निराश-सी, बालोंमे लगे हुए फूलकी ओर संकेत कर] यह देखो।

राकेश — क्षमा करना, मैंने उस ओर ध्यान ही नही दिया।

मीनाक्षी — ठीक है, आपको कहाँ फुरसत है मेरी ओर देखनेकी! आपकी तो अपनी ही दुनिया है।

राकेश — नही नही, यह बात नही। अच्छा, बताओ तुम आज दोपहर-को सोयी कि नही?

मीनाक्षी — राकेश, कल हम चित्रकला प्रदर्शनी देखने गये थे न, वहाँका एक चित्रकार अभी-अभी मुझसे मिलने आया था। वह मेरा चित्र बनाना चाहता है।

राकेश — क्या नाम है उनका?

मीनाक्षी — नाम तो मैंने पूछा नही। वह इतना उत्सुक था चित्र बनानेको कि क्या कहूँ! उसे मेरी साड़ीका रंग, किनारी-का डिज़ाइन, यहाँतक कि मेरी चप्पलके दो स्ट्रैप थे या तीन, सब कुछ याद था। और एक आप है कि कभी इतना तक नही कहा कि वह साड़ी पहन लो, तुमपर अच्छी लगती है। आपको तो यह भी नही मालूम कि मेरे पास क्या है क्या नही।

राकेश — सम्भव है और लोगोको इन बातोंमे अधिक दिलचस्पी होती होगी। मैंने भी कभी तुम्हे किसी बातसे रोका नही।

तुम्हारा जो जी चाहे खरीदो, जो मनमें आये बनाओ, पहनो।

मीनाक्षी — ठीक है। परन्तु यही तो सब कुछ नहीं, पत्नीके प्रति ऐसी उदासीनता

राकेश — [बात बदलनेकी चेष्टा करते हुए] एक प्याला चाय दे दो। सीधा दफ्तरसे चला आ रहा हूँ।

मीनाक्षी — बस, मुझसे तो आपका इतना ही सम्बन्ध है! चाय दे दो नाश्ता बना दो खाना तैयार कर दो बटन लगा दो

राकेश — तुम तो यों ही नाराज़ हो रही हो। न मालूम यह चित्रकार क्या-क्या कहकर तुम्हें बहका गया है। मुझे तो इन लोगोंपर रत्ती-भर भी विश्वास नहीं। झूठे होते हैं, मक्कार – मारेके मारे। तुम्हारी इच्छा हो तो अपना चित्र बनवा लो, परन्तु उसकी बातोंमें मत आना।

मीनाक्षी — फिर वही बात! मैं कहती हूँ आपको हो क्या गया है? किसीसे जरा-सी बात की नहीं कि आपको ईर्ष्या होने लगती है। आखिर मैं भी तो इनसान हूँ, मेरा भी जी चाहता है मिलने-मिलानेको। किन्तु आप हैं कि बस चाहते हैं कि सारे दिन घरमें बैठी चक्की पीसा करूँ। घर न हुआ एक कैदखाना हो गया। आपकी समझमें क्यों नहीं आता कि स्त्रियोंके भी दिल होता है, उनकी भी कुछ कलात्मक प्रवृत्तियाँ होती हैं, उनका भी मन चाहता है कि कभी-कभी रोज़-रोजकी दिनचर्यासे कुछ देरके लिए छुटकारा पायें।

राकेश [मुसकराकर] यह चित्रकार तो काफी प्रभावशाली मालूम होता है। इतनी जल्दी असर हो गया!

मीनाक्षी [व्यंग्यसे] मेरा अपना तो न दिल है न दिमाग, लोगोंके बहकानेका ही असर है।

राकेश देखो, मीनाक्षी, मैं इन लोगोंको तुमसे ज्यादा पहचानता हूँ। मुझे दुनियामें काफी धक्के खाने पड़े हैं, तरह-तरहके लोगोंसे टक्कर लेनी पड़ी है, इसलिए तुम्हे सचेत करना चाहता हूँ। यह ठीक है कि कलाकार भावुक होते हैं, प्रकृति और प्रेमके बहुत बढ़िया चित्र बनाते हैं, इन चीजों-को महत्त्व भी अधिक देते हैं। परन्तु वास्तवमें इनके लिए भी रोजी कमानेका प्रश्न उतना ही गम्भीर है जितना औरोंके लिए। ये भी उतने ही स्वार्थी हैं जितने अन्य लोग। इसलिए तुम्हे सावधान करना चाहता हूँ। कुछ रुपये तो नही ले गया तुमसे ?

मीनाक्षी रुपये तो ले गया है, पर उससे क्या ?

राकेश कितने ?

मीनाक्षी बीस।

राकेश अब वह जायेगा किसी होटलमें, शराब पियेगा, सिगरेट फूँकेगा और फिर आ जायेगा खाली हाथ।

मीनाक्षी आप तो हर एकपर सन्देह करते हैं। किसीको कभी अच्छा भी कहा है आपने! आपके पैसे हैं। मैंने आपसे पूछे बिना उसे दे दिये, इसीलिए आप ऐसा कह रहे हैं।

राकेश [अधीरतासे] मुझे बीस रुपयोंकी चिन्ता नही। तुम जितना चाहो, जैसे चाहो खर्च कर लो। परन्तु यो कोई

झाँसा देकर ले जाये तो बुरा मालूम होना ही है। खैर, जो हो गया सो हो गया। छोड़ो इन बातको। मैं ज़रा मुँह हाथ धो लूँ। [जाता है]

[निराशा, खीझ और गुस्सेमें भरी हुई मीनाक्षी उठकर जाती है और बालोंमें-से फूल निकालकर रद्दी कागजोंकी टोकरीमें फेंकने लगती है कि साधना हाथोंमें एक बड़ा-सा लिफाफा लिये आती है।]

साधना — [मीनाक्षीको फूल फेंकते देखकर] क्यो, क्या हुआ ?

मीनाक्षी — होना क्या है ! वही चाल पुरानी बेढंगी। किसीने बात की नही कि आगबबूला होने लगते है।

साधना — राकेशसे कुछ झपट हो गयी क्या ? और उस चित्रकारका क्या हुआ ?

मीनाक्षी — आया था। मेरा चित्र बनाना चाहता है।

साधना — कैसा आदमी है ?

मीनाक्षी — ठीक है।

साधना — कुछ बताओ भी। गुस्सा राकेशपर है, मुझपर तो नही। कैसा था देखनेमें ? क्या कहता था ?

मीनाक्षी — अच्छा आदमी है। खूब दिलचस्प बातें करता है। इतनी प्रशंसा की मेरी कि और कोई होता तो सोचती मुझे बना रहा है। साधना, किसी कलाकारसे यों बातें करनेका आज पहला अवसर था। मुझे तो अच्छा लगा। कुछ लगी-लिपटी नही, दुनियाकी परवा नहीं। समाजके जिन बन्धनोंमें हम जकड़े हुए हैं, उनसे उसको कोई वास्ता नहीं।

उनसे मिलकर ऐसा मालूम हुआ जैसे बन्द कमरेमें स्वच्छ और ठण्डी हवाका झोंका आया हो।

साधना [भावुकतासे] तुम ठीक कहती हो मीनाक्षी। मैं जानती हूँ कलाकार कितने विचित्र होते हैं। कवि, चित्रकार, गानेवाले — कितना आनन्द आता है उनकी बातें सुननेमें! किसी भी सभामें पहुँच जायें, रौनक आ जाती है। [गम्भीरतासे] मैं भी एक कलाकारको जानती थी बम्बईमें। काफी मित्रता भी थी हमारी। सम्भव है शादी भी हो गयी होती।

मीनाक्षी सच? फिर क्या हुआ? कहाँ है वह आजकल?

साधना नहीं जानती। [आह भरकर] जाने दो इन किस्सोंको, दुःख होता है।

[चित्रकार दरवाजा खटखटाता है और अन्दर चला आता है। वह पिये हुए है। नशेमें जरा कुछ झूम-सा रहा है।]

चित्रकार [साधनाको देखकर] तुम? यहाँ?

साधना [सहर्ष, दो कदम आगे बढ़कर] और तुम? तुम कब आये बम्बईसे?

चित्रकार कोई दो-तीन महीनेसे यहाँ हूँ।

साधना क्यों, बम्बई छोड़ दिया क्या?

चित्रकार छोड़ा तो नहीं, परन्तु अब बम्बईमें मन नहीं लगता। साधना, तुम्हारे चले आनेके बाद मेरे लिए बम्बईमें क्या रखा था!

साधना   और क्या कर सकती थी मैं। जब यह मालूम हुआ कि तुम्हारी पत्नी भी है और दो बच्चे भी

[मीनाक्षी चित्रवत् खड़ी इन दोनोंकी बातें सुनती है।]

चित्रकार   मैं जानता हूँ। परन्तु यदि मैं और लोगोंकी तरह पत्नी और बच्चोंकी चिन्ता करने लगूँ तो मेरी कलाका क्या हो? कला ही तो मेरा जीवन है। वही मेरी ज़िन्दगीका आधार है।

मीनाक्षी   आप लोग बैठिए न।

चित्रकार : क्षमा करना, आज इतने दिनोंके बाद साधनासे मिला हूँ कि और सब कुछ भूल हो गया। [बैठता है, किन्तु बातें साधना से ही किये जाता है] अच्छा बताओ, तुम क्या करती रहती हो सारा दिन?

साधना   यह जानकर तुम क्या करोगे? तुम अपनी सुनाओ, तुम्हारे सब मित्र कहाँ हैं? गिरधर, ओम और रतन? क्या रतनने सीतासे शादी कर ली?

चित्रकार   तुम तो जानती हो कि कलाकारको व्याह-शादीमें कोई रुचि नहीं होती। वह तो प्रेरणा चाहता है, प्रेरणा। जहाँ उसे वह मिल जाये, वहीं दीवाना हो जाता है।

[मीनाक्षीको कुछ उपेक्षाका भान होता है। वह उन दोनोंका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहती है।]

मीनाक्षी   आप रंग और कैनवस खरीद लाये क्या? चित्र बनाना कब शुरू करेंगे?

चित्रकार   आप चिन्ता न करें, अपना वचन पूरा करूँगा। आपका

चित्र अवश्य बनाऊँगा। जैसे ही फुरसत होगी, [illegible] कैनवस ले आऊँगा।

मीनाक्षी — [जैसे आँखोंसे परदा हट गया हो] जी ?

चित्रकार — [मीनाक्षीकी बातोंपर ध्यान न देकर, साधनासे] क्या तुम यहाँ कुछ देर ठहरोगी ?

साधना — नहीं। मैं तो इनकी साड़ियाँ देने आयी थी। [लिफ़ाफ़ा आगे बढ़ाकर] यह लो, मीनाक्षी।

चित्रकार — तो चलो कहीं चलकर बैठेंगे। दो चार बातें करेंगे। कितनी खुशी हुई तुमसे यों अकस्मात् मिलकर।

[साधना अर्थपूर्ण दृष्टिसे मीनाक्षीकी ओर देखती है।]

साधना — क्षमा करना, मीनाक्षी। मैं कल फिर आऊँगी।

[साधना और चित्रकार दोनों उठकर दरवाजेकी ओर जाते हैं। चित्रकार साधनाके लिए दरवाजा खोल, उसकी कमरपर हाथ रखकर उसे आगेको बढ़ाता है। राकेश कमरेमें प्रवेश करता है और सारी स्थिति भाँप जाता है। चित्रकार और साधना मुड़कर नमस्कार करते हैं और चले जाते हैं। राकेश मीनाक्षीके पास आकर प्रेमसे उसके कन्धेपर हाथ रख देता है और फिर मुसकराते हुए फूलदानमें-से एक फूल निकालकर मीनाक्षीके बालोंमें लगाता है।]

मीनाक्षी — [उसका हाथ पकड़कर] रहने भी दो। आपको तो सदा मज़ाक़ ही सूझता है।

[दोनों प्रेमसे एक दूसरेकी ओर देखकर मुसकराते हैं।]

[परदा]

प्रीतके गीत



[बम्बईके एक प्रसिद्ध फिल्म-स्टूडियोमें निर्माताका दफ्तर—दीवारों-पर सुन्दर अभिनेत्रियोंके चित्र टँगे हैं। कोनेमें पियानो रखा है। सामने एक बढ़िया सोफा है। मेजके बायीं ओर लाल रंगका टेलीफ़ोन रखा है। दाहिनी ओरकी दीवारमें एक बहुत बड़ी शीशेकी खिड़की है जिसमें-से स्टूडियोकी सब काररवाई राकेश साहबको अपनी कुरसीपर बैठे-बैठे दिखाई देती रहती है। राकेश इन्हीं खिड़कियों-से स्टूडियोमें उपस्थित नायक-नायिकाओंको देखता है। फिर लाउडस्पीकरका स्विच खोलता है, एक स्त्री और एक पुरुषके वादानुवाद करनेकी आवाज आती है। बीच-बीचमें सितार तथा तानपूरेके स्वर ठीक करनेकी आवाज भी है। राकेशचन्द्र क्रोधित हो घण्टी बजाता है। चपरासी आता है।]

राकेश — [तीखे स्वरमें] म्यूज़िक डायरेक्टरको बुलाओ।

[चपरासी जाता है। डायरेक्टर आता है] माथुर साहब, यह क्या सुबहसे ठुन-ठुन हो रही है ? इसी तरह वक्त जाया होता रहा तो सीन कब तैयार होगा ?

माथुर — सब कुछ तैयार है, केवल एक शब्द ज़रा खटकता है, तालमें ठीक नहीं बैठता।

राकेश — कुछ ही लगा दो, क्या फर्क पड़ता है।

माथुर — ऐसे कैसे हो सकता है, गीतका सारा समतोल ही बिगड़ जायेगा।

राकेश — तो ला – ला – ला ही लगा दो।

माथुर यदि ला – ला – ला लगानेमे काम चल सकता तो मैं अब-तक काहेको अपना सिर खपाता ।

राकेश आप व्यर्थ ही समय नष्ट कर रहे हैं। मैं अभी 'बादिल तेलगानी' को टेलेफोन करता हूँ। वह आते ही ठीक शब्द जुटा देगा [टेलेफोन उठाता है। माथुरसे] तुम जाओ, दूसरे गीतोंकी रिहर्सल करवाओ।

[माथुर जाता है। राकेश टेलेफोनके नम्बर घुमाता है] उस्ताद साहब हैं ?

मैं राकेशचन्द्र बोल रहा हूँ कहाँ रहते हैं आप, इधर कई दिनसे देखा ही नही आइए न जरा हाँ, कुछ थोडा-सा काम भी है – एक गीतमें एक शब्द कुछ ठिकानेमे नही बैठता मोटर' अवश्य ' जिस समय कहिए हाजिर है – किस समय भेजूँ '' अच्छा पहुँच जायेगी अवश्य ।

[टेलेफोन रख देता है। कोई दस सेकेण्ड तक स्टूडियोमे पूर्ण शान्ति रहती है। हालाँ कि किसी भी फिल्म-स्टूडियो-के लिए यह विचित्र घटना है। फिर धमाकेके साथ दरवाजा खुलता है और एक युवती, जिसे निर्माता साहब कुछ ही दिन हुए अपनी नयी फिल्मके लिए ढूँढकर लाये हैं, अन्दर आती है और रोना शुरू कर देती है]

[उठकर उसके समीप जाते हुए] क्यो, किरण, क्या हुआ ?

आप मुझे ही गानेको क्यो विवश करते है, जब आपके पास अच्छे-अच्छे निपुण 'प्ले-बैक' (play back) गाने-वाले है।

राकेश [सहानुभूति तथा उत्साह प्रकट करते हुए] कौन-सा

ऐसा गानेवाला है जिसकी आवाज़ तुम्हारी-जैसी सुरीली हो ? तुम इतना अच्छा गाती हो, आवाज़ इतनी मधुर है कि कोयल हो, सिर्फ ज़रा-सी कसर है, वह भी ठीक हो जायेगी – फिर देखना, तुम सब नायिकाओंसे बढकर नम्बर एक न हो जाओ तो मेरा नाम राकेश नही।

किरण — [आँसू पोंछकर] परन्तु जिस तरीकेसे आपके कपूर साहब सिखाते है उस तरहसे तो मैं कभी न सीख सकूँगी तोबा ! जान खा गये एक स्वरके लिए। कहते है तालमे नही है। हजारो बार गवाया, अब भी लय ठीक नही है। नही ठीक होती तो मै क्या करूँ ? लिखनेवालेको भी तो गलती हो सकती है।

राकेश — हाँ, हाँ, क्यो नही। इस प्रकार व्यर्थ ही सतानेका कोई मतलब नहीं, ठहरिए मैं अभी बुलाता हूँ कपूरको।

[बुलानेसे पहले कपूर स्वयं ही चले आते हैं]

राकेश — [कपूरको कहनेका कुछ अवसर दिये बिना ही] क्यो जी, क्या शिकायत है आपको इनके गानेसे ?

कपूर — अभ्यासकी बहुत आवश्यकता है, स्वर और तालका ज्ञान अभी ठीक नही है। और अभ्यासके मामलेमे आप बहुत सुस्त है।

किरणलता — सुबह सात बजेसे निरन्तर गाती चली जा रही हूँ, और मालूम नही अभ्यास किसे कहते हैं। कोई मशीन तो नही हूँ ? मेरा तो गला भी खुश्क हो गया है

कपूर — करीब-करीब ठीक हो ही गया है अब तो, केवल दूसरी

लाइनमें सम नहीं ठीक आ रहा। तीसरीमें सुर तीव्रपर नहीं पहुँचता।

राकेश गीत किरणकी आवाज़के लिए होना चाहिए, किरण गीतके लिए नहीं। यदि तीसरी लाइन ठीक नहीं बैठती तो सारी लाइन ही निकाल दो।

कपूर इससे तो गीतका सारा मतलब ही जाता रहेगा।

राकेश मतलबको कौन पूछता है, श्रोता तो 'ट्यून' पर जाते हैं – 'ट्यून' पर।

कपूर यदि आपको यही विश्वास है तो फिर आप सब समझते है, मेरी क्या ज़रूरत है? गीत लिखनेवालोंकी क्या आवश्यकता है?

राकेश [गुस्सेमें] हाँ, सब जानता हूँ, गीत लिखनेवालोंको भी और सिखानेवालोंको भी। आप लोग समझते ही क्या हैं अपने-आपको? आप-जैसे मास्टरको चार-चार आनेमें खरीद सकता हूँ।

कपूर परन्तु मेरी भी तो सुनिए।

राकेश सुन लिया बहुत अब जाओ और जैसे किरण गाना चाहे वैसे ही सुरमें साज मिला दो, समझे! [किरणकी ओर देख मुसकराता है, वह उठकर जाती है, उसके पीछे-पीछे कपूर साहब चल देते हैं]

[अपने-आपसे] कैसी सुन्दर है। हँसती है तो जैसे मोती गिरते हों। एक बार यह पिक्चर बन जाये तो देखो, सब इसीके ऊपर लट्टू हुए फिरेंगे।

[चपरासी आता है और झुककर दरबारी ढगमें फ़र्शी सलाम करता है]

राकेश क्यो, क्या है ?

चपरासी साहब, एक कवि आपसे मिलना चाहते है ।

राकेश अच्छा, अच्छा ! कवि महाशयसे कह दो कि इस महीनेके लिए हमारे पास गीतोकी सामग्री काफी है, चाहे तो अगले महीने आये ।

[परन्तु कवि महाशय निर्माताओंको कुछ अच्छी तरह जानने-पहचाननेवाले मालूम होते है, क्योंकि वह आज्ञाकी प्रतीक्षा किये बिना ही अन्दर चले जाते है]

कवि [हाथ जोड प्रणाम करते हुए] धृष्टताके लिए क्षमा कीजिए साहब, परन्तु मैंने यह दो चार गीत तो लिखे ही केवल आपके लिए है ।

राकेश लेकिन कचन साहब, अभी तो हमारे पास बहुत पडे हैं ।

कचन तो मै आपसे कोई लेनेको तो नही कह रहा, मै तो केवल दिखानेको आया हूँ, आपकी अनुमति चाहता हूँ, क्योकि आपको ही इन चीज़ोकी परख है । और फिर कभी इसे किरणलता गाये तो क्या कहना !

राकेश [प्रशसासे प्रभावित होकर] कैसे गीत है आपके पास ?

कचन जैसे आप चाहे – जीवनके गीत, मरणके गीत, प्रीतके गीत, शोकके गीत, मिलनके गीत, वियोगके गीत, अंधेरी रातके गीत, चाँदनीके गीत

राकेश कचन साहब, तो इन्हे दीजिएगा किस भाव ?

कचन	आपको लेने कितने है ?
राकेश	यह तो गीतकी कीमतपर निर्भर है ?
कचन	आपसे झगडा थोडे कर सकता हूँ, चलिए छत्तीस सौ रुपया दीजिए एक दर्जनका ।
राकेश	यह तो तीन सौ रुपया एक गीतका हुआ ? कचन साहब यह तो मुनासिब नहीं ।
कचन	आप तो जानते है कितनी मेहनतमे लिखता हूँ और फिर सबसे पहले आपके पास लाता हूँ ।
राकेश	मै तो एक सौ रुपयेमे एक पाई भी बढकर नही दे सकता एक गीतके लिए । यह भी केवल आपको वैसे तो हमारे पास गीतोकी भरमार है ।
कचन	एक सौ रुपया एक गीत । आप मज़ाक करते है राकेश साहब, कदाचित् आपका यह मतलब नही ।
राकेश	नही, सच कहता हूँ, इससे अधिककी गुजाइश नही है ।
कचन	चलिए तीन हज़ार दीजिए और दर्जन पूरी ले लीजिए ।
राकेश	कह दिया बारह सौ ।
कचन	कुछ तो बढिए ।
राकेश	चलो तेरह सौ बस, अब एक पैसा ज्यादा नही ।
कचन	तीन हज़ारसे एक पाई कम न लूँगा ।
राकेश	[हँसता है] यह अच्छा सौदा रहा, आप मेरे दाता चार समझिए ।
कचन	कवि लोग भूखे मर जायेगे यदि आप ऐसी ही सस्ती बनते रहे तो ।

राकेश — भूखे ! भूखे कहाँ ? आजकल तो गीतोंका बिजनेस बहुत अच्छा है। जिसको देखो बम्बई चला आ रहा है।

कंचन — बेचने ही तो आये है, चलिए तीन हजार दीजिए आप तो हमारे अन्नदाता हैं। हमारी कहाँ गुजर हो सकती है आपके बिना।

राकेश — [चापलूसीसे कुछ फिसलकर] अच्छा चलिए – आप ही खुश रहिए पन्द्रह सौ देता हूँ। [कंचन कुछ कहने लगता है, परन्तु राकेश रोक देता है] बस बस, अब रहने दीजिए और बहस और देखिए अभी इनका किसी और कम्पनीसे जिक्र न कीजिएगा।

कंचन — यह भला कैसे हो सकता है ? आपसे वचन करके औरोंसे सौदा करूँ ? अच्छा तो दिलाइए कुछ पैसे मुझे तो अभी मकानका किराया भी देना है। [राकेश मेजका खाना खोलकर 'चेक बुक' निकालता है] जी नही, चेक देकर मुझे इनकमटैक्सके झगडेमें न डालिए चेक ही देना है तो साढे सत्रह सौ रुपयेका दीजिए।

राकेश — नकद इस समय नही है। कल ले जाना।

कंचन — खाली हाथ कैसे जाऊँ ! जितने है उतने तो दीजिए बाकी कल ले जाऊँगा।

राकेश — [जेबसे निकालकर गिनते हुए] यह लो सौ तो लो – शेष फिर।

कंचन — धन्यवाद, नमस्कार !

[कंचन जाता है। राकेश सिगरेट निकालकर सुलगाता है।

दरवाजेपर दस्तक होती है और बादिल तेलगानी, लम्बे-लम्बे पट्टे, छोटी-छोटी दाढी, दुबला-पतला शरीर, ढीला कुरता पहने मुँहमे सिगरेट लगाये, प्रवेश करते है]

राकेश — [कुरसीपर-से उठकर हाथ मिलाते हुए] आइए बादिल साहब, बहुत देरसे प्रतीक्षा कर रहा हूँ आपकी

बादिल — हाज़िर हूँ, कहिए मेरे लायक क्या खिदमत है ?

राकेश — यह गाना है एक, इसमे यह 'सूरत' शब्द नही बैठता इसको बदलना चाहता हूँ।

बादिल — इसमे क्या मुश्किल है ? अभी पाँच मिनिटके अन्दर-अन्दर हो जाता है।

राकेश — आप-जैसे गुणी पुरुषसे यही आशा है।

बादिल — शुक्रिया, मगर रुपये लगेंगे सौ !

राकेश — सौ ! एक शब्दके लिए ?

बादिल — जी हाँ।

राकेश — इतनी-सी बातके लिए सौ ! गजब करते है आप ?

बादिल — हज़रत विलायतमें डॉक्टर हैं, आँखके ऑपरेशनके पाँच हज़ारसे दस हज़ार रुपया तक ले लेते है। अब आप कहेंगे ज़रा-सी आँखका ! मेहनत तो उतनी ही पडेगी चाहे सारा गीत बदलनेको कहिए, चाहे एक लाइन, चाहे एक शब्द।

राकेश — फिर भी, सौ रुपया एक शब्दके लिए।

बादिल — मै भी तो शब्दका ऑपरेशन ही करनेवाला हूँ — हुजूर आपका दिया खाते है

राकेश	नही साहब, हमको आपसे काम, आपको हमसे काम यह लीजिए साहब [जेबमें-से पचास रुपये नकद निकालकर उसके हाथमें रखता है]

वादिल	कहाँ है गीत दीजिए [राकेश एक कागज उसके हाथमें देता है। देखकर] यह किस अनाडीने लिखा है न काफिया, न रदीफ, न सुर, न ताल' कितने पैसे दिये आपने इसके लिए ?

राकेश	वह तो समझिए उसका कुछ पहले जन्मका देना था जैसे।

वादिल	किसने बेचा यह आपके पास ?

राकेश	मैं तो उसे जानता भी नही घुडदौडपर मिला — पहली बार

वादिल	जीते हुए होंगे आप ?

राकेश	कुछ यही समझो।

वादिल	है तो यह सब हमारे अपने भाई ही, कहना अच्छा नही दिखता लेकिन घुडदौडपर हो, या कोई मुशाइरा हो, या कोई पीने-पिलानेकी महफिल हो, ऐसी जगहोपर इन गीत बेचनेवालोका एतबार नही किया जा सकता। अरे, इससे अच्छा गीत तो मेरा खानसामा लिख लेता है। यह गीत तो ऐसे नही चल सकता।

राकेश	देखिए वादिल साहब मैं पैसे दे चुका हूँ, अब और नही दे सकता इसका प्रयोग करना ही होगा आप इस शब्दको बदल दीजिए क्या मालूम यही गाना चल जाये, मेरा अपना अनुभव तो यही कहता है वह गाना जिसे हम बेटगा कहकर निकाल देना चाहते थे, बच्चे-बच्चेकी जबान-

पर ऐसा चढा कि हर गली, हर कूचे, हर सडकपर कई महीनो तक सुनाई देता रहा।

चादिल — जैसा आपका हुक्म।। गलतियाँ बताना मेरा फर्ज था, वह मैंने कह दिया। आप इसे ही ठीक कराना चाहते हैं तो यही सही। मैं इसे लिये जाता हूँ, सात बजे तक मँगवा लीजिए।

राकेश — अच्छा!

[जाता है। चपरासी एक परची लेकर आता है]

राकेश — [सोचते हुए] गगाप्रसाद! पहले तो नही सुना कभी अच्छा देखते हैं, आज कवियोका ही दिन मालूम होता है [चपरासीसे] बुलाओ उन्हें…

[एक शर्मीला-सा सीधा-सादा युवक, मामूली कपडे पहने अन्दर आता है]

राकेश — [उसे ऊपरसे नीचे तक परखते हुए] आप कविता लिखते हैं क्या?

गगाप्रसाद — जी हाँ, प्रयत्न तो करता हूँ, कुछ लिखा भी है, एक दो कवि-सम्मेलनमे भी पढी हैं, लोगोको पसन्द भी आयी, पत्रोने छापी भी। परन्तु कुछ पैसे-वैसे तो मिले नही, कविता लिखने और जीविका कमानेमे जैसे कोई जोड न हो। कुछ मित्रोने बताया कि बम्बईमें गीतोकी बडी मांग है, पैसे भी अच्छे मिल जाते हैं। इसी उद्देश्यसे यहाँ चला आया

राकेश — किस-किसके पास बेचकर आये है अपने गीत?

गगाप्रसाद सीधा आप ही के पास चला आ रहा हूँ।

राकेश देखे आपकी रचानाएँ। [गगाप्रसाद चार-पॉच गीत देता है। राकेश पढता है। प्रभावित होता है, परन्तु अपने भाव छिपाये रखनेकी कोशिश करता है] देखिए कवि महाशय, मैं आपकी कठिनाइयाँ समझता हूँ, कलाकारो-का जीवन कैसा कठिन होता है इसका भी मुझे आभास है, परन्तु जवतक यह गीत गाकर तथा वजाकर न देख लिये जायें, इनको स्वीकार करनेमें असमर्थ हूँ। वुरा न मानिए, मैं भी विवश हूँ [घण्टी वजाता है — चपरासी आता है] देखो, मायुर साहवको वुलाओ।

चपरासी [झुककर] वहुत अच्छा हुजूर।

[चपरासी जाता है]

राकेश [कविसे] मैंने अपने म्युज़िक डायरेक्टरको वुलाया है। उनको आपके गीत दिखाता हूँ। वह इस पियानोपर इन्हें वजाकर देख लेंगे। आप चाहें तो तवतक हमारा स्टूडियो देखिए, वहाँ रिहर्सल हो रही है। आपको कुछ अन्दाज़ा हो जायेगा कि हमारा फिल्म-ससार कैसे चलता है

[माथुर साहव आते हैं। पीछे-पीछे चपरासी]

राकेश हाँ, माथुर साहव, मैंने आपको वुलाया है [परिचय कराते हुए] श्री गगाप्रसादजीसे मिलिए। यह कुछ गीत लिखकर लाये है। पहली वार हमारे पास आये है। मै इन्हें निराश करना नही चाहता [गीतोंके कागज देते हुए] आप इनको वजाकर देखिए, कैसे चलते है — मै स्वय सुनूँगा' और चपरासी, [गगाप्रसादको सकेत कर] इन्हे योगेन्द्र

साहबके पास ले जाओ और कहो कि सारा स्टूडियो दिखलायें। [गंगाप्रसाद तथा चपरासी जाते हैं, माथुर गीत पढता है फिर पियानोपर बजाकर देखता है। खुशीसे उछलता है]

माथुर [उत्तेजित] बहुत अच्छा है साहब, 'जीनियस' है यह आदमी। किस खूबसूरतीसे लिखी है कविता, कैसे प्यारे-प्यारे मधुर छन्द बांधे हैं। बडी चलती हुई धुन बनेगी इसकी। यही एक गीत अच्छी तरह गाया जाये तो बस हमारी चाँदी-ही-चाँदी है। एक बार इस मनुष्यको बम्बई-की हवा लग गयी, तो फिर मुश्किल हो जायेगी

राकेश वह भी देखा जायेगा। अभी तो तुम इन सबकी नकल करके रखो। खरीदूँगा एक ही – बाकी अपनी सुविधापर इस्तेमाल करेंगे। [माथुर कुछ अचम्भित दृष्टिसे देखता है] देखते क्या हो ? यह क्या कर लेगा हमारा। कोई ऐसी-वैसी बात की तो बम्बईमें रहना असम्भव कर दूंगा इसका !

[माथुर कागज-पेन्सिल लेकर शीघ्रतासे लिखता है। राकेश शीशेकी खिडकियोंमें-से स्टूडियोकी ओर देखने जाता है। कुछ देर बाद माथुर कागज राकेशको देता है]

धन्यवाद [स्टूडियोकी ओर इशारा करके] कवि महाशय भी आ रहे हैं। देखो ज़रा सँभलकर बात करना।

[गंगाप्रसाद बडी उत्सुकतासे अन्दर आता है]

राकेश आइए, बैठिए

गंगाप्रसाद [झेंपते हुए] आपको पसन्द आया कुछ ?

राकेश हाँ, अच्छे है, परन्तु हमारे मतलबका तो एक ही दिखता है।

गगाप्रसाद बस ! केवल एक ही ?

राकेश इनमें-से तो एक ही है। आप अपनी और रचनाएँ भी लायें। उनमे-से देखेगे। सम्भव है कुछ और हमारे कामकी निकल आये।

गगाप्रसाद अवश्य लाऊँगा, आपकी कृपा है। इसका क्या देंगे आप ?

राकेश आप ही कोई उचित मूल्य बताइए।

गगाप्रसाद आप नित्य खरीदते है, आपको इन चीजोकी परख है। आप ही कहिए।

राकेश पचीस रुपये।

गगाप्रसाद [अकस्मात् चोट खाकर] पचीस ? मुझे तो कहा गया था कि एक भी गीत चल जाये तो हज़ारो रुपये मिल सकते है।

राकेश हो सकता है, परन्तु इसके नही।

गगाप्रसाद [खिन्न होकर] इतनेमे तो नही दे सकता।

राकेश [साधारणतया] जैसी आपकी इच्छा, मैंने तो सोचा था आप पहली बार हमारे पास आये है और पहली बार बम्बईमे, आपको निराश नही करना चाहिए।

गगाप्रसाद यह तो आपकी कृपा है, परन्तु पचीस रुपयेमे भी किसी-को गीत खरीदते सुना आपने ? आप तो इतने बडे सेठ है, कमसे कम पचास तो दीजिए।

राकेश मैंने तो अपनी कीमत बता दी है। आगे आप जैसा चाहे।

गगाप्रसाद तो रहने दीजिए।

[जानेको उठता है]

राकेश [कागज लोटाते हुए] यह लीजिए ।

[गंगाप्रसाद कुछ अनिश्चित भावसे दरवाजेपर रुक जाता है । एक पॉव अन्दर एक बाहर, फिर वापस आता है]

गंगाप्रसाद अच्छा पचीस ही दीजिए ।

[राकेश जेबमें-से निकालकर देता है, गंगाप्रसाद बिना कुछ कहे लेकर चला जाता है]

राकेश [माथुरसे] क्यों उस्ताद, [हाथ बढ़ाकर] लाओ हाथ मिलाओ ···कहो कैसी रही ?

[हँसता है । दोनों ख़ुशीसे हाथ मिलाते हैं]

[परदा]

रेत और सीमेण्ट
•

[समय – सन्ध्याके सात बजे। स्थान – ठीकेदारका घर। कमरा बहुत-सी बढ़िया चीज़ोंसे अटा पड़ा है, क्योंकि ठीकेदार साहबने पिछली लड़ाईमें खूब रुपया बनाया था। किन्तु इन कीमती चीज़ोंकी ढंगसे व्यवस्था नहीं की गयी है। कुछ चीज़ें ऐसी भी हैं जिनसे ठीकेदारकी कलात्मक वृत्तियोंके अभावका पता चलता है, जैसे दीवारपर टँगे फिल्मी सितारोंके चित्र या रंगदार तसवीरोंवाले कैलेण्डर इत्यादि। शारदा सोफे-पर बैठी सिलाइयाँ बुन रही है। रह-रहकर खिड़कीके बाहर सड़ककी ओर देख लेती है। कुछ देर बाद एक मोटरका हार्न सुनाई देता है। शारदा-के हाव-भावसे मालूम हो जाता है कि यह वही मोटर है, जिसकी वह प्रतीक्षा कर रही थी। बरामदेके सामने मोटर रुकती है और केशवलाल अन्दर आता है।]

शारदा — बहुत देर लगा दी आज आपने ?

केशवलाल — अब दो-चार दिन तो देर ही लगेगी। जबतक इस पुलका उद्घाटन नहीं हो जाता, सिरपर बोझ-सा लगता है। मैं चाहता हूँ कि यह काम जल्दीसे समाप्त हो, ताकि मैं निश्चिन्त होकर उधर रेलकी लाइनकी ओर ध्यान दूँ। पचास मील लम्बी लाइन बनानेका ठीका ले लिया है, वह कोई एक दिनमें थोड़े ही हो जायेगा ?

शारदा — [मुसकराकर] मैं भी तो यही चाहती हूँ कि पुलका उद्घाटन निर्विघ्न हो जाये, क्योंकि मुझे भी तो अपनी चीज़ें खरीदनी हैं। याद है न अपना वादा ? अब तो समय आ रहा है।

केशवलाल — हाँ, हाँ, याद है। क्या तुम उस वादेको भूलने दोगी ? कहो, क्या लेना है ?

शारदा — हीरेके टॉप्स और अँगूठी और उनके बीचमें एक-एक ऐमरल्ड

केशवलाल — यह काम पाम हो जाये, पैसे वसूल कर लें, तो जो मनमें आये, ले लेना। आशा तो है कि दास साहबकी कृपासे कुछ दाल-दलिया हो ही जायेगा। सच कहता हूँ कि इंजीनियर तो कई देखे, किन्तु हम ठीकेदारोंके कामका आदमी तो बस यही एक है

शारदा — क्यों न हो, क्या हमने उसके लिए कुछ कम किया है ? और कौन ठीकेदार होगा, जो इस तरह दिल खोलकर खिलाता-पिलाता हो ! जो माँगा, झटसे ले दिया, जो नहीं माँगा, वह भी दिया। अच्छा, यह तो आपने बताया ही नहीं, कि आ रहे हैं न वे लोग ?

केशवलाल — हाँ, वहींसे तो आ रहा हूँ। दासको भी तो बहुत काम करना है। पुलके उद्घाटनके लिए मिनिस्टर साहब आ रहे हैं। बडा शानदार जलसा होगा। उसके लिए सारी व्यवस्था करनी है। दासने कहा है कि खानेके लिए तो वे लोग नहीं ठहरेंगे, क्योंकि उन्हें एक-दो जगह और भी जाना है, वैसे ही शामको थोडी देरके लिए आयेंगे।

[illegible] — मैंने तो उनके लिए समोसे वगैरह बनानेका सामान मँगाकर रखा है।

[illegible] — अच्छा ही है, थोडी ह्विस्की पिला देंगे और समोसा खिला देंगे। जानती तो हो, तुम्हारे घरके बने समोसे उन्हें कितने पसन्द हैं।

शारदा तो बैरेको बुलाकर जरा समझा दूँ। नया आदमी है।

केशवलाल कैसा काम कर रहा है ?

शारदा आदमी तो चुस्त है, काम भी समझता है, लेकिन मुझे इसकी चतुराईसे कुछ शक-सा होने लगता है। कहीं किसी दिन हाथ ही न लगा जाये।

केशवलाल दो-चार दिन और देख लो, नहीं तो किसी दूसरेका प्रबन्ध कर लेंगे।

शारदा सो तो करना ही होगा।

केशवलाल देखो शारदा, एक काम करना। एक-आध ड्रिंकके बाद तुम फ्लश खेलनेका प्रस्ताव करना। वे तो कहेंगे कि समय बहुत थोड़ा है इत्यादि, पर तुम अनुरोध करना। [आँख मारकर] मैं आज दो-चार सौ रुपया हारना चाहता हूँ।

शारदा क्यों, आज फिर ?

केशवलाल हाँ, बस यह अन्तिम बार है। फिर इसकी आवश्यकता न होगी।

शारदा अच्छा।

केशवलाल यदि वे आज खेलनेके लिए राजी न हुए, तो तुम मिसेज दानको कल सवेरेके लिए पक्का कर लेना। जब आये, तो ब्रिज खेलना और कोई ढाई-तीन सौ तक हार जाना, ज्यादा नहीं। बाकी फिर सरकारसे पूरे पैसे वसूल कर लेनेके बाद देखा जायेगा।

शारदा [कुछ अप्रसन्न-सी होकर] जैसा कहो, वैसे तो मैंने आज ही वायलका थान भी भेजा है उनके यहाँ।

केशवलाल — किसके हाथ ?

शारदा — इसी बैरेके हाथ भेजा था।

केशवलाल — अभी इस बैरेको ऐसा काम मत सौंपो। नया आदमी है, न जाने कहाँ-कहाँ क्या-क्या कहता फिरे !

शारदा — अरे हाँ, इस बातका तो मुझे ध्यान ही नही आया। सौरी। अच्छा उसे समोसोंके लिए तो कह दूँ। [आवाज देती है] बैरा !

बैरा — [दूरसे] आया जी।

[बैरेका प्रवेश]

शारदा — देखो, दो-चार लोग हमसे मिलने आ रहे है। तुम छह बोतल सोडा और बर्फ ले आओ जल्दीसे। [केशवलालसे] क्यों, छह काफी होगी न ?

केशवलाल — हाँ।

शारदा — जो मटर-आलू उबले पडे है उसके समोसे तलने है। चार-छह पापड भी भून लेना। जब कहूँगी, तो ये चीज ले आना।

रा — जी हुजूर। [जाता है]

ारदा — देखो, कैसे शिष्टतापूर्वक बात करता है। देखनेमें भी साफ-सुथरा है।

[बाहर मोटर रुकनेकी आवाज आती है]

केशवलाल — वे आ गये शायद। [उठकर बाहर बरामदेकी ओर जाता है और दास तथा श्रीमती दासको लेकर आता है।]

शारदा नमस्कार ।

श्रीमती दास नमस्कार बहन शारदा । भई, वायलके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद । मुझे बेहद पसन्द है । कितनी पतली और हलकी है ।

शारदा अच्छा हुआ आपको पसन्द आ गयी ।

करुणा उसके पैसे तो बताइए, कितने है ?

[अपना हैण्डबेग खोलती है]

शारदा [उसका हाथ पकड़कर] आप बैठिए तो, पैसे कही भागे थोडे ही जाते है ।

करुणा नही, यह बात ठीक नहीं । आपने पहले भी एक-आध बार मुझे यूही बातो-बातोमे टरका दिया था ।

शारदा आप तो लज्जित कर रही है मुझे । क्या मै आपसे जरा-सी चीजके लिए पैसे लेती अच्छी दीखती हूँ ? क्या मेरा इतना भी अधिकार नही कि बच्चोके फ्रॉकोके लिए थोडी-सी वायल भी भेज सकूँ ?

करुणा आप बहुत तकलीफ करती है ।

शारदा इसमे तकलीफ कैसी ? अच्छा, आप यह बताइए कि आप पियेंगी क्या ? क्यो दास साहब, आप ?

केशवलाल [हँसकर] हम लोगोको तो पूछनेकी जरूरत नही, मिसेज़ दाससे पूछिए ।

करुणा मेरा भी आपको पता ही है । वही ताज़ा नीबू सोडेके साथ ।

शारदा [बैरेसे] पहले सोडा, बर्फ और ह्विस्की दे जाओ । फिर

दो गिलास सोडा और उसमे ताजा नीबू मिलाकर लाओ। [करुणासे] थोडी-सी चीनी तो डाल दे न ?

करुणा हाँ, मगर बिलकुल थोडी-सी।

शारदा [बैरेसे] जाओ, तुम यह ले आओ। और हरीसे कहना जरा गरम-गरम समोसे बनाये।

करुणा नही, समोसे रहने दीजिए। हमे खाना खाने बाहर जाना है।

शारदा एक-आध टुकडा ही सही। क्यो दास साहब ?

दास इस घरमे बने समोसेके लिए तो मैं कभी भी ना नही कर सकता [केशवलालसे] मिनिस्टरके आनेकी तारीख तो पक्की हो गयी है। सत्ताईसको सुबह आयेगे और अगले दिन शामको लौट जायेंगे। सिन्हाका भी तार आया है। अब तो प्रोग्राम बनाना-भर बाकी है।

करुणा शुक्र है भगवान्‌का कि यह काम समाप्त हो रहा है। काम था कि एक मुसीबत थी! जो सवेरेसे शुरु होता था, तो बस सारा दिन काम, काम, काम! न इन्हे अपनी सुध थी, न घरकी। मेरे तो नाकमे दम कर रखा था।

शवलाल सच कहती है आप, इतना काम किया है दास साहबने कि क्या कोई इजीनियर करेगा!

ास भाई, तुम्हारे सहयोगसे ही तो सब-कुछ हो सका है।

शवलाल यह तो आपकी कृपा है। हमे तो केवल काम करना था, सारी ज़िम्मेदारी तो आपकी ही थी। जिस चतुराईसे आपने इसे निभाया है, सब जानते है। इसीलिए तो काम नियत समयमे तीन महीने पहले ही समाप्त हो गया।

[बैरा चाँदीकी ट्रेमें पीनेकी चीजें लेकर आता है। करुणा और शारदा अपना-अपना गिलास उठा लेती हैं।]

दास — [ह्विस्कीकी बोतल देखकर] स्काच-क्रीम ! अरे दोस्त, यह कहाँसे मार लाये ? [गिलासमें डालते हुए] इसे तो आजकल देखना ही दुर्लभ हो गया है।

केशवलाल — [अपना गिलास भरकर] आपके लिए तो चीज अच्छी ही चाहिए।

दास — आपका तो रसूख इतना है कि न जाने कहाँ-कहाँसे कौन-कौन-सी चीज ले आते हैं।

केशवलाल — आपकी कृपासे इस नाचीज़के काम हो ही जाते हैं। कहिए, आपको भी मँगवा दें ?

दास — नेकी और पूछ-पूछ ?

केशवलाल — जितनी चाहें ! अगले हफ्ते तक आ जायें, तो ठीक है न ? एक बोतल चाहिए, तो अभी है मेरे पास।

दास — किन्तु लूँगा एक शर्तपर – पैसे अभी ले लें। मैं जानता हूँ कि पैसेके मामलेमें तुम बहुत लापरवाह हो। मेरी मोटर-के लिए जो टायर मँगवाकर दिये थे, उसके पैसे भी अभी-तक नहीं बताये।

केशवलाल — पैसेकी बात करके लज्जित न किया करें मुझे। जहाँ पैसेका सवाल आया, वहाँ मित्रता नहीं रहती। आपके हमारे सम्बन्ध ऐसे नहीं, जहाँ पाई-पाईका हिसाब करना ऐसा आवश्यक हो।

शारदा — [बैरेसे, जो अभीतक वहीं खड़ा है] देखो, तुम ये चीजें

मेजपर रख दो और कुछ खानेको ले आओ।

बैरा बहुत अच्छा हुजूर। [जाता है]

करुणा सच कहती हूँ, खानेके लिए कुछ न मंगाओ। जरा भी भूख नही है।

शारदा मुझे तो आशा थी कि आप खाना हमारे साथ ही खायेंगी।

करुणा क्या करें, लाचारी है।

शारदा तो आइए, एक-दो हाथ ताशके ही हो जाये।

करुणा फिर किसी दिन सही, अभी जरा जल्दी जाना है।

शारदा जा लेना, अभी तो आयी है आप। [घड़ी देखकर] अभी खानेको भी तो बहुत देर है।

केशवलाल और जबतक आप लोग पहुँचेगे नही, कोई खाना खायेगा नही।

करुणा अच्छा, जैसी आपकी इच्छा। लेकिन होंगे दो-चार हाथ ही, क्योंकि हमें जल्दी ही जाना होगा।

शारदा [केशवसे] जरा अलमारीसे ताश और काउण्टर तो निकालिए।

कैसा चस्का है इन स्त्रियोंको भी ताशका!

आप भी तो आइए न। दिन-भर काम करते थक गये होंगे। इससे मन कुछ बहल जायेगा।

[केशवलाल अलमारी खोलकर ताश निकालता है। सब लोग मेजके आस-पास बैठ जाते हैं। केशवलाल सबको एक एक सौ रुपयेके काउण्टर गिनकर दे देता है।]

दास पूल कितना ? कोई सीमा बांधो ।

केशवलाल आप तो जानते हैं, इस घरमे किसी चीजकी कोई सीमा नही है । जब खेलना ही दस-पन्द्रह मिनिट है, तो सीमा कैसी ?

[कुछ देर ह्विस्कीके साथ इसी प्रकारकी बात-चीत चलती रहती है । फिर ताशके पत्ते बाँटे जाते है । बैरा खानेका सामान ले आता है और मेजके आस-पास घूमकर सबको दिखाता है । इसी बहाने वह सबके पत्ते भी देख लेता है और ताशकी बाजी किस तरह चल रही है यह भी भाँप जाता है ।]

करुणा [पहली बाजी समाप्त होनेपर शारदासे] मै आपकी जगह होती, तो इस हाथपर इतना न लगाती । आखिर मामूली सत्तियोका जोडा ही तो है ।

केशवलाल मैने इसे कई बार समझाया है, पर जब यह खेलने बैठती है, तो ऐसे आवेशमें आ जाती है कि अपनी सुध-बुध ही भूल जाती है । बैरा, देखो बर्फ और लाओ ।

[बैरा जाता है । नयी बाजी शुरू होती है । सब लोग दॉव लगाते है और चाल बढती चली जाती है ।]

करुणा मेरे आठ आये ।

शारदा मेरे सोलह ।

[बैरा चुपके-से आता है और उत्सुकतासे बाजीका रुख देखता है ।]

केशवलाल मेरे बत्तीस ।

दास — यह लो, बत्तीस यह रहे।

करुणा — आप लोग तो बढ़ते ही चले जा रहे हैं, मैं तो पास। [पत्ते फेंक देती है]

शारदा — मैं भी पास। [पत्ते रख देती है]

केशवलाल — यह हाथ मुझे या तो राजा बनायेगा या रंक! यह लीजिए दास साहब, मेरे चौंसठ।

दास — [मुसकराता हुआ] तो चौंसठ मेरे भी लो। [बैरा बर्फ आगे बढ़ाता है]

केशवलाल — [बैरेसे] ठहरो जी, यहाँ घमासानका रण पड़ रहा है। दास साहब, यह रहे चौंसठ और

दास — [अपने गिलासमें ह्विस्की तथा बर्फ डालते हुए] यही बात है, तो लो भई, एक और चौंसठ और शो करो तो

[केशव पत्ते दिखाता है। पत्ते बिलकुल मामूली हैं, इतनी बड़ी चाल खेलनेके योग्य नहीं।]

दास — [अपने पैसे बटोरते हुए] अच्छा! इतना ब्लफ (झूठ) खेलते हो तुम! मैं तो डरकर पत्ते फेंकने जा रहा था।

केशवलाल — बैरा, अब लाओ ह्विस्की इधर। जरा गम-गलत करूँ। कितने बने दास साहब? बहुत बड़ा हाथ मारा आपने तो।

[illegible] — [गिनकर] दो-सौ अस्सी रुपये।

केशवलाल — हे भगवान्!

दास — सब लोग अपने-अपने काउण्टर गिनो तो। क्या ठीक है [illegible] हिसाब?

केशवलाल जी हां, और छत्तीस मिसेज दासके देने हैं। मिलाकर तीन-सौ सोलह हुए।

करुणा [कलाईपर बँधी घड़ी देखकर] है तो बहुत वृष्टता, परन्तु अब हमें चलना चाहिए।

केशवलाल चले जाइएगा। और नही खेलना चाहते, तो ताश बन्द कर देते है। दास साहब, एक ह्विस्की तो और पीजिए। बैरा, साहबको ह्विस्की दिखाओ। [फिर जेबमें-से रुपये निकाल-कर दासके हाथमे देते हुए] यह लीजिए तीन नोट। सौ-सौके है और दो दस-दसके। ताशका कर्जा तो मेजपर ही चुका देना चाहिए।

दास [अपना बटुआ निकालकर चार एक-एक रुपयेवाले नोट देता है] मिस्टर केशवलाल, आज तो आप खूब हारे।

केशवलाल अगली बार कसर निकाल लूँगा।

शारदा यह सदा हारते ही है, जीते कब है ?

करुणा यह तो आपके प्रेमकी कृपा है। क्यो ठीक है न।

[सब हँसते है। सहसा किसी मोटरके आनेकी आवाज आती है और सबके कान खड़े हो जाते हैं।]

शारदा कौन होगा, इस समय ?

करुणा आपके और मेहमान आ रहे है। हमें अब आज्ञा दीजिए। देर हो रही है। [दाससे] क्यो, चले ?

दास चलो, चलते है।

[सिन्हा साहब आते हैं।]

केशवलाल — बडी लम्बी उम्र है आपकी ! अभी-अभी हम सब आपको ही याद कर रहे थे ।

सिन्हा — क्षमा कीजिएगा, मैं यूँ ही बिना खबर किये चला आया । आपके घरके सामनेसे जा रहा था, जब दास साहबकी गाडीपर नज़र पडी, सोचा जरा इनसे भी मिल ले ।

[दाससे] उद्घाटनके लिए मिनिस्टर साहब आ रहे हैं, यह तो आपको पता होगा ही ।

दास — जी हाँ ।

सिन्हा — अब प्रोग्राम क्या बनाना है ?

केशवलाल — [सिन्हाके कन्धोपर हाथ रखकर] जरा बैठिए तो थोडी-सी ह्विस्की ?

सिन्हा — धन्यवाद, इस समय नही । मुझे बहुत जल्दी कलेक्टर साहबके पास जाना है । उनसे प्रोग्राम तय करके आप लोगोंसे बातचीत करूँगा । मिनिस्टर साहबके लिए एक पार्टी तो सरकारी होगी ही, एक पब्लिककी तरफसे भी हो जाये तो बहुत अच्छा हो !

केशवलाल — आप यह सब मेरी ओर देखकर क्यो कह रहे हैं !

सिन्हा — [कृत्रिम मुसकराहटसे] इसलिए कि यहाँकी पब्लिकमे तो सबसे माननीय आप ही हैं ।

केशवलाल — ना भैया, मेरे पास इतने पैसे नही हैं ।

सिन्हा — आप जानते हैं कि सरकारी रुपयेसे तो ऐसी पार्टियाँ हो नही सकती । जब ये बडे लोग आ टपकते हैं, तो आप सबको ही तकलीफ देनी पडती है । और करें भी क्या ?

जवतक दो-चार ठाठदार पार्टियाँ न हों, तो मिनिस्टर लोग खुश भी तो नही होते ।

केशवलाल — सच्ची वात तो यह है भाई साहव कि जव आपके मिनिस्टर पिछली वार आये थे, तो मेरा एक हजार रुपया खुल गया था । अव तो मेरे पास इतने पैसे हैं नही ।

सिन्हा — क्या कहते है मिस्टर केशवलाल ? पुलका उद्‌घाटन हुआ नही कि आप मालामाल हो जायेंगे ।

केशवलाल — जव होंगे, तो देखा जायेगा । अभी तो वडी मुश्किल है ।

सिन्हा — आपके लिए क्या मुश्किल है ?

केशवलाल — आप दास साहवसे कहिए । यदि उनका सहयोग हो, तो वहुत-सी मुश्किल आसान हो सकती है ।

दास — तुम कल सुवह किसी समय दफ्तर आओ, तो देखेंगे । कोई छोटा-मोटा ऐस्टीमेट वनाकर दे दो । पुलके खातेमें डाल देना, प्रवन्ध हो जायेगा ।

सिन्हा — वहुत अच्छा । तो मै चलूँ । [दाससे] आपसे व्योरेवार वातचीत तो कल ही होगी । [जाता है]

केशवलाल — यह लो, मिनिस्टर साहवके आनेको हमको तो चपत लग गयी !

दास — आपको चपत कैसी ? चपत तो लगनेवालोको लगेगी ।

[टेलेफोनकी घण्टी वजती है । केशवलाल उठकर सुनता है ।]

केशवलाल — कौन ? मिस्टर दास ? अच्छा ! आप थामे रखिए । [दासको इशारा करता है]

दास — [टेलेफोन पकडकर] मैं दास वोल रहा हूँ । क्या ?

कब ? कहाँसे ? दो खम्भे ! दो खम्भे ? कैसे हुआ ? अच्छा ! तो काम रोक दो मैं अभी आ रहा हूँ

[टेलेफोन पटककर रखता है और वहीं पास पड़ी कुरसी-पर बैठ जाता है। उसके मुखपर घबराहट है] केशव, शारदा, करुणा [तीनों एक साथ] क्या हुआ ?

दास	[चिन्तित स्वरमें] पुलके दो खम्भोंमें दरार पड़ गयी है। इस बातको जरा बैठकर ध्यानसे सोचना पड़ेगा। [पत्नीसे] तुम चलो, मैं जरा देरसे आऊँगा।
करुणा	क्या इसी समय पुलपर जाना पड़ेगा ?
दास	हाँ। तुम वहाँ पहुँचकर मोटर यहीं भेज देना।
करुणा	कितनी देर लगेगी ?
दास	कोई आधा घण्टा, शायद कुछ अधिक भी लग जाये।
	[करुणा जाती है। शारदा उसे मोटर तक पहुँचाने जाती है।]
केशवलाल	खम्भोंमें दरार कैसे पड़ गयी ! क्या स्थिति कुछ गम्भीर है ?
दास	तुम पूछते हो गम्भीर ? वहाँ तो सत्यानाश हो गया है ! दो खम्भे बिल्कुल दब गये हैं। दस मजदूरोंको चोट आयी है, जिनमें-से दोकी दशा शोचनीय है। अगर उनमें-से किसीको भी कुछ हो गया, तो हमारा सर्वनाश हो जायेगा।
केशवलाल	यह तो बहुत बुरा हुआ। इसका उपाय क्या होगा ?
दास	[आवेशमें] अब उपाय पूछते हो ? मैंने तुमसे कहा था कि सीमेण्टका मिश्रण ठीक रखो। तुमने ना कहा था।

जा रहा था। चाहते थे सारी उम्रकी कमाई इस एक पुलमे-मे ही निकले। और वह भी अपने ही लिए नही, अपनी सात पुश्तोंके लिए भी। माना कि कई जगहें ऐसी होती है, जहाँ सीमेण्ट थोडे अनुपातमे लगानेसे भी काम चल जाता है। परन्तु वह जगह खम्भे नही। खम्भोका तो सीमेण्टपर ही दारोमदार है। और अगर खम्भे ही पक्के न हुए, तो पुल खडा कैसे रह सकता है?

केशवलाल अव यह दुर्घटना हो गयी, तो आप भी ऊपर चढे आ रहे है। वैसे मैने तो जो-कुछ किया, सब आपकी सलाह और सहयोगसे ही।

दास जव नीव खुदवा रहे थे, तो तुम्हीने तो कहा था कि पचीस फुट गहराईकी वजाय सत्रह फुट कर दो, कौन देखता है? मिट्टी ही मे तो दव जायेगी।

केशवलाल [तमतमाते हुए] स्वय तुम्हीने तो सब-कुछ पास किया है। अव सारा दोप मेरे सिरपर मत थोपो। मैं तो जव कमाऊँगा, तव कमाऊँगा, अभीतक तो तुम्हारा ही घर भरता रहा हूँ। तुम्हारी माँगें ही पूरी नही होती। कभी पेट्रोल, कभी टायर, कभी वायलका थान और अव ह्विस्की ··

दास [दाँत पीसकर] हूँ, यह वात है।

केशवलाल जव तुम अपने वाल-वच्चोको कश्मीर भेज रहे थे, तो मुझे उनके आने-जानेके टिकिट तथा वहाँ हाउस-वोटमें रहनेकी व्यवस्था करनेको कहा था या नही?

दास झूठ मत वोलो। मैंने कहा था तुम्हें यह सब करनेको?

केशवलाल झूठ! तुम इसे झूठ कहते हो? मेरे पास रसीदें रखी है

सब ! कहो तो अभी दिखा दूं। तुम्हारी मोटरके टायर किसने खरीदे थे ? क्या यह भी झूठ है ? जहाँतक कहनेका सवाल है, मुझसे तुमने कहा या तुम्हारी पत्नीने, इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता। आजकल तो यह तरीका ही बन गया है कि अफसर लोग स्वयं कुछ नहीं कहते, उनकी स्त्रियाँ ही ढंगसे अपनी जरूरतें बता देती हैं।

दास [गुस्सेसे तमतमाते हुए] इस तरह अफसरोंसे टक्कर लेकर आज तक तो किसीने कुछ लाभ उठाया नहीं। अगर तुम सोचते हो कि इस तरह बढ़-चढ़कर बातें करनेसे तुम बच निकलोगे, तो तुम्हारी यह गलतफहमी भी जल्दी ही दूर हो जायेगी। जब इंजीनियर और ठीकेदारमें झगड़ा हो, तो जीतेगा तो इंजीनियर ही ! तीन अफसर मेरे नीचे काम करते हैं और तीन ऊपर। उन सबके हस्ताक्षर हैं सब कागजोंपर। मेरा अकेलेका कोई क्या बिगाड़ लेगा ? किन्तु तुम्हारा छुटकारा तो किसी सूरतसे नहीं होगा।

केशवलाल मैं इन धमकियोंसे डरनेवाला नहीं हूं।

दास [व्यंग्यसे] हूँ। यह बात है ! तो मेरा क्या बिगाड़ लोगे ? करके देख लो, जो मनमें आये।

केशवलाल बाबा, इस तरह लड़ने-झगड़नेसे तो कोई लाभ नहीं। दोनोंमें फूट पड़ गयी, तो दोनोंको ही नुकसान होगा। फिर डरनेकी भी क्या बात है ? कोई-न-कोई तरीका निकाल ही लेंगे, जिससे साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।

दास [शान्त भावसे] बात तो तुम ठीक कहते हो। जरा अपने किसी आदमीको टेलेफोन करके पता तो करो कि आखिर हुआ क्या है ?

[केशवलाल टेलेफोनका नम्बर घुमाता है। इतनेमें एक पुलिसका अफसर अन्दर आता है। उसके पीछे पीछे बैरा है। केशवलाल घबरा जाता है और टेलेफ़ोन रख देता है।]

पुलिस-अफ० बिना आज्ञाके अन्दर चले आनेकी क्षमा चाहता हूँ। परन्तु कर्त्तव्य कर्त्तव्य ही है, उसकी अवज्ञा तो नही कर सकता, चाहे आपको कष्ट ही देना पड़े। मुझे आदेश मिला है कि आप दोनोंको गिरफ्तार कर लिया जाये।

केशव दास गिरफ्तार? गिरफ्तार? किसलिए!

पुलिस-अफ० आप जानते ही है किसलिए।

दास नही तो।

पुलिस अफ० जो बातें आप दोनो अभी कर रहे थे, मैंने खिड़कीकी आड़मे-से सब सुन ली है। अब हमे इस बातका प्रमाण मिल गया है कि आप घूस ले-देकर क्या-क्या उपद्रव रचते रहे है। सरकारकी कितनी हानि हुई है आपके हाथो?

[दास और केशवलाल अचम्भिन-से उसकी ओर देखते रह जाते हैं]

केशवलाल [कुछ साहस बटोरकर] इन बातोमे हम नही आते। आखिर हम बच्चे तो है नही। इस तरह सुनी-सुनायी बातोंपर भी कभी कोई पकड़ा जाता है? तुम्हारे पास सबूत क्या है?

पुलिस-अफ० सबूत बहुत है। एक तो यह सामने खड़ा है, बैरा। यह तो हमारा अपना आदमी है। पिछले छह-सात दिनोंमे इसने

	सब-कुछ देख-भाल लिया है। कचहरीमें गवाहीके लिए इसे ही पेश किया जायेगा।
केशवलाल	क्या गवाही देगा यह ?
पुलिस-अफ़०	यह तो जजके सामने देखा जायेगा। अभी तो आप कृपा करके मेरे साथ चलिए। आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। आपको इसकी [हथकड़ी दिखाकर] तो जरूरत नहीं। चलिए मेरे साथ, बाहर मोटर खड़ी है।
केशवलाल	ऐसी बात है, तो हम भी देख लेंगे।
दास	मुझे तुम गिरफ्तार नहीं कर सकते, क्योंकि मैं सरकारी अफसर हूँ और मैं अपना काम कर रहा हूँ। मेरा पहला कर्त्तव्य है कि पुलके खम्भोंमें जो दरारें आयी हैं, जाकर उनका निरीक्षण करूँ। मैं कहीं भागा तो नहीं जा रहा हूँ।
पुलिस-अफ़०	पुलकी चिन्ता न कीजिए। उसकी मरम्मतकी आवश्यकता नहीं है। वह टेलेफोन तो झूठा था, सरासर। एक मजाक था, यह देखनेके लिए कि आपपर क्या असर होता है उसका।
केशवलाल	[बनावटी हँसी हँसते हुए] वाह, भई वाह! कमाल किया आपने तो सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब! अरे दोस्त, हमें तो पहलेसे ही मालूम था कि आप मजाक कर रहे हैं। तो क्या आप समझते हैं कि हम सच मान गये थे ?
पुलिस-अफ़०	जैसे भी हो, आप चलिए मेरे साथ।
केशवलाल	सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब, आप दुनियादार हैं, सब समझते हैं। माना कि हम फरिश्ते नहीं, पर आप भी तो कोई [illegible]

[illegible]

धर्मात्मा नही। आओ बैठो, थोडी ह्विस्की पियो, साथ-साथ बातें भी होंगी। बताओ क्या चाहिए आपको? [बटुआ निकालता है]

पुलिस-अफ० नही साहब, इन बातोंको छोडिए। मामला बहुत दूर तक पहुँच चुका है। अब न मेरे बसकी बात है, न आपके

दास लेकिन मैं तो ड्यूटीपर जा रहा हूँ।

पुलिस-अफ० [हथकड़ी निकालकर] आप चलेंगे या मुझे इसके लिए मजबूर करेंगे?

[दास और केशवलाल उठकर उसके साथ-साथ बाहरकी ओर जाते हैं।]

बैरा [केशवलालसे] हुजूर, मेरी दस दिनकी तनख्वाह तो देते जाइए!

[केशवलाल उसको मुक्का दिखाता हुआ बाहर जाता है। उनके चले जानेके बाद बैरा अपने-आपको सारी स्थितिका मालिक समझता है। ह्विस्कीकी बोतल उठाकर लाता है। कुछ निकालकर मजेमें पीता है।]

[परदा]

प्रोफ़ेसर साहब

[स्थान कॉलेजके अध्यापकोंका कमरा। चारों ओर दीवारोंपर तसवीरें टँगी हैं – कुछ भूतपूर्व प्रिन्सिपलोंकी और कुछ फुटबाल, क्रिकेट, हाकी आदिके विजेता खिलाड़ियोंकी। कमरेके बीचमें एक बड़ी-सी मेज है। उसके चारो ओर कुरसियाँ पड़ी हैं। एक-दो छोटी मेजें और भी हैं। जिनपर अध्यापकोंके सुभीतेके लिए टेबल-लैम्प रखे हैं। एक ओर दीवार-पर कुछ काले गाउन टँगे दिखाई देते हैं। बीचवाली मेजपर पाँव पसारे प्रोफेसर सेठ बड़े आरामसे सो रहे हैं। उनके खर्राटोंकी ध्वनिसे कमरा गूँज रहा है। इसी समय कॉलेजकी घण्टी बजती है। बाहर क्लासोंके छूटने तथा लड़के लड़कियोंकी चहल-पहलका शोर होता है। रमेशचन्द्र अन्दर आता है और प्रोफेसर सेठको सोया हुआ पाकर दबे पाँव एक ओर मेजके पास कुरसीपर बैठ जाता है। सहसा उसके हाथसे किताब गिर पड़ती है। रमेश लज्जित-सा पीछे मुड़कर प्रोफेसर सेठकी ओर देखता है। प्रोफेसर सेठ अँगड़ाई लेते हैं।]

रमेश क्षमा कीजिएगा

सेठ नहीं, कोई बात नहीं। काफी सो लिया। क्या बजा होगा ?

रमेश अभी-अभी तीसरा घण्टा शुरू हुआ है।

सेठ हूँ! अरे, तब तो बहुत सोया।

रमेश क्या अब कोई क्लास है आपका ?

सेठ क्या गनीमत है! पहले घण्टेमें बी० ए० की 'इण्डियन हिस्ट्री' थी, दूसरे घण्टेमें एम० ए० फाइनलवालोंकी और अब है

'आनम' की। पर गोली मारिए, मैं तो नही लूंगा आज कोई भी क्लास।

रमेश आपकी तबीयत तो ठीक है न ?

सेठ तबीयत बेचारी क्या करे ? जो शनिवार शामसे छह सज्जन ब्रिज खेलने बैठे है, आज सवेरे आठ बजे छोड़ा। फिर और करता भी क्या ? रजिस्ट्रार और डीन दोनों मिलकर आ धमके और उनके साथ था बम्बईका प्रोफेसर पटेल भी

रमेश वही न, जो परीक्षक नियुक्त होकर आये है ?

सेठ बिलकुल वही। ब्रिजका बहुत शौकीन है। ब्रिज न खेले, तो उसे रोटी ही हजम नही होती। रात-भर खेलता रहता है।

रमेश तो फिर काम किस समय करता होगा ?

सेठ काम-वाम तो ऐसे ही चलता है। जानते हो, लड़के यहाँ पढकर खुश नही होते और हम बहुत पढाकर खुश नही होते। तो फिर बस, मियाँ-बीबी राजी, तो क्या करेगा काजी ?

रमेश परन्तु एम० ए० की परीक्षा तो सिरपर आ गयी है। आखिर लड़के पास कैसे होगे ?

सेठ तुम चिन्ता न करो। जानते हो, परीक्षा [illegible] यही पटेल तो आयेंगे न फिर। ये अगर नही आये, तो नागपुरसे देसाईको बुलायेंगे और उसे भी [illegible], तो लखनऊसे लालको बुला लेंगे। [illegible]

यदि मैं उनके शिष्योंको पास कर सकता हूँ, तो क्या वे हमारे छात्रोंको नही करेंगे ?

रमेश [अचम्भित-सा] अच्छा ! मैं नही समझता था कि प्रोफेसरोंमें भी परस्पर ऐसा भाईचारा होता है।

सेठ तुम अभी-अभी विदेशसे आये हो। तुम क्या जानो हमारे रस्मो-रिवाज़ ? हाँ, धीरे-धीरे तुम्हे सब-कुछ पता चल जायेगा। [उठता है] चलूं ज़रा प्रिन्सिपलसे मिल आऊँ। कई दिनोंसे कोई गप-शप नही हुई है।

[खूँटीपर-से अपना गाउन उतारकर पहनता है। फिर जेबमें-से चश्मा निकालकर लगाता है और दो-चार किताबें बगलमें दबाकर चल देता है। रमेश अपने काममें लग जाता है। कोई दरवाजा खटखटाता है।]

रमेश अन्दर आ जाओ।

[दो विद्यार्थी आते हैं]

पहला क्या प्रोफेसर सेठ नही आये आज ?

रमेश वे प्रिन्सिपलसे मिलने गये है।

दूसरा तो क्या वे आज क्लास नही लेंगे ?

रमेश मेरे विचारमें तो शायद नही।

[दोनों विद्यार्थी 'धन्यवाद' कहकर हँसते हुए बाहर चले जाते हैं। रमेश फिर किताब पढने लगता है। दरवाजेपर हल्की-सी खटखट होती है।]

रमेश आ जाओ।

[एक सुन्दर युवती प्रवेश करती है]

युवती — नमस्कार।

रमेश — नमस्कार, मीरा। कहो, क्या बात है ?

मीरा — आपने जो किताब बतलायी थी न देखनेको, वह मुझे लाइब्रेरीसे नही मिल रही। इसी कारण मैंने अपना निबन्ध भी नही लिखा। मैंने सोचा कि क्लास शुरू होनेसे पहले ही आपको बता दूँ।

रमेश — कौन-सी किताब ?

मीरा — वही 'ब्रिटिश हिस्ट्री' की।

रमेश — [पास रखी किताबोंमें-से एक निकालकर देते हुए] तुम इस किताबको पढ लो। इसमे कुछ मिल जायेगा।

मीरा — [किताब लेकर] आपको कबतक चाहिए यह ?

रमेश — दो-तीन दिनमें लौटा देना।

मीरा — अच्छा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

रमेश — और कुछ ?

मीरा — जी, हाँ। एक बात समझमे नही आयी। इंग्लैण्डके बादशाह हेनरी अष्टमकी पाँचवी बीबीका जो तलाक हुआ, उसकी राजनीतिक प्रतिक्रिया क्या हुई थी ?

[illegible] — तुम्हारा प्रश्न रुचिकर है। मैं इस विषयपर [illegible] तक क्लासमे ही बातचीत करनेवाला हूँ।

[illegible] — जी, अच्छा।

रमेश — और कुछ ?

[illegible]

मीरा — जी नही। वहुत कृपा है आपकी।

[जाती है। डॉक्टर नरेन्द्र आता है।]

नरेन्द्र — [आँखें मटकाकर] अरे वाह्रे छुपे रुस्तम! क्यो, क्या वात है?

रमेश — कैसी वात? क्या हुआ?

नरेन्द्र — यह स्टाफ-रूपमें कैसी प्रेम-लीला रचाते हो?

रमेश — तुम भी क्या वात करते हो? अरे, यह तो मेरे क्लासकी एक छात्रा है। कुछ पूछने चली आयी थी।

नरेन्द्र — [मुसकराकर] वह कुछ पूछने आयी थी, या तुम कुछ पूछ रहे थे और वह जवाव दे रही थी?

[दोनों हॅसते हैं]

नरेन्द्र — जरा वचके रहना। मलहोत्राका किस्सा मालूम है न? वह भी लेवोरेटरीमे एक छात्राको ऐसे ही सवालोके जवाव वता रहा था! [हॅसता है] फिर यह तो प्रिन्सिपलकी वेटी ठहरी!

रमेश — कौन?

नरेन्द्र — अव वनते हो?

रमेश — मैं वन रहा हूँ या आप वना रहे है मुझे?

नरेन्द्र — वना नही रहा, वता रहा हूँ कि यह सुन्दर युवती प्रिन्सिपल साहवकी वेटी है।

रमेश — अच्छा। [फिर पढने लगता है] जरा यह अध्याय समाप्त कर लूँ।

नरेन्द्र — [सहृदयतासे] देखो रमेश भैया, एक बात समझ लो। बहुत मत पढा करो, आँखे कमजोर हो जायेगी।

[रमेश मुसकराता है]

नही, मै हँसी-मजाक नही कर रहा हूँ। सच कहता हूँ कि इस तरह मन मारकर परिश्रम करनेसे कुछ लाभ न होगा। मुझे यहाँ पढाते दस साल होनेको आये। मेरे अनुभवसे कुछ सीखो।

रमेश — [हँसता है और किताब बन्द कर देता है] कहिए।

नरेन्द्र — पहले-पहल मै भी इसी तरह लगनसे काम किया करता था। एक विषयपर दुनिया-भरकी पुस्तकोका अनुसन्धान करके अपना लेक्चर तैयार करना, विद्यार्थियोको जब-तब लेकर समझाने बैठ जाना। परन्तु उससे कुछ नही बना। सालाना पाँच-दस रुपये तरक्की मिल जाती थी, बस। हारकर मैने भी खेल-कूदकी ओर ध्यान देना शुरू किया। हाकी थोडी-बहुत जानता था, अतः उसीकी देख-भालका भार अपने ऊपर ले लिया। उसके बाद तो भगवान्‌की कृपा रही। इसी हाकीकी टीमकी बदौलत देश-विदेश घूम आया और जब हमारी टीम अन्तर्युनिवर्सिटी-टूर्नामेण्टस जीत गया, तो मै भी रीडर बन गया।

[उत्तेजित होकर] तो हम यहाँ करने क्या आते हैं? लडकोको हाकी सिखाने, [illegible] सिखाने तथा [illegible] तैसे पास करानेके लिए ही न? क्या [illegible] तरुणियोकी ओर यही दायित्व है? [illegible] है आप! जबतक हम [illegible]

लेगे, इन युवकोको क्या सिखायेंगे ?

नरेन्द्र [हँसकर] अरे दोस्त, इतने उत्तेजित होनेकी कोई आवश्यकता नही। शुरू-शुरूमे सभीके मनमे उत्साह होता है, दलीलें होती हैं। सोचते हैं सारी व्यवस्था ही बदल देंगे। परन्तु यह उत्साह जल्दी ही ठण्डा पड जाता है। तुम अभी युनिवर्सिटी-जीवनके कई क्षेत्रोसे अनभिज्ञ हो, इसलिए इन चीज़ोको नही समझते। मेरी बात सुनो, इस तरह केवल पढने-लिखनेसे तुम्हारा कुछ भी बननेका नही।

रमेश [नरन्द्रकी बात काटकर] पर मुझसे खाली ढोंग तो नही रचा जायेगा।

नरेन्द्र ढोग रचनेकी आवश्यकता क्या है ? चुपचाप इस लडकीसे शादी कर लो, बस ।

रमेश किस लडकीसे ?

नरन्द्र अरे वही, जो अभी तुमसे मिलकर गयी है।

रमेश [चिढकर] मैंने कहा वह मेरी क्लासकी एक छात्रा है।

नरेन्द्र पर गुस्से क्यो होते हो ? मै जानता हूँ कि वह बी० ए० मे पढती है। यह भी जानता हूँ कि वह प्रिन्सिपलकी लडकी है और उसके हाव-भाव तथा आँखोसे यह भी भाँप गया हूँ कि वह तुमसे प्रेम करती है। तभी तो कहता हूँ कि यह सम्बन्ध पक्का कर डालो। तुम तो सौभाग्यवान् हो, जो सुन्दर लडकी मिल रही है। हममे-से कई ऐसे भी है, जिन्हे ऐसी लडकियोसे व्याह करना पडा है, जो देखनेमे बहुत साधारण है। पर केवल इसलिए व्याह करना पडा कि उनके पिता या तो रजिस्ट्रार या वाइस-चान्सलर या सेनेटके

सदस्य या कोई अन्य बड़े आदमी थे।

रमेश जाइए, मुझे उल्लू बनानेकी चेष्टा मत कीजिए। क्या आप का कोई लेक्चर-वेक्चर नहीं है आज ?

नरेन्द्र लेक्चरकी भी सोच लेते हैं, पहले यह बात तो पूरी हो ले।

रमेश [व्यंग्यसे] जी, माफ कीजिए। मुझे अभी शादी नहीं करनी है।

नरेन्द्र पागल मत बनो। आखिर शादी तो तुम करोगे ही, आज नहीं, दो साल बाद सही। इससे अच्छा तो यही है कि मेरी बात मान लो और प्रिन्सिपल साहबके जामाता बन जाओ। फिर देखो, कैसे सफलताकी सीढ़ीपर दौड़ते हुए चढ़ते हो ! आज लेक्चरार, कल रीडर, परसों प्रोफेसर और फिर युनिवर्सिटियोंके परीक्षक बन जाओगे। और शायद सरकार-से छात्रवृत्ति पाकर अमरीकाकी सैर भी कर आओगे।

रमेश और शेखचिल्लीके अण्डे कब फूटेंगे ?

नरेन्द्र [खिन्न होकर] तुम तो इसे मजाक समझ रहे हो।

केवल मजाक नहीं, उपहास भी।

[गम्भीरतासे] नहीं रमेश, मैं भला तुम्हारा उपहास क्या करने लगा ? मैं तो तुम्हारे भलेकी बात कह रहा हूँ। तुम्हें यूँ काम करते देख मुझे कष्ट होता है। क्या तुम इस बातसे सहमत नहीं कि आजकल जमाना सिफारिश और जान पहचानका है, रिश्तेदारीका है।

रमेश सो तो मानता हूँ।

नरेन्द्र — तो फिर दोस्त, मेरे सुझावपर ध्यान दो। हाँ, यदि वाइस-चान्सलरकी लडकीपर नजर है या दिल्लीमे शिक्षा-मन्त्रालयमे कोई है, तो और बात है। नही तो यह अवसर अच्छा है।

[एक विद्यार्थी, अति व्याकुल-सा हाँफता हुआ अन्दर आता है]

विद्यार्थी — डॉक्टर शास्त्री है ?

रमेश — नही।

विद्यार्थी — बता सकते है आप कि इस समय वे कहाँ मिलेंगे ?

रमेश — मैंने तो उन्हें सुबहसे ही नही देखा।

विद्यार्थी — [निराश होकर] अच्छा क्षमा कीजिएगा, आपको नाहक कष्ट दिया। [जाता है]

नरेन्द्र — जरूरी काम क्या होगा, परचे देखनेको मिले होगे इसे, वही लौटाने होगे।

रमेश — लेकिन यह तो स्वय ही विद्यार्थी है।

नरेन्द्र — तो क्या हुआ ? एम० ए० में पढता है, बी० ए० या एफ० ए० के परचे तो देख ही सकता है।

रमेश — डॉक्टर शास्त्रीने दिये होगे ?

नरेन्द्र — हा, मेरा विचार तो यही है। सुना है इस साल शास्त्री साहबने कुल मिलाकर कोई दो-ढाई हजार परचे देखनेको लिये है। सब विश्वविद्यालयोंकी परीक्षाओंका समय तो लगभग एक ही होता है, इसीसे परचे सब इकट्ठे ही आ गये होगे। बीस-पचीस दिनमे स्वय तो कहाँ देख पाता,

लड़कोंमें बाँट दिये होंगे। बस!

रमेश — यह भी खूब रही। पचीस सौ पर्चे और पचीस दिन। ठीक तरहसे देखो, तो रोजाना बीस-पचीससे अधिक कोई नहीं देख सकता।

नरेन्द्र — मेरा तो इसपर ही सिर चकराने लगता है।

रमेश — मैं सोचता हूँ कि बेचारे विद्यार्थियोंका क्या हाल होता होगा, जो दिन-रात सिर मारकर परिश्रम करते हैं। फिर इन लड़कोंके मनमें प्रोफेसरोंके लिए कितना आदर-सम्मान रह जायेगा?

नरेन्द्र — क्यों, वे तो खुश होते हैं कि प्रोफेसर साहबने उन्हें अपने विश्वासका पात्र समझा।

रमेश — प्रोफेसरके विश्वासपात्र वे भले ही बन जायें, परन्तु आजकी शिक्षा-प्रणालीके लिए इनके मनमें क्या श्रद्धा या आदर हो सकता है?

नरेन्द्र — ऐसी श्रद्धा थी कब, जिसके उठ जानेका अब सवाल हो! लड़कोंके मजाक नहीं सुने कभी? कहते हैं परीक्षा तो एक लॉटरी है, जिसमें भाग्यका निर्णय होता है। परीक्षक साहबके मूडपर ही तो सब-कुछ निर्भर करता है। प्रसन्न होंगे, तो पास कर देंगे, अप्रसन्न हुए तो फेल!

[illegible] — भई कमालके लोग हैं, मेरी तो बुद्धि [illegible]

[शास्त्री साहब पान चबाते हुए अन्दर आते हैं]

[illegible] — कहो, क्या खबर है?

नरेन्द्र — आपको एक [illegible] था अभी।

शास्त्री — कौन-सा लडका ?

नरेन्द्र — एम० ए० का छात्र है, नाम तो नही याद आ रहा इस समय

शास्त्री — शक्ल-सूरत कैसी है ?

नरेन्द्र — वही लम्बा सा, दुबला-पतला, जो काली ऐनक पहने रहता है। बहुत घबराया हुआ-सा नज़र आता था।

शास्त्री — अखिल तो नही ?

नरेन्द्र — हाँ, वही।

शास्त्री — आप कहते है घबराया हुआ था ?

रमेश — जी।

शास्त्री — कुछ बताया नही, क्या काम था ?

नरेन्द्र — कहा तो कुछ नही, परन्तु बहुत व्याकुल दिखाई देता था।

[शास्त्री कुछ सोचने लगता है। इतनेमें अखिलेश झाँककर भीतर देखता है।]

नरेन्द्र — यह लीजिए, आ गया।

[अखिलेश आता है]

शास्त्री — क्यो, क्या हुआ है ?

अखिलेश — [गिड़गिड़ाते हुए] क्षमा कीजिए प्रोफेसर साहब, मै बहुत शर्मिन्दा हूँ। कैसे समझाऊँ, आप क्या कहेंगे

शास्त्री — [क्रुद्ध होकर] कुछ कहोगे भी नही

अखिलेश — कल रात मैने पचास परचे देखकर रखे थे। आज सवेरे उन सबको बण्डलमें बाँधकर आपको लौटानेके लिए ला

प्रोफेसर साहब

रहा था। बसमें बड़ी भीड़ थी। जैसे ही मैं उतरा कि किसीने मेरी बगलमें-से बण्डलका बण्डल छीन लिया। मैंने बहुत शोर मचाया, किन्तु चोरका कुछ पता नहीं लगा।

शास्त्री तुमने बस-कण्डक्टरसे क्यों नहीं कहा ?

अखिलेश बहुत कहा, परन्तु वे लोग सुनते कहाँ हैं ? कहने लगे, यदि हम हर एक सवारीके झगड़ोंका निपटारा करें, तब तो बस चल ही न पाये।

शास्त्री [तमतमाते हुए] हूँ ! तो तुमने किया क्या ?

अखिलेश पुलिसमें रिपोर्ट लिखवा दी है, साहब !

शास्त्री [गरजकर] पुलिसमें रिपोर्ट ! उल्लू कहींका। मुझे क्यों नहीं बताया ? क्या मैं मर गया था, जो थाने जाकर रिपोर्ट लिखवा आये ?

अखिलेश [गिड़गिड़ाकर] पहले आपको ढूँढ़ता हुआ यहीं आया था, प्रोफेसर साहब ! पहले घण्टेमें आप नहीं थे, [illegible] दूसरेमें आते होंगे। दूसरेमें भी आपको नहीं देखा, तो भागा-भागा आपके घर गया। वहाँ भी आप नहीं मिले। मैंने सोचा, जितनी देर होती जायगी, मामला और भी चौपट होता जायेगा, इसीलिए पुलिसमें [illegible]।

[illegible] [तुनककर] पर पुलिसमें क्या [illegible], [illegible] होना है ? तुम्हारी अक्ल कहाँ है ?

[illegible] [रुआँसा होकर] तो मैं [illegible] !

[illegible] [क्रोधित होकर] [illegible] कि तुम इतने [illegible] हो, [illegible] दिखाता। अब भी [illegible]।

बातका बतगड बना दिया। चलो, अब मेरे साथ। कौन-से थानेमें रिपोर्ट की है ?

अखिलेश — [धीरेसे] माल रोडके थानेमें।

शास्त्री — वहाँका थानेदार कौन है ?

[बड़बड़ाता हुआ अखिलेशको साथ लिये कमरेके बाहर चला जाता है।]

रमेश — वैसे तो अच्छा ही हुआ। शास्त्री साहब फँसें, तो ज़रा स्वाद आ जाये।

नरेन्द्र — लेकिन फँसेगा नहीं, बड़ा घाघ है। सबके साथ बनाकर रखी है। पुलिस-थानेमें भी कोई-न-कोई अपना शिष्य ही निकल आयेगा और प्रोफेसर साहब छा जायेंगे उसपर। बस, फिर क्या, रपट-वपट शीघ्र ही खारिज करवा देंगे।

रमेश — लेकिन परचे तो अब मिलनेसे रहे।

नरेन्द्र — ऐसी बातें तो होती ही रहती हैं। बहुत हुआ, तो दो-चार दिन अखबारोंमें ले-दे होगी। फिर मामला ठप्प हो जायेगा।

रमेश — और जो अखिलेशकी छात्रवृत्ति बन्द करवा देनेकी धमकी देता था

नरेन्द्र — क्या जाने क्या होगा उसका ?

रमेश — अगर उनकी छात्रवृत्ति बन्द हो गयी, तो मैं प्रिन्सिपलको रिपोर्ट कर दूँगा।

नरेन्द्र — न, न ! तुम काहेको इस झगड़ेमें पड़ोगे ?

रमेश — परन्तु यह तो घोर अन्याय होगा।

नरेन्द्र — न्याय-अन्यायकी अपनी-अपनी व्याख्या है। जिसे तुम अन्याय

समझते हो, सम्भव है, वह उनकी दृष्टिमें [illegible] हो। और फिर तुम्हारा इस मामलेमें पड़ना उचित न होगा।

रमेश — यही हाल है, तो मैं कॉलेजकी नौकरी छोड़ कोई और काम कर लूँगा। दाल-रोटी ही तो चाहिए, सो कहीं न कहीं मिल ही जायेगी। पर ऐसे वातावरणमें तो मेरा दम घुटता है।

नरेन्द्र — अरे मियाँ, जहाँ भी जाओगे, वातावरण तो आजकल ऐसा ही मिलेगा। जमानेकी हवा ही बिगड़ी हुई है। सरकारी नौकरी क्या, व्यापार क्या, कारखाने क्या, सब जगह यही हाल है। दयानतदारीको कोई नहीं पूछता। [कॉलेजकी घण्टी बजती है]

यह लो, जाओ, अब अपना क्लास लो। भूल जाओ इन बातोंको। सब ओर देख सुनकर यही मालूम पड़ता है कि नौकरी फिर भी अच्छी है।

रमेश — [किताबें उठाकर] अच्छा भाई, जाता हूँ।

[दरवाजेकी ओर बढ़ता है। सामनेसे एक लड़का [illegible] बण्डल उठाये आता है।]

लड़का — नमस्कार, प्रोफेसर साहब!

रमेश — क्या है?

लड़का — क्षमा कीजियेगा, डॉक्टर शास्त्रीने [illegible]

रमेश — [व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट [illegible]] [illegible]

आने गये हैं [illegible]

[जाता है। लड़का [illegible]]

घर आयी लक्ष्मी

•

[मेहता साहबके बैठनेका कमरा। बढ़िया हरे रंगका सोफा सेट, लाल फूलदार ईरानी क़ालीन, गहरे ब्राउन रंगका रेडियोग्राम, दीवारोंपर दो-चार पेण्टिङ्ग्स, तथा गान्धीजीका चित्र। हर चीज अपनी-अपनी जगह सजी हुई। एक कोनेमें काम करनेकी बड़ी मेज रखी है जिसपर टेलेफ़ोन रीडिङ्-लैम्प, कुछ फाइलें इत्यादि हैं। कमरेको देखकर कुछ ऐसा लगता है, मानो सारी चीजें यथा-तथा इकट्ठी की गयी हैं। मेहता साहब बैठे फाइलें देख रहे हैं। तभी बाहरके दरवाजेकी घण्टीकी आवाज आती है। मेहता साहब जरा चौंककर सिर उठाते हैं।]

[भीमसेन आता है]

भीमसेन — साहब, आपसे कोई मिलना चाहता है।

मेहता — इस समय? कौन है?

भीमसेन — नाम तो बताया नहीं।

मेहता — तुमने पूछा भी था?

भीमसेन — जी हाँ, कहने लगे, नाम बतानेकी जरूरत नहीं।

मेहता — [कुछ रहस्यमय भावसे] पहले देखा है उसे यहाँ कभी?

भीमसेन — याद तो नहीं पड़ता।

मेहता — कपड़े कैसे पहने है?

भीमसेन — अँधेरेमें खड़े थे, कुछ ठीक दिखाई नहीं दिया। शायद खद्दरकी टोपी तो थी।

मेहता — [विस्मित-सा] शहरकी टोपी ! तुमने [illegible] मैं घरमें हूँ ?

भीमसेन — मैंने कहा, देखता हूँ।

मेहता — ठीक किया [स्वयं उठकर खिड़कीकी ओरसे बाहर झाँकता है और उंगलीसे संकेत करता है।]

भीमसेन — [पास जाकर झाँकते हुए] जी मालूम तो नहीं होता है, मगर पहले तो एक आदमी था, अब दो हो गये।

मेहता — क्या यह इसी टैक्सीसे उतरा ? [फिर आप ही] पर तुम क्या जानो – तुमने तो दरवाजेपर ही देखा। [जरा सोचकर] अच्छा बुलाओ। [भीमसेन दरवाजे तक पहुँचता है] और देखो, जरा मेम साहबको इधर भेजते जाना।

[जाकर जाता है। मेम साहब आती है]

शोभा — क्यों अभी काम खत्म नहीं हुआ ? [illegible] है, जबसे यह नया पद सम्हाला है कितना काम बढ़ गया है।

मेहता — हाँ, अब देखो न, यह [illegible] आया है। कोई [illegible] रहा है, मिलना चाहता है, लेकिन [illegible] [सिरपर हाथ रखकर] लगता है [illegible] भी है। तुम जरा [illegible] नहीं है, [illegible] मिल [illegible]।

शोभा — [illegible] देखती हूँ।

[जाती है, मेहता बेचैन सा [illegible] मानो आगन्तुकके बारेमें [illegible]

[illegible]

हो। फिर कागज इकट्ठे करके मेजकी दराजोंमें डालता है। शोभा लौट कर आती है]

शोभा वह साहब कहते है कि जिस कामसे आपके पास आये है उसका दफ्तरसे कोई सम्बन्ध नही। बस दो मिनिटके लिए मिलना चाहते है।

मेहता [उसी रहस्यमय भावसे] क्या अकेला है?

शोभा हां।

महता अच्छा आने दो, मगर इसके बाद कोई भी आये तो कह दो कि मै नही मिल सकता।

शोभा बहुत अच्छा।

[जाती है। एक अधेड़ व्यक्ति प्रवेश करता है। चाल-ढाल, कपड़ो आदिसे लगता है कोई आधुनिक ढगका अच्छा, खाता-पीता 'बिजनेस मैन' है]

महता कहिए?

छोटूभाई देखिए साहब, मै बडा सीधा-सादा आदमी हूँ। मुझे छल-बल नही आता। आपसे भी सीधी बात करता हूं।

मेहता कहिए, कहिए।

छोटूभाई मै 'मोहनभाई छोटूभाई' फर्मका एक हिस्सेदार हूँ। हमारा एक 'केस' आपके पास आया है। मै उसीके बारेमे आपकी राय लेना चहता हूं।

मेहता [जरा तनकर] उसमें राय क्या लेना है आपको? जैसे और मामलोंका निर्णय किया जाता है वैसे ही, बारी आने-पर इसका भी फैसला हो जायेगा [छोटूभाईकी ओर जरा

तीखी नजर तथा गम्भीर दृष्टिसे देखते हुए] हूँ ! तो आप मुझे प्रभावित करने आये हैं ? निकल जाइए यहाँसे अभी ' एकदम ! [छोटूभाई कुछ कहनेको उद्यत होता है, परन्तु मेहता साहब मौका ही नहीं देते] क्या समझते हैं आप, मैं अपना धर्म बेच डालूँगा ? आपको मालूम होना चाहिए सरकारने मुझे एक भारी उत्तरदायित्व सौंप रखा है।

छोटूभाई — क्षमा कीजिए, मुझे पहले ही बता देना चाहिए था आपको कि मुझे सत्यप्रकाशजीने आपके पास भेजा है और उन्होंने यह भी कह देनेको कहा था कि [धीरेसे] 'खान साहब पीपलके पेडके नीचे सो रहे हैं' [मेहताका चेहरा खिल उठता है जैसे किसी गुप्त भाषाके समझ जानेपर संकोच दूर हो गया हो]

मेहता — अरे वाह, आपने भी कमाल किया ! पहले क्यो नही कहा ? सत्यप्रकाश तो हमारे मित्र हैं। [अपने पास सोफेपर बैठनेका इशारा करते हुए] आइए न, यहाँ बैठिए। [सिगरेटका डिब्बा छोटूभाईके सामने रखते हैं] क्या पीजिएगा ? थोडी-सी ह्विस्की मँगवाऊँ ?

छोटूभाई — [सिगरेट लेते हुए] धन्यवाद, नही इस समय ह्विस्की नही, फिर कभी सही। अब तो मिलते ही रहेंगे।

मेहता — हाँ, हाँ, क्यो नही। मैं जानता हूँ सारा केस। अपनी ओरसे पूरा प्रयत्न करूँगा। किन्तु आप तो जानते है मुझे इसके लिए बहुत-कुछ करना होगा। हाँ, कई लोगोंसे मिलना होगा। ऊपरसे नीचे तक पूरा-पूरा प्रबन्ध करना पडेगा। आपके मित्रने आपको बताया ही होगा।

छोटूभाई — जी हाँ, उसके लिए मैं यह पांच हजारका चेक लाया हूँ आपके भाईके नाम ।

मेहता — नही साहब, चेकसे काम नही चलेगा, कॅश चाहिए ।

छोटूभाई — [जेबमे एक मोटा-सा लिफाफा निकालकर] वह भी हाजिर है ।

मेहता — [मुसकराकर] क्षमा कीजिए, ऐसे मामलेमे तो नकद चांदी या सोना ही

छोटूभाई — वह भी है, अभी लाया ।

[जाता है । शोभा मुसकराती हुई आती है]

शोभा — [सिर हिलाकर] कितने हैं ?

मेहता — क्या ?

शोभा — मैंने दरवाज़ेकी ओटसे सब सुन लिया है । अब तो मुझे कगन ले ही देने पड़ेंगे । कहो, कल चलोगे न बाज़ार ?

मेहता — ज़रा धीरज रखो, ऐसी भी क्या जल्दी !

शोभा — देखो, ऐसा पैसा घरमें नही रखना चाहिए । जितनी जल्दी हो

मेहता — [बाहर आहट पाकर] अच्छा, अभी तो अन्दर जाओ, वह आ रहा है ।

[शोभा जाती है, छोटूभाई रुपयोंकी थैली लाकर मेजपर रख देते है]

छोटूभाई — तो, अब आज्ञा है मुझे ?

मेहता — [उठकर उसके साथ दरवाजे तक जाते हुए] मैं आपको

बता दूँगा मामलेका हाल। भगवान्ने चाहा तो सब ठीक हो जायेगा [छोटूभाईके मनका भाव समझकर] नहीं मुझे टेलेफोन करनेकी जरूरत नहीं। कोई विशेष काम हो तो इसी समय आ जाइए या मैं सवेरे घूमने जाता हूँ तो, कभी आप भी निकल आइए, रास्तेमें भेंट हो जायेगी।

छोटूभाई समझ गया। ऐसे ही करूँगा। अच्छा, धन्यवाद! नमस्कार!

[जाता है, शोभा आती है और सीधी रुपयोंकी थैलीके पास जाकर उसे टटोलती है, रुपयोंकी आवाज होती है, फिर, थैली खोल, दो-चार रुपये निकालकर उन्हें बजाकर देखती है]

मेहता धीरे, कोई सुन लेगा तो क्या सोचेगा!

[कमल आता है]

कमल [थैलीको देखकर अचरजके साथ] मैं भी तो कहूँ, इस समय यह रुपयोंकी खनक कहाँसे आ रही है! [कुछ रुपये मुट्ठीमें भरकर] पापा, अब तो मेरी मोटर-साइकिल पक्की है न?

हता अरे ज़रा तो धीरजसे काम लो, उसे सीढ़ियोंके नीचे तो उतर लेने दो!

मल [रुपयोंसे खेलता हुआ] वह तो चला गया, कबका।

मा हाँ सच, ऐसे भागा जैसे उसे सन्देह हो कि कहीं आप अपना मन न बदल दें।

कमल [अचानक एक-एक रुपयेको देखने लगता है] एक ही

सन्के इतने इकट्ठे रुपये पहले कभी नही देखे थे। यह तो सबके सब ही १९१२ के मालूम होते है।

मेहता [उछलकर] क्या कहा? एक ही सन्के है [पास जाकर स्वय परखता है] सबके सब! [घबराकर] इसमे अवश्य कोई भेद है। यह तो जान-बूझकर मुझे फँसानेको जाल रचा गया है। [जल्दीसे खिडकीके पास जाकर झाँकता है मोटरके स्टार्ट होनेकी आवाज] लो वह गया अब समझो मुसीबत आयी।

शोभा आप व्यर्थ घबरा रहे है।

मेहता [चिन्तित] नही, तुम नही समझती इन चालोको! ये लोग बडे बदमाश होते है, बडी-बडी चालाकियाँ करते है, नोटोपर निशान लगाकर दे जाते है। और ये एक सालके इतने रुपये! यह बिना किसी विशेष अभिप्रायके नही हो सकते। अब करूँ तो क्या! यह तो जरूर कोई जाल है। वक्त क्या है कमल? [बेचैनीमे चक्कर लगाता है]

कमल ग्यारह बजनेको है।

मेहता [अधीर होकर] फेकूँ इन मनहूस रुपयोको?

शोभा कोयलेकी बोरीमे डाल दो।

मेहता ऊँह? कैसी भोली बाते करती हो! ऐसे अवसरपर पुलिसवाले ट्रक नही खोलते, सीधे कोयलेकी बोरी, आटेका टीन, मैले कपडोका थैला, बाथरूम ही देखते है।

शोभा तो इधर लाओ, दरियो, चद्दरोके ट्रकमे रख देती हूँ।

मेहता और तलाशी ली गयी तो सब पिछला भण्डा भी फूटवाना!

शोभा तो घनश्यामके घर भेज दो।

मेहता	लेकर कौन जायेगा ? देखते ही उसे सन्देह भी तो होगा। और कहीं हरिश्चन्द्र बनकर आप ही पुलिसको
शोभा	ऐसा कैसे हो सकता है, आपका इतना मित्र है वह।
कमल	माँ, पिताजी ठीक कहते हैं, रुपयोंके मामलेमें दोस्तपर भी भरोसा नहीं किया जा सकता।
मेहता	मुझे तो एक तरीक़ा ही सूझता है—सामने समुद्रमें फिकवा दो इन रुपयोंको।
शोभा	[बात काटकर] वाह ! घर आयी लक्ष्मीका ऐसा अनादर ? तुम रहने दो, मैं सँभाल लूँगी।
मेहता	[चिढ़कर] मुझे जेल भिजवाओगी ?
कमल	माँ, पापाका विचार ठीक है। इन्हें फेंक ही देना चाहिए।
मेहता	कौन जायेगा फेंकने ?
शोभा	तुम, और कौन ?
मेहता	नहीं, मैं तो पकड़ जाऊँगा – रँगे हाथों [पसीना पोंछता है। शोभासे] तुम जाओ, टैक्सी ले लो
शोभा	मैं कैसे जा सकती हूँ अकेली इस समय ? टैक्सी-ड्राइवर ही मार डाले तो ? कमल, तुम जाओ।
[illegible]	मुझे तो सीधा थानेमें भेज देंगे वे ! पूछेंगे, तुम्हारे पास इतने रुपये कहाँसे आये ? और बस सारा भेद खुल जायेगा। मैं कहता हूँ भीमसेनको भेजो।
	तुम समझते हो भीमसेन रुपये समुद्रमें फेंकेगा ? ऐसा बेवकूफ़ नहीं है वह। रुपये लेकर चम्पत न हो जाये तो मेरा नाम शोभा नहीं।

मेहता	चम्पत हो जाये, यही तो हम चाहते हैं। लेकिन मुझे डर है कि वह यही कही किसी ताडीवालेके यहाँ पहुँच जायेगा और पी-पीकर बकेगा ! [माथेका पसीना पोंछता है] हे भगवान् !

शोभा	[खीझकर] तो तुम ऐसे काम करते ही क्यो हो ?

मेहता	[गुस्सेमे] तुम्हारे मुँहसे तो यह बात नही सोहती। तुम्ही तो सवेरेसे शाम तक ताने दिया करती थी कि रोशनने अपना घर बना लिया, सूरजने लडकेको विलायत भेज दिया, कान्ताने बिटियाके ब्याहमे दस हजार नकद दिया

[टेलेफोनकी घण्टी बजती है, तीनोंके मुँह पीले पड जाते है, डरके मारे सब एक-दूसरेकी ओर देखते हैं]

मेहता	[शोभासे] पूछो जरा कौन है ?

शोभा	[पीछे हटकर] भई, मुझे तो लगता है डर

मेहता	तुम उठाओ, कमल ।

कमल	लेकिन पिताजी कोई ऐसी-वैसी बात हुई तो मैं तो समझ भी न पाऊँगा क्या कहूँ ?

मेहता	निकम्मे हो तुम सब [कॉपते हाथोंसे टेलेफोन उठाता है] हॅलो कौन है जी नही, यह अस्पताल नही है आपको गलत नम्बर मिला [रिसीवर रखता है। शोभा और कमल सॉस लेते है, परन्तु मेहता साहब अब भी चिन्तित है।]

शोभा	मेरा तो खयाल है आप यो ही घबरा रहे है ।

मेहता	सम्भव है उन्होंने यह टेलेफोन केवल यही पता करनेके

लिए किया हो कि मै घरपर हूँ या नही [एक नयी चिन्ता जागती है, कमलसे] थैली बन्द करो और छिपा दो इस बलाको कही। मुझे तो लगता है कि अब पुलिस आयी कि आयी।

[सहसा कोई बाहरका दरवाजा खटखटाता है। सबके चेहरे फक् पड जाते हैं]

मेहता जल्दी करो देखते क्या हो। डालो इसे सोफेके नीचे देखो सँभालके, धीरेसे शोर नही [कमरेके दरवाजेके बाहर निकल जाता है]

शोभा [हाथ जोडकर] हे भगवान्, अबकी क्षमा करो। फिर ऐसा कभी न होगा।

[बाहरका दरवाजा खुलनेकी आवाज आती है। माँ बेटे कान लगाकर सुनते है]

आगन्तुक श्री नारियलवालाका फ्लैट यही है?

मेहता जी नही, ऊपर है, तीसरे तल्लेपर।

आगन्तुक क्षमा कीजिए, आपको कष्ट हुआ।

`६ . [भर्रायी आवाजमे] कोई बात नही।

[दरवाजा बन्द होनेकी आवाज]

। [कमलसे] मै कहती हूँ यह ऐसे ही घबरा रहे है।

ता। [अन्दर आकर] मालूम होता है कोई सादे कपडामे सी० आई० डी० का आदमी था। नारियलवालाका बहाना लेकर आया था। वह तो वह नीचे ही पड सकता था कि

नारियलवाला किस नम्बरके फ्लैटमे रहता है। [आह भरकर] जाने किस मनहूस घडीमे उस आदमीका मुँह देखा था ! [दॉत पीसकर] कम्वख्त मिले तो नोच डालूँ ! वडा आया सत्यप्रकाशका नाम लेकर ! लेकिन उसे हमारी संकेत-भाषाका कहाँसे पता चला ? [जरा शान्त होकर] हो सकता है मै यो ही घवरा रहा हूँ। [अपने-आपको जरा तसल्ली देता है, इतनेमे फिर कोई दरवाजा खटखटाता है। मेहताके हवाश उड़ जाते हैं। शोभासे] अव तो सचमुच वही होगे, जाओ तुम दूसरे कमरेमे हे भगवन् ! [जाता है, दरवाजा खोलता है]

मेहता [दूरसे गुस्सेमें] हाँ, आप ! अव फिर क्या करने आये हैं ? कौन है ? वाहर मोटरमे कौन है ?

छोटूभाई क्षमा कीजिए, मुझसे वहुत भारी भूल हुई। अन्दर चलिए मै सव वतला दूँ। [दोनों परेशान-से अन्दर जाते हैं] वात असलमे यो हुई कि जव रुपये गिनकर थैलीमे डाले तो सव एकमे नही आते थे। इसलिए पाँच-सौ दूसरी थैलीमें डाल लिये थे। उस समय जल्दीमे वह दूसरी थैली आपको देना भूल गया था, यह लीजिए।

मेहता भाग जाओ रुपयोका वच्चा।

छोटूभाई क्षमा कीजिए सा'व सुनिए तो ! सा'व

मेहता तुम मेहरवानी करो और यह सव उठाकर ले जाओ।

छोटूभाई [हाथ जोड़कर मिन्नत करते हुए] नही साहव, इतनी-सी भूलके लिए मुझपर इतना गुस्सा न कीजिए। सच कहता हूँ मैने धोखा देनेके विचारसे ऐसा नही किया।

मेहता [उसकी कुछ न सुनते और अपनी ही कहे जाते हुए] तुम यह रुपये उठाओ, जल्दी करो, मुझसे जो होगा तुम्हारे लिए कर दूँगा मगर ये अपने रुपये लेकर दूर हो जाओ, आँखोंसे ।

[छोटूभाई भौंचक्का सा होकर इधर-उधर देखता है]

मेहता मैं कहता हूँ जाओ, जल्दी [रुपयोंका थैला जबरदस्ती उसके हाथोंमें ठूँसकर] जाओ, भगवान्के लिए जाओ जाओ ।

[मेहता उसे रुपयोंसहित दरवाजेके बाहर ढकेल देता है ।]

[परदा]

प्रीति-भोज

०

[सदानन्द परिवारसहित खानेवाले कमरेमें बैठे नाश्ता कर रहे हैं। छुरी काँटेके चलनेकी आवाज आ रही है। समोसेकी खुशबूसे कमरा महक रहा है।]

कमला [सदानन्दसे] समोसे और चाहिए ?

सदानन्द मिल जाये तो क्या कहने !

पपू मैं भी समोसे लूँगी।

कमला तू पहले दूध तो पी।

धर्मदेव आज तो छुट्टी है, हम भी और खायेंगे।

कमला [चिढ़कर] जो लोग शामको खानेपर आ रहे हैं, उनकी भी फिक्र है या समोसे ही बनते रहेंगे ? [टेलेफोनकी घण्टी बजती है] कान्ति, जरा देखना।

[कान्ति कोनेमें रखी मेजपर-से टेलेफोन उठाकर सुनती है।]

कान्ति पिताजी, आपको सहगल साहब बुला रहे हैं।

कमला अब सवेरे-सवेरे सहगल साहब क्या खबर देने लगे। अपने साथ कोई मेहमान ला रहे होंगे।

सदानन्द सुनने तो दो। कितनी जल्दी घबरा जाती हो ! [उठकर टेलेफोन सुनता है]।

कमला पपू, चलो जल्दी करो, चटसे दूध पी जाओ। [प्याला पकड़कर पपूके मुँहसे लगाती है।]

पप्पू [रोना मुँह बनाकर] मै नही पीऊँगी, इसमे मलाई है।

कमला चल, पी भी ले। मुझे और भी बहुत-से काम करने है।

सदानन्द [लौटते हुए] सहगल कह रहे है कि वह नही आ सकेगे।

कमला यह सदा ही कुछ न-कुछ गडबड करते है।

सदानन्द इसमे गडबड क्या है ? दो आदमियोके न आनेसे कौन-सा ऐसा खेल है जो खराब हो जायेगा ?

कमला खेल तो है हो। आज नही आयेगे, तो दो दिन बाद फिर बुलाना पडेगा। मै तो सोचती थी कि एक ही बार सब निबट जाते।

सदानन्द निबटाना ही है, तो और बहुत है।

कमला और कौन ?

सदानन्द भाटियाको बुलाओ।

कमला विचार तो अच्छा है, परन्तु

सदानन्द [बात काटकर] परन्तु क्या

कमला उनको वापस पहुँचाना पडेगा।

सदानन्द क्यो ?

कान्ति उनकी मोटर कारखानेमे पडी है।

तो रहने दो उनको। रातको ग्यारह बजे उन्हे लोदी रोड छोडने कौन जायेगा।

तो, माँ, सहदेव और गार्गीको भी बुला लो। वे भाटियाको वापस पहुँचा सकते है।

[खुश होकर] ठीक, बहुत ठीक। खूब रौनक रहेगी।

[सदानन्दसे] देखो, कान्तिने कितनी अच्छी सलाह दी।

सदानन्द — [मुसकराकर] लेकिन उसका आना ठीक नहीं होगा।

कमला — क्यों ?

सदानन्द — वह इस पार्टीमें ठीक जँचेगा नहीं।

कमला — क्यों ?

सदानन्द — और मेहमान सब सरकारी अफ़सर हैं। अपने-अपने दफ्तर तथा महकमेकी बातें करेंगे। और वह अकेला बैठा इनकम टैक्सका रोना रोता रहेगा।

कान्ति — बुला लो, माँ। ऐसे-ऐसे लतीफे सुनाते हैं कि हँसते-हँसते पेटमें दर्द होने लगता है।

सदानन्द — किसी औरको तो बात करनेका अवसर नहीं देता। गँवारोंकी तरह शोर कितना मचाता है।

कमला — आपकी तबीयतका भी कुछ पता नहीं लगता। न बोलो तो कहते हो बुद्धू है, और बोलो तो गँवार! लेकिन मुझे तो ऐसे सीधे मनुष्य बहुत पसन्द है।

सदानन्द — चाहे कुछ भी हो, वह इस पार्टीमें नहीं चलेगा।

धर्मदेव — [माँ-बापकी बहससे तंग आकर] तो रहने दो दोनोंको, यशके माता-पिताको बुला लो।

सदानन्द — यश कौन ?

कमला — इनका मतलब सेठीसे है। उनका लड़का यश इनका मित्र है।

सदानन्द — हाँ, उन्हींको बुला लो।

कमला — मैं तो नहीं बुलाती। पिछले मंगलको उन्होंने हमें दावतमें बुलाया था ?

सदानन्द — पड़ोसमें रहते हैं, आखिर किसीको तो पहले करनी ही होगी। अगर तुम ही पहले बुला लोगी तो क्या बिगड़ जायेगा ?

कमला — जो समाजकी रीति है, उसका तो पालन करना ही चाहिए। हम इस कोठीमें उनके बादमें आये। उनसे मिलने भी गये। पहले तो उन्हींको बुलाना चाहिए।

सदानन्द — अब छोड़ो ये विदेशी सभ्यताके नियम। मैं टेलीफोन किये देता हूँ।

कान्ति — टेलीफोन तो उनके यहाँ है नहीं।

सदानन्द — तो देव कह आयेगा।

कमला — इस तरह दो-चार घण्टे पहले बुलानेमें तो वह समझ जायेंगे कि उन्हें किसीकी जगह बुलाया जा रहा है।

सदानन्द — तो रहने दो, मत बुलाओ। ग्यारह बज रहे हैं, तुम रोटीकी फिक्र करो।

कमला — जिन लोगोंके यहाँ हमने खाया है, उन सबको एक ही बार क्यों न निबटा दूँ ? रोज़-रोज़ मुसीबत कौन करे ?

सदानन्द — ऐसी ही मुसीबत थी, तो दावत दी ही क्यों ?

कमला — आप तो यों ही झुँझला रहे हैं। चोपड़ा और कमला यहाँ थोड़े दिनके लिए आये हैं। तुम गुलमर्गमें उनके पास पूरे दस दिन रहे थे। क्या यह अच्छा लगता है कि हम उनको एक बार भी खानेपर न बुलायें ?

सदानन्द — बीस मेहमान और जो बुलाये हैं, वह किसलिए।

कमला — चोपड़ा और कमलाके लिए।

कान्ति — तब तो, मा, पडोसवाले नन्दाको भी बुलाना चाहिए, रेलवे-के अफसर ठहरे।

कमला — हाँ, ठीक कहती हो। रेलवालोसे मित्रता करनेमे फायदा है। जरा जाओ तो, देव, उनसे कह आओ।

देव — मै नही जाता। जब पार्टी होती है, तो हमे खाना अलग दिया जाता है।

कमला — अभी तुम बच्चे हो न, बेटा। जब कॉलेज जाने लगोगे, तो

देव — [तीखे स्वरमें] हाँ, जी ! अब मै बच्चा हो गया। और कल जब कान्तिको ललिताके घर पहुँचाना था, तो मै बडा भाई बन गया था।

कान्ति — हूँ ! एक बार ज़रा-सा काम कर दिया, तो कौन-सा तीर मार दिया।

देव — तो जाओ, फिर तुम्ही कह आओ न। उस समय तो सुन्दर-सी साडी पहनकर सज जाओगी।

कान्ति — घबराते क्यो हो ? छह महीने ठहर जाओ। तुम्हें भी सूट मिल जायेंगे।

देव — यह मैट्रिककी परीक्षा क्या हुई, मेरे सिरपर एक भूत सवार हो गया, जो बात हो, कॉलेज जाकर। और जो कही फेल हो गया, तो ?

[सब हँसते है]

कान्ति — वह तो तुम्हारी अपनी नालायकी होगी।

देव — [गुस्सेसे] देखो, कान्ति, ज़बान सँभालकर बात करो।

सदानन्द बेटा, बडी बहनसे इस तरह नही बोलते। अब तुम कोई बच्चे तो हो नही। और तीन-चार महीने बाद कॉलेजमे पढने लगोगे। [देव खीझकर उठ जाता है और खिड़कीके पास खडा होकर बाहर झॉकने लगता है] इस तरह छोटी-छोटी बातोपर हमेशा जिद करना तुम्हे शोभा नही देता। जाओ, जहाँ माँ कहती है, हो आओ।

कमला उनसे कह देना कि पहले भी दो-चार बार आदमी भेजा था, लेकिन वह मिले नही।

सदानन्द सच कह रही हो या झूठ ?

कमला सच-झूठका कोई सवाल नही। तुम काम करने दो। [निश्चिन्त भावसे] चलो, यह तो तय हुआ। अब बताओ पकाना क्या है ?

सदानन्द यह तो स्त्रियोका काम है। तुम और कान्ति फैसला कर लो।

कमला आप कहते तो हमेशा यही है, परन्तु मेरा बनाया हुआ खाना कभी पसन्द भी तो नही आता आपको !

सदानन्द [हँसकर] क्यो ताने मारती हो ? जो चाहे बना लो, मै कुछ नही कहूँगा।

ान्ति मै बताऊँ, एक तो आलूकी कचौरी बनाओ, और पनीरकी खीर' '

पू मैं सूप पीऊँगी।

मला तू पहले दूध तो पी। डेढ घण्टेसे प्याला सामने रखा है, अभी आधा भी नही हुआ। [सदानन्दसे] हा, तो बताओ न, क्या बनायें ?

सदानन्द — कह तो दिया जो तुम चाहो बना लो।

[कमला मुसकरा देती है]

कान्ति — माँ, आलूकी कचौरी और पनीरकी खीर जरूर बनाओ।

कमला — बनायेगा कौन ?

कान्ति — मैं बनाऊँगी। हमने पिछले सोमवारको कॉलेजमे सीखा था।

सदानन्द — तुम मेहरबानी करो खानेवालोपर। जो चीज़े कॉलेजमे बनाना सीख रही हो, वह अपने ही घरमे बनाना।

[कान्ति लजा जाती है]

कमला — उसको शौक है, तो बनाने दो न। आखिर कॉलेज भी तो इसीलिए भेजा है। और फिर जबतक अभ्यास नही होगा, चीज़ ठीक कैसे बनेगी ?

सदानन्द — खाना पकानेका अभ्यास कोई कालिजका सबक थोड़े ही है, जो कापी सामने रखकर याद किया जाये।

देव — और, पापा, केवल कापी ही नही, तराजू, बाँट, आउन्स मेजर और बूँदे गिननेके लिए ड्रापर भी ज़रूरी है। [हँसता है] खाना क्या अच्छा खासा नुस्खा तैयार करना होता है।

कान्ति — तू चुप रह। उस दिन मेरे नोट्सकी कापी रसोईमें रह गयी थी तो महाराजने रद्दी समझकर जला दी। [रोनी सूरत बना लेती है।]

देव — [हँसते हुए] इसमे रोनेकी क्या बात है ?

[टेलेफोनकी घण्टी बजती है। सदानन्द उठकर टेले-

फोन सुनने जाता है। देव बराबरवाले कमरेमे चला जाता है]

कमला [कान्तिको मनाते हुए] चल, जाने दे। अभी कितना काम पडा है। तू जरा बरतन निकलवा। तबतक मैं बाजार हो आऊँ।

कान्ति लेकिन चाँदीके बरतन तो सेफमे रखे है।

कमला अरे बाबा, तब तो जल्दी करनी पडेगी। आज है भी रविवार, कही सेफ बन्द न हो गया हो।

कान्ति नही चार बजे तक खुला रहेगा, अभी तो बारह ही बजे है।

कमला बारह बज गये !

सदानन्द [हाथमें टेलेफोन पकडे हुए] मिसेज काहलीका टेलेफोन है।

कमला क्या कहती है ?

सदानन्द [टेलेफ़ोनपर हाथ रखकर] तुम्हे बुला रही है।

कमला [टेलेफोन लेकर] हाँ कौन लक्ष्मी नमस्ते धन्यवाद आप अच्छी तो है जी, हाँ, कहिए कौन ? आपके मित्र नही मैं नही जानती उन्हे यह तो बडी खुशीकी बात है हाँ, हाँ जरूर लाइए। इसमे हिचकिचानेकी क्या जरूरत है नही, अभी तो किसी चीजकी जरूरत नही। कुछ चाहिएगा, तो टेलेफोन कर दूँगी नमस्ते ! [टेलेफोन पटककर] तीन आदमी अपने साथमे और ला रही है।

सदानन्द कौन है ?

कमला — मुझे क्या मालूम ! पूछ रही थी कि तीन मेहमान अभी-अभी आये हैं, उनको भी साथ लेती आऊँ ? मैं कैसे मना करती ?

सदानन्द — ये लोग भी कितना परेशान करते हैं !

कमला — मैं तो स्वयं तंग हूँ इस चुटैलसे। कभी भी तो ऐसा नही हुआ कि यह आयी हो और अपने साथ दो-तीन वेबुलाये मेहमानोको न लायी हो।

सदानन्द — और वह कोहली भी मालूम पडता है, बिलकुल गधा है। बीवी पगली है, तो क्या वह भी इतना नही समझता कि राशनके जमानेमे किसीको खिलाना-पिलाना कितना मुश्किल है।

कमला — हद हो गयी !

सदानन्द — अब तो सिरपर आयी निभानी ही पडेगी।

कमला — [हताश होकर] कान्ति, देखना, देव अभी नन्दाके यहाँ न गया हो, तो उसे रोक लो।

देव — [देव आता है] माँ, उनसे कह आया हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। जरूर आयेंगे। अब मैं जा रहा हूँ क्रिकेट-का मैच देखने। शामको लौटूँगा।

कमला — आज न जाते तो अच्छा था। घरमे काम है।
[देव इतना सुन ही भाग जाता है]

सदानन्द — आजकल इन लोगोंके मिजाज़ बिगड़े हुए हैं। अपने अफ़सर तककी तो परवा करते नहीं, उसके बरवाजोंकी क्या करेंगे!

कमला — आपने ही तो कहा था कि चपरासी ला देगा सामान। उसीके भरोसे बैठी रही, नहीं तो कबका मँगा लिया होता।

सदानन्द — क्या खरीदना है? चलो, अब ले आये! मैं मोटर निकालता हूँ, तुम तबतक महाराजको बता दो क्या बनाना है।

कमला — क्या बजा है?

कान्ति — साढे बारह।

कमला — तो इस समय जानेसे क्या लाभ? दो घण्टे तो लगेंगे ही। न इधरके रहेंगे, न उधरके। खाना खानेके बाद ही चलेंगे।

सदानन्द — दो घण्टेका वहाँ क्या काम। बाज़ारसे सब्जी और फल ही तो लाने हैं।

कमला — और बैंक भी तो जाना है।

सदानन्द — कल सुबह ही तो मैंने तुम्हें दो सौ रुपये दिये थे। आज फिर बैंक? कहाँ गये सब रुपये?

कमला — सत्तर रुपयेकी तो मेरी साड़ी ही आयी थी। एक सौ तीस ही तो बचे हैं अब। खैर, घबराओ नहीं, बैंकसे तो मुझे चाँदीके बरतन निकालने हैं।

सदानन्द — जाने भी दो चाँदीके बरतनोंको। कल फिर उन्हें रखने जाना होगा।

कान्ति — नहीं पिताजी, रातको खाना हो, तो चाँदीके बरतन बहुत अच्छे लगते हैं। कमरा जगमगा उठता है।

कमला — और फिर चाँदीके बरतन हैं किसलिए, जो ऐसे अवसरपर

इस्तेमाल न किये जाये ?

सदानन्द जिन लोगोको तुम बुला रही हो, उन सबने तो ये बरतन देखे ही है । अब और किसको दिखाने है ?

कमला सबने कहाँ देखे है । और देखे भी हो तो क्या ? मांगके थोडे ही है कि एक बार दिखाकर लौटा दिये ।

सदानन्द जो अनजाने मेहमान आ रहे है, उनमे-से कोई चोर हुआ, तो ?

कमला ईश्वरके लिए ऐसे अशुभ वचन न निकालो ।

सदानन्द जैसी लूट-मार आजकल हो रही है, उसे देखकर ऐसा होना असम्भव नही ।

कमला [कान्तिसे] तो फिर क्या करें ?

सदानन्द मै कहता हूँ बरतनोकी फिक्र छोडो, दावतके लिए खाना बनाना शुरू करो ।

कमला चीजे तो बन जायेगी । बनानेमे देर ही कितनी लगती है । दो घण्टेका काम है सारा ।

सदानन्द जरा बाजारका काम जल्दी कर लेती, तो मै भी दो घण्टे ब्रिज खेल आता ।

कमला बस खाना खाते ही चल पडेगे । कान्ति, महाराजसे पूछो तो कितनी देर है ?

[रामसिंह जाता है]

सदानन्द [रायसिंहसे] हुआ क्या है उस गधेको ?

रायसिंह यह तो मुझे मालूम नहीं। वह अपनी कोठरीमें चारपाईपर लेटा हुआ है।

कमला [घबराकर] अब क्या करें ? मैंने तो लक्ष्मीसे भी नौकर भेजनेको मना कर दिया था।

कान्ति होटलसे कोई आदमी बुलवा लो। दस रुपये लेगा।

सदानन्द पैसे देकर तो सब कुछ हो सकता है, खुद भी थोड़ी हिम्मत करना सीखो।

कान्ति तो लक्ष्मी मौसीसे पूछूँ ?

कमला पहले उसको तो देखो हुआ क्या है ? जब भी काम होता है बीमार पड जाता है।

कान्ति मुझे तो लगता है वह बहाना कर रहा है।

कमला कुछ भी हो, इस समय तो कोई-न-कोई बन्दोबस्त करना ही चाहिए।

सदानन्द इन नौकरोंकी जाति ही ऐसी है। शुरू-शुरूमें तो बड़ा मन लगाकर काम करते हैं। फिर दिमाग आसमानपर चढ़ जाता है। सोचते हैं जैसे इनके बिना हमारा गुजारा हो ही नहीं सकता। [कमलासे] यदि तुमने आज दावतका झझट न किया होता तो धक्के देकर उसे बाहर निकाल देता।

कमला न, न, ऐसा न करना। मैं लक्ष्मीकी तरह लोगोंको हिन्दुस्तानी खाना नहीं खिलाना चाहती। [कान्तिसे] जरा लक्ष्मी-को टेलेफोन करके तो देखो। पूछो आज रसोइयेको भेज सकती है ?

पचपनका फेर

[कान्ति टेलेफोन करने लगता है]

कमला — [सदानन्दसे] आप जरा महाराजके पास जाइए — उससे प्यारसे बातचीत करना। सहानुभूति प्रकट करना। उसे तसल्ली हो जायेगी।

सदानन्द — जाता हूं। शायद कुछ हो जाये। [उठता है]।

कमला — देखना जरा नम्रतासे बात करना, कहीं इतनेसे भी हाथ न धो बैठे।

कान्ति — एक सनीडानकी गोली दो, तो सब ठीक हो जायेगा।

कमला — सनीडान तो है नहीं।

सदानन्द — [खीझकर] तो लाल स्याहीकी गोली ही दे दो।

कान्ति — वह तो जहर होती है।

कमला — [घबराकर] कहीं सचमुच दे ही न देना — मर गया, तो और मुसीबत पड़ेगी।

सदानन्द — क्या समझ रखा है तुमने मुझे? मैं पागल हूँ जो उसे जहर दे दूंगा? लेकिन सवाल यह है कि यदि वह न माना, तो गानेका क्या होगा?

कमला — [चिढ़कर] मुझसे पूछते हैं?

सदानन्द — और किससे पूछूं?

कमला — मेरी सरकार। आपके ही दोस्त आ रहे हैं। आप ही निकालिए कोई तरकीब।

सदानन्द — हां, अब नहीं। जब प्रबन्ध करना हो तो मित्र मेरे, और जब तारीफ हो तो तुम।

[illegible]

कमला — [नम्र होकर] इन झगड़ोंमें क्या लाभ ? तुम जाकर जरा देखो तो उसे हुआ क्या है ?

सदानन्द — हुआ वही है, जो सबको होता है। तनख्वाहमें दो-चार रुपये और बढ़ा दो, ठीक हो जायेगा।

कमला — यह तो मैं नहीं होने दूंगी। यह तो सरासर गलेपर छुरी रखकर लेनेवाली बात हुई।

कान्ति — [टेलेफ़ोन रखकर] मौसीजी कहती हैं कि उनका महाराज तो छुट्टी ले गया है। रातका खाना तो बनाना था नहीं और आपने भी मना कर दिया था।

कमला — [लाचारीसे] तो फिर क्या करें — दे दें उसे दो-चार रुपये और ?

कान्ति — तनख्वाह बढ़ानेके बजाय उसे दो-चार रुपये इनाम जा दे दें।

सदानन्द — इनाम तो खानेके बाद दिया जाता है। लेकिन उससे पहले क्या होगा ?

कमला — [कान्तिसे] तुम परांठे तो बना लोगी न ?

कान्ति — परांठे बनाना हमें सिखाया ही नहीं गया अभी।

सदानन्द — [आवेशमें] कोई कामकी चीज़ सिखायी भी है ?

कमला — परांठोंमें सीखनेवाली बात ही क्या है ? आटा गुंधा हुआ रखा ही है। रायसिंह बेलता जायेगा, तुम तवेपर डालकर घीमें सेक लेना।

कान्ति — कौनसे घीमें बनाऊँ, असली या वनस्पति ?

कमला — इस समयके लिए तो बड़े टीनमें-से निकाल लो, और बाकी

लिए जो दस पाउण्डवाला वनस्पतिका टीन मँगाया था, उसे खोल लेना।

सदानन्द तो तुम खाना बनाओगी इस समय ?

कमला विचार तो यही है।

सदानन्द तब हम जा चुके बाजार।

कमला आप जरा महाराजकी खबर तो लीजिए। तबतक खाना तैयार हो जायेगा।

सदानन्द मेरी तो भूखके मारे जान निकल रही है और इस गधेको बहाना करके लेटनेकी पडी है। [जाने लगता है]

[सदानन्द अभी दरवाजे तक ही पहुँचता है कि पपू बाहरसे रोती हुई आती है, हाथ रगे हैं।]

सदानन्द क्यो, क्या हुआ ?

पपू भैयाने मारा।

सदानन्द [उसे गोदीमें उठाकर] तूने उसकी चीजोको क्यो छूआ था।

कमला [सदानन्दकी गोदीमें से पपूको लेकर] तू तो मेरी रानी बेटी है। [आँसू पोंछकर] देखो, अभी कान्ति छोटा-सा पराठा बनाकर लायेगी पपूके लिए।

कान्ति मा, इसे भूख तो है नही। इसका सोनेका समय हो रहा है।

सदानन्द इस समय मत सोने देना इसे। नही तो रातको मुसीबत करेगी। शामको जरा जल्दी खिला-पिलाकर सुला देना।

कमला अच्छा। तो फिर चले बाजार ?

सदानन्द — कमाल करती हो तुम भी ! अभी तो तुम कह रही थी कि खाना खाकर चलेंगे ।

कमला — महाराज जो बीमार पड गया है ।

सदानन्द — मुझे तो पहले ही आज खाना मिलनेकी आशा नही थी ।

कमला — खाना बनानेमे कुछ देर तो लगेगी ही । रायसिह अगीठी सुलगा रहा है । जैसे ही वह सुलगी और खाना तैयार समझो ।

सदानन्द — कैसे समझ लूँ ! मै ऐसे खानेसे बिना खाये ही अच्छा । मुझे तो दो-चार बिस्कुट दे दो । मक्खन और पनीरका डिब्बा खोल दो । फिर तुम जानो और तुम्हारा काम ।

[अलमारीमें-से पनीरका डिब्बा निकालकर उसका ढकना काटना शुरू करता है । टेलेफोनकी घण्टी बजती है । सुनने जाता है ।]

कमला — कान्ति, तो फिर तुम परांठे तो बना ही लोगी ।

कान्ति — क्यो नही ।

कमला — और क्या बनायें ?

कान्ति — पनीर भी मै बना लूँगी । बाकी चीज़े तो पकी-पकायी डिब्बोमें मिल जाती हैं । हाँ, पुलाव बनानेके लिए रॉयल होटलसे कश्मीरी पण्डितको बुला लो ।

कमला — डिब्बे किस चीजके लाऊँ ?

कान्ति — सूपके ।

कमला — खडे-खडे सूप कैसे खायेंगे ?

सदानन्द — [गुस्सेसे टेलेफोन पटकते हुए] कुछ न बनाओ इस

मालोंके लिए। अफसरी तो इनके दिमागमे-से किसी समय भी नही निकलती।

कमला क्यो, क्या हुआ ?

सदानन्द खोसलाका बच्चा कहता है कि वह नौ बजेसे पहले नही पहुँच सकता।

कमला क्यो ?

सदानन्द कारण नही बताया। कही बैठकर चढायेगा। मुझे तो गुस्सा इस बातपर आता है कि सब जगह ठीक वक्तपर पहुँचता है, पर क्योकि मै उसके साथ काम करता हूँ, इसलिए मेरे यहाँ समयपर आनेसे उसकी शान कम हो जायेगी।

कमला और लोग भी आठ बजे थोडे ही आयेंगे।

सदानन्द लेकिन जो आठ बजे आ गये, तो उन्हें घण्टे-भर इन्तज़ार करना बुरा लगेगा।

कमला अरे, गप-शप करते रहेंगे।

सदानन्द परन्तु यह तो प्रत्यक्ष है कि वह मेरा अफसर होनेका लाभ उठा रहा है।

कमला तो फिर भी क्या सकते हो ?

सदानन्द तुम्ही बताओ क्या करूँ ? यदि और कोई ऐसा करनेकी हिम्मत करता, तो साफ-साफ कह देता कि इतनी देर प्रतीक्षा करना कठिन होगा।

कमला चलो, अब जाने दो। बाज़ार चलें ?

सदानन्द [पत्रिका टुकड़ा [illegible] डालकर] चलो। [अलमारी

खोलकर] एक बिस्कुट और खा लूँ।

कमला लाना क्या-क्या है ?

सदानन्द जो कुछ मिल जायेगा।

कमला मेरी तो राय है कि बन्द डिब्बे ले लें, पकी-पकायी चीज होगी। कोई झंझट ही नही रहेगा।

सदानन्द लेकिन डिब्बेकी सब चीजोंका एक-सा ही स्वाद होता है। इससे तो तन्दूरकी रोटियाँ और माशकी दाल ले लो। स्वाद तो आ जायेगा।

कमला परांठे तो कान्ति बना लेगी। तन्दूरकी रोटियाकी जरूरत नही। परन्तु बाक़ी चीज़ें बनाना तो मुश्किल है। आपका चपरासी भी तो नही आया। रायसिंह अकेला क्या-क्या करेगा ?

सदानन्द तुम सबने मिलकर मुझे तो पागल बना दिया। [सिर पकडकर बैठ जाता है] मेरी तो समझमें कुछ नही आता। तुम जैसा चाहो करो।

कमला यह खूब रही ! एक तो महाराज बैठ गया और अब आप परेशान कर रहे हैं। मैं भी बायकाट कर दूँ, तो कैसा रहे ?

सदानन्द तुम जैसा कहोगी मैं करता जाऊँगा, और क्या चाहती हो ?

कमला मैंने तो सीधा तरीका बता दिया, जबतक हम बाजार होकर आते हैं, कान्ति परांठे बना लेगी।

कान्ति मां, कितने परांठे बनाऊँ ?

कमला पचीस आदमी होंगे, पचास काफी होंगे।

पचपनका फेर

सदानन्द [व्यग्यसे] मेरे लिए तो आठ पराठे बनाना, मैं सुबहका भूखा हूँ।

कमला छोडिए भी। यह समय मजाकका नही।

सदानन्द मै हँसी नही कर रहा हूँ। मुझे बडे जोरकी भूख लग रही है। [कमला हँसती है] और उन लोगोका भी ध्यान रखना, जो अपने ड्राइवरोको भी खाना खिलवाते है और घरवालोको भी भिजवाते है।

कमला यह नही होगा। मेरे यहाँ कोई शादी थोडे ही है।

कान्ति थोडे ज्यादा ही बना लेगे, माँ! वनस्पतिमें ही तो बनेंगे।

सदानन्द ऐ, वनस्पतिमे! और अभीसे बनाकर रख दोगी, रात तक पापड हो जायेंगे।

कमला नही होगे। आप चलनेकी तैयारी कीजिए।

[टेलेफोनकी घण्टी बजती है। सदानन्द सुनता है]

सदानन्द हाँ फरमाइए जी, चोपडा साहब क्या कहा आपने? आज रातको तार कहाँसे आ गया इसमे डरनेकी बात तो कोई नही कहिए न, साहब हाँ, हाँ, जल्दी आइए क्या कहा गाडी सवा नौ बजे जाती है, आपको खाना आठ बजे तक अवश्य मिल जाना चाहिए अच्छा।

[टेलेफोनको इतनी जोरसे पटकता है कि वह नीचे गिर पडता है और टुकडे-टुकडे हो जाता है]

कमला क्या भूकम्प आ गया?

सदानन्द ऐसी-तैसी इन सबकी! भाडमे जाये सबके सब। एक कहता है नौ बजेसे पहले नही पहुँच सकता, और जिसके

लिए यह सब बरबादी हुई, वह आठ ही बजे आकर चला जाना चाहता है।

कमला कौन, चोपडा ?

सदानन्द हाँ, वही तुम्हारी सहेली और उसका मियाँ चोपडा ! चूल्हे में जाये ऐसी दावत।

[कमलाके हाथसे चीनीकी बड़ी प्लेट गिर जाती है। वह निस्सहाय-सी सदानन्दकी ओर देखती है, जो एक-एक करके सब बरतन खिडकीके बाहर फेंके जाता है।]

[परदा]

आवागमन

●

[मञ्चपर बिलकुल अँधेरा है, केवल कुछ व्यक्ति सिरसे पैर तक सफ़ेद कपड़ोंमें दिखाई देते हैं। इनके ऊपर सफेद रोशनी भी पड़ रही है। पीछेवाला परदा काला है, उसपर तारे चमक रहे हैं। आसपास तथा नीचे जमीनपर घोर अन्धकार है जिससे ऐसा प्रतीत होता है मानो ये लोग कहीं आकाशमें टँगे हैं। हाथमें झण्डा पकड़े नेता एक छोटी-सी लकड़ीकी पेटीपर खड़े लोगोंको लेक्चर दे रहे हैं।]

नेता — यह अन्याय नहीं तो क्या है? भाइयो और बहनो, मैंने अपनी साठ सालकी आयुमें ऐसा जुल्म होता नहीं देखा। क्या हम इसे चुपचाप सहन कर लेंगे? नहीं! कभी नहीं! [लोग ताली बजाते हैं। नेता अपना भाषण जारी रखता है।] यहाँ साधारण जनताकी पुकार कौन सुनता है! कहते हैं फैसला होगा कि हम नरकमें भेजे जायेंगे या स्वर्गमें? हम तो प्रतीक्षा करते-करते थक गये। इस दुविधासे तो, भई, हमें नरकमें ही फेंको और छुट्टी करो। लेकिन नरकमें क्यों? हमने कौन-सा ऐसा पाप किया है कि हम स्वर्गमें नहीं जा सकते? क्या, भाइयो! एक जोरदार नारा लगाकर अपनी आवाज़ उठाओ तो।

[देवदूत आता है]

देवदूत — [नेतासे] मैंने आपसे पहले भी कहा है कि यहाँपर यह भाषणबाजी नहीं चल सकती। अपनी धरतीकी सब बातें भूल जाओ। अब तुम एक दूसरी दुनियामें हो। [लोगों-

से] आप सब अपना रास्ता पकड़िए।

[लोग धीरे-धीरे खिसक जाते हैं। केवल नेता अपनी पेटीपर खड़ा रह जाता है।]

देवदूत यह पेटी कहाँसे लाये हो?

नेता इसे तो मैं सदा अपने पास रखता हूँ। क्या मालूम किस समय इसकी ज़रूरत पड़ जाये।

देवदूत यहाँपर इसकी आज्ञा नहीं है। नीचे उतरो।

[नेता उतरता है। देवदूत पेटीको उठाकर एक कोनेमें रख देता है और चला जाता है।]

नेता [स्वतः, परन्तु बोलनेका ढंग ऐसा है मानो सामने श्रोतागण बैठे हों] भाषण हमारा मूल अधिकार है। इसे हमसे कौन छीन सकता है!

[एक लम्बी कर्कश ध्वनि होती है, जिससे यह ज्ञात पड़ता है कि एक और व्यक्तिकी आत्मा धरतीसे आ रही है। दो-चार क्षणमें एक संवाददाता हाथमें नोटबुक लिये प्रवेश करता है।]

संवाददाता आप कुछ कह रहे थे?

नेता तुम हो कौन?

संवाददाता मैं एक अखबारका संवाददाता हूँ। मैंने कुछ क्षण पहले चालीस वर्ष तक संवाददाताका काम करते-करते अपना शरीर त्याग दिया।

नेता आप ठीक मौक़ेपर आ गये। आपका यहाँ होना बहुत

आवश्यक है। देखो तो, यहाँ कैसा अत्याचार हो रहा है। हमारे जन्मसिद्ध अधिकारोंको किस प्रकार कुचला जा रहा है, दुनियावालोंको इनकी खबर देनी चाहिए। आप अभी इनकी रिपोर्ट अपने अखबारको भेज दीजिए और उनसे कहिए कि इसे मुख्य पृष्ठपर मोटे अक्षरोंमें छापें।

संवाददाता — आप यहाँपर भी लेक्चर और आन्दोलनसे बाज नहीं आये?

नेता — जबतक मुझमें दम है मैं अपने उद्देश्यकी पूर्तिके लिए लड़ता रहूँगा।

संवाददाता — आप भूल रहे हैं, आप जीवित नहीं हैं। और जहाँतक आदर्शोंका सवाल है आपको केवल अपनी व्यक्तिगत उन्नतिकी ही चिन्ता है। किन्तु यह सब बातें यहाँ नहीं चलेंगी। अपनेको व्यर्थ इस धोखेमें न रखिए। यह धरती नहीं जहाँ आप लोगोंको फुसला कर अपना उल्लू सीधा कर लेंगे।

नेता — तुम एक धरतीकी बात करते हो, मैं अपना मत सातों लोकमें फैलाऊँगा। एक योनिमें नहीं, चौरासी लाख योनियोंमें भी मैं अपना आदर्श नहीं छोड़ूँगा। चाहो तो तुम मेरा यह प्रोग्राम टेलीप्रिन्टरपर भेज दो।

संवाददाता — [ऐंठकर] आपको जो कहना है लिखकर दीजिए। मुझे आपकी जबानपर विश्वास नहीं।

नेता — [भड़ककर] क्या मतलब? मेरा अपमान करना चाहते हो?

संवाददाता — दूधका जला छाछको फूँककर पीता है। आप नेता ठहरे, नेताओंकी स्मरणशक्ति जरा कमजोर होती है। याद है आपके कारण मुझे अपनी नौकरीसे हाथ धोना पड़ा था?

नेता झूठ। मैंने कभी किसीको कोई हानि नही पहुँचायी।

सवाददाता न जाने आप हानि किसे कहते है। परन्तु इतना तो याद होगा कि दस वर्ष पूर्व जब देश-भरमे कपडेकी मिलोंमे जबरदस्त हडताल चल रही थी तो आपने मजदूरोंके बीच खडे होकर वह धुआँधार भाषण दिया था कि क्या कहे! और जब अगले दिन अखबारोमे वह छपा और आपपर मुख्य मन्त्रीकी झाड पडी, तो आप साफ मुकर गये कि आपने ऐसी बात कभी कही ही नही। आपने हमारे अखबारके सम्पादकसे शिकायत भी कर दी कि मेरे-जैसे गैर-ज़िम्मेदार व्यक्तिको ऐसा दायित्वपूर्ण काम नही सौपना चाहिए। सम्पादकने आव देखा न ताव मुझे उसी क्षण निकाल बाहर किया।

[फिर वही लम्बी कर्कश ध्वनि होती है और एक स्त्री प्रवेश करती है।]

नेता क्षमा कीजिए, यहाँपर आपके बैठनेकी कोई जगह नही है। मेरे पास केवल यह पेटी है। [कोनेसे पेटी उठाकर उसके पास लाकर रख देता है।]

ी यह आप ही को मुबारक हो!

ा आपका मतलब?

मैं कई वर्षोंसे आपको इसपर खडे होकर भाषण देते देखती आयी हूँ। दिमाग चाट जाते थे बोल-बोलकर।

ता [नाराज होकर] आपको इस तरह बदतमीज़ीसे बात करनेका कोई हक नही है।

स्त्री आप हककी कहते है, मै तो आपपर मुकदमा चलाऊँगी ।

सवाददाता [अपनी नोटवुकमें लिखते हुए] सनसनीपूर्ण घटना · एक सुन्दर युवतीका माननीय नेतापर आरोप बहुत दिलचस्प कहानी

नेता तुम तो कहते थे यहाँसे कोई सूचना नही भेजी जा सकती ?

सवाददाता अरे, हाँ, ठीक तो कहते हैं आप । मै कुछ वौखला-सा गया हूँ । आदतसे लाचार हूँ । [नोटवुक बन्द करके जेबमें रख लेता है ।]

नेता श्रीमतीजी, आप कुछ क्रोधित जान पडती है । मै पूछ सकता हूँ इसका कारण क्या है ? जहाँतक मुझे याद है मैंने तो कभी आपको कोई कष्ट नही दिया ।

स्त्री कोई किसीको एकाध वार कष्ट दे तो याद भी रहे, जिनका सारा जीवन ही कपट और धोखेवाज़ीमे वीत जाये उन्हे क्या-क्या याद रहेगा !

नेता [व्यग्यसे] हूँ ! जरा सुनूँ तो मैने आपका क्या विगाडा है ?

स्त्री सुनना चाहते है, तो सुनिए – आपको याद होगा कि मै भी आप ही के गाँवमे रहती थी । वहुत अमीर तो न थी, लेकिन गाँववाले मेरा आदर करते थे, मेरी वात मानते थे । चुनावके समय आपने मेरी सहायता माँगी थी और वह सब्ज़ बाग दिखाये हमे कि क्या कहूँ – तुम्हारे वेटेको अच्छी नौकरी दिला दूँगा, इस गाँवमे अस्पताल वनवाऊँगा, रेलवे लाइन यहाँतक आयेगी, लडकोंके लिए हाई स्कूल होगा – आपकी वातोंसे तो ऐसा जान पडता था कि गरीबोंका अन्त हो जायेगा, फसल दोगुनी होगी, किसान

मालामाल हो जायेंगे। ऐसे झाँसे दिये कि हम लोगोने जीतोड मेहनत की और आप चुनाव जीत गये। पर हमें क्या मिला? आप राजधानीमे रहने लगे, हमारे गाँवसे कोसो दूर। हमपर कई मुसीबते आयी, बाढ आयी, अकाल पडा, किन्तु आपने अपनी सूरत तक न दिखायी।

नेता — झूठ, बिलकुल झूठ। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब बाढ आयी थी तो मैने हवाई जहाजपर बैठकर बाढ-पीडित गाँवोका ऊपरसे निरीक्षण किया था। जब अकाल पडा था तो मैने ऐसा दर्दनाक भाषण दिया कि विधान-सभाके सदस्योंके हृदय रो उठे।

स्त्री — आप उडकर तमाशा देखते रहे, भाषण देते रहे और हमारे गाँवके चालीस प्रतिशत लोग मर गये, हमारे पशु बह गये, हमारे घर नष्ट हो गये, हमारे खेत उजड गये।

नेता — मुझे यह सब सुनकर बहुत दुःख हुआ था। परन्तु सोना तो आगमें तप कर ही निखरता है। संसारमे जितने बडे-बडे मनुष्य हुए हैं वे सब कष्ट भोग कर ही इतने ऊँचे पहुँचे हैं।

संवाददाता — वाह! वाह!

[फिर वही लम्बी-सी कर्कश ध्वनि होती है और मंचपर उपस्थित व्यक्ति उत्सुकतासे आगन्तुककी प्रतीक्षा करने लगते हैं। एक सरकारी अफ़सर प्रवेश करता है, परन्तु इन लोगोंकी ओर पीठ करके एक ओर खड़ा हो जाता है।]

संवाददाता — अरे, यह तो कमिश्नर साहब है! [आगे बढकर] नमस्कार!

कमिश्नर — [रुखाईसे] नमस्कार!

नेता — कमिश्नर साहब, आपने मुझे पहचाना नही ?

कमिश्नर — खूब अच्छी तरह पहचानता हूँ आपको। नित्य नयी सिफारिशे लेकर आप मेरे पास आते थे, आज उसका तबादला रोक दीजिए, तो कल उसकी तरक्की कर दीजिए, यह मेरा भतीजा है, इसे जमीन दिला दीजिए, यह चाचा है, इसे ठेका मिल जाये तो आपकी कृपा होगी। और सिफारिश भी सदा उन लोगोकी करी जो बिलकुल निकम्मे, अयोग्य और भ्रष्ट थे।

नेता — देखिए, साहब, आप बहुत बढ-चढकर बातें कर रहे हैं।

कमिश्नर — [तीखेपनसे] मैं ठीक ही कह रहा हूँ। जिन दुष्ट घूसखोरोको पकड़कर जेलके अन्दर करना चाहिए था, आपने उनको शरण दी और न्यायकी कडी सजासे बचाया। नतीजा यह हुआ कि सरकारी काम-काजमे चारो ओर भ्रष्टाचार फैलता गया और शासकोंके प्रति जनताका विश्वास उठ गया।

नेता — देखिए, मिस्टर, जरा जबान सँभाल कर बात कीजिए, नही तो आप अपनी नौकरीसे हाथ धो बैठेंगे।

कमिश्नर — अबतक इसी डरसे तो जी खोलकर कुछ कह नही पाया था। परन्तु मुझे अपने विचार प्रकट करनेका अधिकार है। मुझे खुशी है कि आप यहाँ मिल गये। ज़रा दिलका गुबार तो निकाल लूँ।

[फिर वही कर्कश ध्वनि होती है। एक पुरुषकी आत्माका प्रवेश।]

नेता — [आगन्तुकको देखकर प्रसन्न होते हुए] अरे मित्र, तुम

कहाँ! कितने दिनो बाद मिले हो!

मित्र — आज आपने मुझे पहचान कैसे लिया? क्या मुझसे कोई काम है?

नेता — [उसके कन्धेपर हाथ रखकर] अरे, तुम तो मेरे बचपन-के साथी हो। स्कूलमे हम इकट्ठे पढे, साथ खेले। क्या दिन थे वे भी! भाइयोमे भी इतना प्यार नही होता होगा। याद है न?

मित्र — याद क्यो नही! और यह भी याद है कि निर्वाचनके समय मैने आपके लिए कितना काम किया था। अपना तन, मन, धन सब लगा दिया। सोचा, मित्रकी सहायता करनी चाहिए। परन्तु जब आप चुनावमे जीत गये, बड़े आदमी बन गये, तब तू कौन और मै कौन! यहाँतक कि एक बार मिलने गया तो सीधे मुँह बात तक नही की। सोचा होगा कही कुछ माँग न बैठे।

नेता — नही, नही, यह कभी नही हो सकता। तुम्हे भ्रम हुआ है। मै तो देश-सेवामे ऐसा उलझ गया कि अपने तनकी भी सुध-बुध नही रही।

मित्र — चलो, जाने दो। ऐसा हुआ ही करता है।

[फिर वही लम्बी कर्कश ध्वनि। नेताके प्रतिद्वन्द्वीकी आत्मा आती है]

[illegible] — [नेताको देखकर] तुम यहाँ क्या कर रहे हो? वही पुरानी चालबाजियाँ!

नेता — कैसी चालबाजी? तुम तो आते ही झगड़ने लगे।

प्रतिद्वन्द्वी — [अन्य लोगोंसे] भाइयो, आप लोग इनसे बचकर रहिएगा। इनका काटा पानी भी नहीं माँगता। इन्होंने तो झूठ-सच बोलकर केवल अपना उल्लू सीधा करना सीखा है।

[फिर कर्कश ध्वनि और एक नवयुवककी आत्माका प्रवेश]

नवयुवक — [नेताकी ओर संकेत करके] यही है जिसने मेरी रोजी छीन ली, मुझे नौकरीसे हटाकर अपने चाचाके पोतेको मेरी जगह दिला दी। बेकारीका जमाना। मैंने दर-दर धक्के खाये, सबके सामने हाथ पसारा। अन्तमें तंग आकर मैंने आत्महत्या कर ली। मेरी मृत्युका जिम्मेदार यह है।

[नेता कुछ क्षण इधर-उधर देखता है। स्थिति गम्भीर होती देख जल्दीसे एक ओर रखी अपनी पेटी उठा लाता है और उसपर खड़ा होकर बोलना शुरू कर देता है।]

नेता — भाइयो और बहनो, आपने मुझे यह अवसर दिया कि मैं आपसे अपने मनकी दो-चार बातें कह सकूँ। इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। मेरा सौभाग्य है कि मैं आप-जैसे बुद्धिमान् देशभक्त और कार्यकुशल सज्जनोंके बीच खड़ा हूँ। आप लोगोंने अपना खून-पसीना बहाकर इस देशको महान् बनाया, आपके परिश्रमसे भारत फिर अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृतिके गौरवको प्राप्त कर सका और संसारको शान्तिका सन्देश दे सका। आप अपनी निस्स्वार्थ सेवासे बापूके स्वप्नोंको प्रत्यक्ष रूप दे रहे हैं। आप लोग जानते ही हैं कि मैंने भी अपनी मातृभूमिके लिए अपना जीवन अर्पित किया है।

[नेताके भाषणको सुननेके लिए श्रोतागण इकट्ठे होने लगे हैं।]

स्त्री — [उठकर] भाइयो, आप फिर इनकी बातोंमें आने लगे। क्या आप अपने अनुभवसे कुछ सीखेंगे भी या नहीं ?

कुछ पुरुष — [स्त्रीसे] बैठ जाओ ! बैठ जाओ ! सुनने दो।

नेता — [अपना भाषण फिरसे चालू करते हुए] हाँ, तो मैं कह रहा था कि यह पंचवर्षीय योजना, यह हमारा महान देश

[देवदूत आता है]

देवदूत — [नेतासे] फिर वही हुल्लडबाजी ! नीचे उतरो इस पेटीसे।

[नेता उतर जाता है। देवदूत पेटी उठाकर फिर कोनेमें रख देता है]

देवदूत — आप सब लोग इस दरवाजेसे भीतर जाइए। [पिछले परदेमें एक दरवाजा खुलता है।] वहाँ आपको बता दिया जायेगा कि आपको किधर जाना है। [नेता बढ़कर सबसे आगे होना चाहता है। देवदूत उसका कन्धा पकड़कर उससे कहता है] आप इतनी जल्दी मत करिए। [अन्य लोगोंसे] आप लोग जाइए। इनका मामला अलग है। इन्हें न तो स्वर्गवाले लेनेको तैयार हैं, न नरकवाले। इसलिए धर्मराजने निर्णय किया है कि इन्हें वापस धरतीपर भेजा जाये।

[देवदूत जाता है। सब लोग दरवाजेकी ओर बढ़ जाते हैं। नेता फिर अपनी पेटी उठाकर मंचके बीचमें लाकर रखता है।

[परदा]

बलिदान

•

[पहला दृश्य । समय सन्ध्या]

[एक विद्यार्थी नवयुवकका कमरा। चीजें जहाँ-तहाँ बिखरी पड़ी हैं। एक ओर दीवारके साथ पलंग सटा हुआ है। तकिया पलंगपोशके ऊपर पड़ा है। सामनेवाले कोनेमें मेज-कुरसी लगी है। उसके साथ ही बगलमें एक अलमारी है, जिसमें किताबोंके अतिरिक्त और कई चीजें हैं, जैसे कपड़े, जूते, पुराने अखबार। पलंगके सामने एक आरामकुरसी है जिसपर रमेश टाँगें पसारे बैठा है। दूसरी कुरसीपर बलदेव हथेलीपर ठुड्डी टेके बड़े गम्भीर भावसे रमेशकी ओर देख रहा है। बलदेव उठता है, कमरेका चक्कर काटता है, फिर खिड़कीसे बाहर झाँकता है। फिर निराश होकर पलंगपर लेटकर कुछ सोचने लगता है। रमेश उसको यह करते देखकर मुसकाता है।]

रमेश — तुम्हें हो क्या रहा है? बैठते क्यों नहीं चैनसे?

बलदेव — चैन मिलता कहाँ है। यह इतना बड़ा काम जो सिरपर आ पड़ा है।

रमेश — घबराते क्या हो? देखो तो सेनेटका फैसला क्या होता है।

बलदेव — अरे, सेनेट क्या फैसला करेगी। सदाकी तरह इधर-उधरकी फजूल बातें करके छात्रोंको बहकाना चाहेगी। [जोशमें उठ बैठता है] परन्तु इस बार हम आसानीसे नहीं मानेंगे। यूनिवर्सिटी होती है छात्रोंको शिक्षा देने तथा संस्कृति व शिष्टाचार सिखानेके लिए, न कि विद्यार्थियोंको तंग करके उनका गला काटनेके लिए। देखा तुमने, परीक्षाका निर्दि-

क्रम कैसा बनाया है। हिसाब और जुगराफियेके परचे एक ही दिन रख दिये। मरेंगे न वे जिन्होंने ये दोनो मजमून ले रखे है। उधर मस्कृतके दोनो परचे एक ही दिन, और उससे पहले कोई छुट्टी तक नही। फिर दोष देते हैं लडकाको कि वे बिना विचारे मनमानी करते है।

रमेश	तुम्हारा तो दिमाग खराब है।
बलदेव	मेरा नही, तुम्हारा खराब है, जो कभी किसी चीजपर ध्यान ही नही देते।
रमेश	तुम्हारी तरह मैं छोटी-छोटी बातोपर अपनी शक्ति नष्ट नही करता।
बलदेव	क्या यह छोटी-सी बात है ?
रमेश	और नही तो क्या ! सच-सच बताओ, कितने लडके है जो ये दोनो मजमून लेते है ? मेरी जान-पहचानवालाम-[illegible] तो एक भी नही।
बलदेव	तुम्हारी जान-पहचानवालोंमे से कोई ऐसा भी है जिसने कभी किताबको हाथ लगाया हो ? उनका [illegible] इम्तहानोंकी, सिनेमा ही उनके लिए काफी है।
रमेश	[मुसकराकर] मै तो शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि [illegible] तिथिक्रम दस विद्यार्थियोंमे अधिकको नुकसान नहीं [illegible] सकता। और सस्कृत लेते ही कितने है।
[illegible]देव	दस ही सही। अल्पसंख्यकोंके हक भी तो है। [illegible] अधिकार [illegible]।
रमेश	हमने अपने प्रतिनिधियो-द्वारा, और तुम [illegible]

पगानता पर

नेता थे, रजिस्ट्रारको सुझावपत्र तो भिजवा दिया है। उसने इस बारेमे जाँच करनेकी प्रतिज्ञा भी की है।

बलदेव — लेकिन किया तो कुछ नही न! आज चार बजे तक जवाब देनेको कहा था, अब तो पाँच बज चुके। [सहसा उठ खड़ा होता है] मुझे कुछ करना चाहिए। विद्यार्थियोंको इकट्ठा करके कोई ऐसी बात कर दिखाऊँगा कि यूनिवर्सिटीवालोको याद रहे। अभीतक तो वह उन्ही लोगोंके दमपर जीते है जो अपने साथियोंको त्याग कर दुश्मनोंसे जा मिलते हैं। परन्तु अब जमाना और है। अब ऐसा भगोडा हमारी यूनियनमें एक भी नही है।

[अशोक और रजीतका प्रवेश]

बलदेव — [उत्सुकतासे] क्या खबर है?

अशोक — खबर क्या होगी, साले कहते है तिथिक्रम नही बदल सकता।

रमेश — मैंने तुमसे क्या कहा था!

बलदेव — [उसकी उपेक्षा करते हुए] रजिस्ट्रारसे मिले?

अशोक — वहीसे तो चले आ रहे हैं।

रजीत — कहता था कि बड़ा अफसोस है, परन्तु समय इतना कम है कि इसका कोई प्रबन्ध नहीं हो सकता।

रमेश — ठीक कहता है यदि कहीं वह तिथिक्रम बदल देनेको तैयार हो जाते तो मैं उन्हें उल्लू समझता।

बलदेव — तुम इन लोगोंके सामने ख्वाहमख्वाह दब जाओगे।

रमेश — [छातीपर हाथ रखकर, व्यंग्यसे] लो, बाबा!

बलदेव — [अशोककी ओर हाथ बढ़ाकर] देखें तो लिखकर क्या दिया है।

रजीत — लिखकर कुछ नही दिया। कहा है कि दफ्तरसे चिट्ठी एक-दो दिनमे भिजवा दी जायेगी।

[रमेश खाँस देता है]

बलदेव — अच्छा, यह बात है ! [मेजपर हाथ पटककर] ऐसे ही सही। मैं भी जानता हूँ इन लोगोंका इलाज। मुझे मालूम है ऐसे अवसरपर मेरा क्या कर्तव्य है, अपने देशके प्रति तथा अपने साथियोंके प्रति, जिन्होंने अपनी शिक्षाका प्रश्न यूनियनके ऊपर छोड़ा है। यह सेनेटवाले सब पूँजीपति है और विद्यार्थियोको अपने स्वार्थका साधन बनाये रखना चाहते है। जबतक मै यूनियनका मन्त्री हूँ, मै ऐसी अनुचित बात कभी नही होने दूँगा। [ऊँचे और गम्भीर स्वरमें] मैं आमरण अनशन करूँगा।

रमेश — [व्यग्यमे] इन्कलाब जिन्दाबाद ! दुनियाके मजदूरो, एक हो जाओ।

बलदेव — बकवास मत करो।

[कठोर, गम्भीर तथा विचारमग्न सूरत बनाकर पलगपर लेट जाता है।]

अशोक — ठीक है, बलदेव ! तुमने इन अफसरोंको सीधा करनेका उत्तम उपाय सोचा है।

रजीत — तुम्हारे दिखाये हुए पथपर चलकर विद्यार्थी अपना अपना उद्देश्य प्राप्त करेंगे।

रमेश — [मुसकराकर बलदेवसे] परन्तु मेरे भाई, अनशन करते ही नहीं लेट जाया करते। यह तो पाँच-सात दिनके बाद शोभा देता है, जब शरीर इतना शिथिल हो जाये कि चलना-फिरना सम्भव न हो।

बलदेव — फिर तुमने मजाक किया!

रमेश — नहीं, मजाक कहाँ कर रहा हूँ! तुमसे तो सहानुभूति प्रकट करना भी व्यर्थ है। कुछ खा-पी तो लो। तुमने चायके बाद अबतक कुछ खाया नहीं। शायद रातको भी न खा सको, तो कल सुबह तक तो बहुत दुर्बल हो जाओगे।

बलदेव — [क्रोधित होकर] बस, बन्द करो यह हँसी-मजाक। यह सोच-विचारका समय है, हँसी-मजाकका नहीं।

अशोक — सचमुच, रमेश, तुम तो हद करते हो। सेनेटकी इस चुनौतीको स्वीकार करके उसे नीचा दिखानेके लिए एक-एक विद्यार्थीकी सहायता चाहिए। और तुम हो कि इस प्रश्नकी गम्भीरताको समझनेकी कोशिश ही नहीं करते।

बलदेव — [क्षीण आवाजसे] नहीं, अशोक, तुम रमेशको नहीं समझे। यह तो अपने स्वभावसे लाचार है। सहायता तो इसे देनी ही पड़ेगी, यही भाग थोड़े ही सकता है।

रमेश — कहो, क्या चाहते हो मुझसे?

बलदेव — [लेटे हुए ही] उपवास तो मेरा निश्चित हो गया। परन्तु उसके बादकी कार्यप्रणाली अभी निश्चित करनी होगी। पहले तो एक वक्तव्य तैयार करना होगा, जिसमें हमारे नियम तथा उद्देश्यका उल्लेख हो। फिर उसे अखबारोंमें छपवाओ।

रंजीत . यह तो अभी हो जाना चाहिए, ताकि कल तक हमारे मन्त्रीकी भीषण प्रतिज्ञाका ज्ञान हो जाये। जब लोकमत हमारे साथ होगा, तो सेनेटकी क्या हिम्मत कि अपने फ़ैसलेपर खड़ी रहे। कल ही से परीक्षा-भवनके सामने धरना देंगे। नतीजा यह होगा कि लड़के परीक्षाके लिए नहीं बैठेंगे और सेनेटको झुकना पड़ेगा।

बलदेव पहले वक्तव्य तैयार कर लो। उसीमें यह सब बातें आ जायेंगी। यह अखबारोंके दफ्तरोंमें शीघ्र ही पहुँच जाना चाहिए [क्षीण स्वरमें] और यह लो दफ्तरकी चाबी। [आँखें मूँद लेता है, मानो बातें करनेसे थकावट हो गयी हो। कुछ देर ठहरकर] पानी!

रमेश अभीसे? अभी तो चाय पिये एक घण्टा भी नहीं हुआ, खानेका समय तो अभी बहुत दूर है। तुम अभीसे तड़पने लगे।

बलदेव [रमेशकी बातोंकी उपेक्षाकर] अशोक, वक्तव्यमें क्या-क्या लिखा जायेगा?

अशोक एक खाका तैयार कर रहा हूँ। देख लो, जो कुछ बदलना चाहो अभी-अभी बदल देते हैं।

[illegible] पढ़ो तो।

[illegible]ोक तुम्हारी ओरसे ही लिखा जायेगा?

[illegible]देव देख लो, मन्त्रीके नाममें जाना चाहिए या अध्यक्षके। क्यों रमेश, रजीत?

[illegible]श उपवास तुम करोगे या अध्यक्ष?

रजीत मन्त्रीके नामसे ही उचित होगा।

अशोक — तो सुनो [पढ़ता है] "स्टूडैण्ट्स यूनियनके मन्त्री, श्री बलदेवने यह वक्तव्य प्रेसको भेजा है। यूनिवर्सिटीके अधिकारियोंने इण्टरमीडियेटकी परीक्षाकी उलटी-सीधी तारीखें निश्चित करके तथा विद्यार्थियोंके प्रतिनिधियों-द्वारा भेजे हुए सुझावपत्रको अस्वीकार करके जो उनके अधिकारोंपर अनुचित हस्तक्षेप किया है, उसका स्टूडैण्ट्स यूनियन पूर्णत विरोध करती है। विद्यार्थियोंने मिलकर यह प्रस्ताव मजूर किया है कि जबतक परीक्षाकी तारीखें बदल कर उनकी अन्य मांगे स्वीकार न की जायेगी, तबतक कोई भी विद्यार्थी परीक्षामें नही बैठेगा। इस प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेके लिए यूनियनके मन्त्री श्री बलदेवने आमरण अनशनका भीषण व्रत धारण किया है। यह उपवास तबतक जारी रहेगा जबतक हमारी सभी शर्तें नही मान ली जायेगी।" क्यों, कैसा है ?

नरेन्द्र — हाँ, ठीक ही है। केवल एक ही जगहपर जरा नरम मालूम होता है। शब्द तीखे लगाओ, ताकि उनको चुभे। इससे उनको यह भी मालूम हो जायेगा कि हमारे इरादे कितने पक्के हैं।

अशोक — कहाँपर बदलना चाहते हो ?

नरेन्द्र — दिखाना जरा कागज। [अशोकके वक्तव्यकी कापी हाथमें लेते हुए] केवल 'अनुचित हस्तक्षेप' काफी नही। यहाँ तो 'अत्याचार' होना चाहिए, बल्कि 'घोर अत्याचार'।

अशोक — [लिखकर] और ?

नरेन्द्र — 'आमरण व्रत' की जगह 'दृढ़ व अटल प्रतिज्ञा' लिखें, तो कैसा रहे ?

रमेश — ' जरूर, जरूर। मैं तो कहता हूँ कि दो-चार बड़े-बड़े शब्दों-का प्रयोग भी अवश्य करो, जैसे कि 'ऐतिहासिक', 'अन्तर्राष्ट्रीय'। यह तो हर लीडरके वक्तव्यमें होते हैं।

बलदेव — और यह वक्तव्य अखबारवालोंको केवल भिजवा देना ही काफी न होगा। तुम्हें स्वयं जाकर देना चाहिए। ताकि कल सुबह सब अखबारोंमें छप जाये। परीक्षा कल ही प्रारम्भ होनेवाली हैं। लड़के-लड़कियोंको प्रातःकाल ही मेरे उपवासका पता चल जाये, तब काम बनेगा।

अशोक — हर अखबारके पहले सफेपर आना चाहिए—परीक्षकोंके पास इतना समय कहाँ होगा कि वे सारा अखबार देख सकें।

बलदेव — और इस प्रस्तावकी एक कापी वाइसचान्सलरको, एक गवर्नरको, एक बाबू राजेन्द्रप्रसादको, एक जयप्रकाश नारायणको, एक गोविन्दवल्लभ पन्तको ।

रमेश — एक सर आगाखाँको, एक जनरल मैकार्थरको ।

अशोक — तुम कभी गम्भीर होना भी सीखोगे या नहीं? [क्रुद्ध होकर] यहाँ हमारे लीडर [बलदेवकी ओर संकेत करके] जान देनेको उद्यत हैं और तुम्हें अपने बेहूदा मजाक सूझते हैं।

देव — [अशोकको शान्त करनेका प्रयत्न करते हुए] तुम इसकी बातोंपर ध्यान न दो। इसका स्वभाव ही ऐसा है। बेचारा करे भी क्या—अभीतक अपनी जबानपर तो काबू पा नहीं सका। तुम जाओ अपना काम करो। प्रेसमें छपवाने-का प्रबन्ध करो।

अशोक	केवल प्रेसमें भिजवा देना ही तो काफी नही होगा। इसके बाद भी तो काम जारी रखना चाहिए।

रजीत	वह तो बहुत आवश्यक है। एक तो जलूस निकालना होगा।

रमेश	काला झण्डा भी तो बनवाना होगा।

रजीत	[रमेशको घूरता है] काला झण्डा क्यो ? अपनी यूनियन-का झण्डा जो है।

अशोक	परीक्षा-भवनमे-से निकल आनेके लिए विद्यार्थियोंसे कहना होगा।

बलदेव	उनसे यह भी तो कह सकते है कि हालमे जाये अवश्य, परन्तु कलम उठानेसे इनकार कर दे।

अशोक	नही, जलूस अधिक प्रभावित कर सकता है। आम जनता-को भी तो साथ मिलाना है। फिर यूनिवर्सिटीके रजिस्ट्रारके दफ्तरके सामने धरना देना होगा।

रमेश	पुलिसवालोको भी समझा देना कि लाठियाँ बहुत जोरसे न चलाये। अक्सर पुलिसवाले असभ्य होते है। वह नही समझते कि जलूस मजदूरोका है या विद्यार्थियोका। न ही उन्हे इतनी समझ होती है कि शिक्षित लोगोमे शारीरिक बल कम होनेसे वे लाठीका वार नही सह सकते।

बलदेव	तुम नही मानोगे, रमेश ?

रजीत	प्रेस फोटोग्राफर भी तो चाहिए जो बलदेवका फोटो खीचे।

रमेश	कल नही, दादा! तुम लोग सब कुछ भूल जाते हो और यदि मै कुछ कहता हूँ, तो टोकने लगते हो।

अशोक	क्यो, कल क्यो नही ?

रमेश — फोटो परसों खिचवाना, जब खाये-पिये चौबीस घण्टे हो जायें। कुछ कमज़ोर दिखाई देगा, कुछ दाढ़ी बढ़ जायेगी। भला कहीं बढ़ी हुई दाढ़ी-मूँछोंके बिना भी कोई शहीद देखा है?

बलदेव — फिर वही व्यंग्य! कोई भी तो बात सीधी नहीं करते।

रमेश — तुम्हें यही दिखाई देता है तो यही सही। कहो तो मैं चला जाऊँ। तुम तीनों आपसमें फैसला करते रहो।

अशोक — नहीं, नहीं, तुम नहीं जा सकते। बलदेवके पास हर वक़्त दो-चार आदमी अवश्य रहने चाहिए। हमें ज़रा जाना है। [घड़ी देखकर] पहले तो अखबारवालोंके पास जायेंगे। उसके बाद प्रभातने खानेपर बुलाया है।

बलदेव — दावत है क्या?

रजीत — हाँ। वह मटर, पनीर और कचौरी पकवा रहा है।

बलदेव — ओह!

रजीत — एक टोकरा बनारसी आमोंका उसके चाचाने भेजा है। यह अनशनका झंझट न होता तो तुम भी चलते।

अशोक — अब भी तो चल सकते हो। उपवास है, तो क्या – न खाना कुछ भी। गप-शप तो चलेगी।

बलदेव — [मुँहमें पानी आ रहा है] नहीं, नहीं, तुम जाओ। मुझे कुछ कमज़ोरी-सी मालूम हो रही है। पानी!

अशोक — [पानीका गिलास बढ़ाते हुए] अच्छा तो दोस्त, कल सुबह तकके लिए विदा।

[दोनों जाते हैं । बलदेवकी माँ आती है । रमेश प्रणाम करता है]

माँ — [रमेशसे] कैसे हो, बेटा ? बहुत दिनसे दिखाई नही दिये – क्या पढ़ाईमे लगे रहते हो ? अरे बलदेव, तुम क्या लेट गये ? तबीयत तो ठीक है ? चलो उठो, खाना तैयार है । रमेश, तुम भी खाना खाकर जाना । तुम्हारी मनभाती चीज़ बना रही हूँ, तन्दूरकी रोटी और सरसोका साग ।

रमेश — यह तो कृपा है आपकी, [मुसकराकर] उठो, बलदेव ! क्या विचार है ?

बलदेव — मैं तो खाना नही खाऊँगा जबतक इसका कुछ फैसला न हो जाये ।

माँ — किसका फैसला ?

बलदेव — यह जो अत्याचार हम लोगोपर हो रहे है ।

माँ — कौन पैदा हुआ तुमपर अत्याचार करनेवाला, नाम तो बताओ मुझे उसका ।

बलदेव — माँ, तुम नही समझती, मेरे साथियोने मुझे बडी ज़िम्मेदारीका काम सौपा है, उनके अधिकारोकी रक्षा करना । युनिवर्सिटीवालोंने परीक्षाकी तारीखें ऐसी निश्चित की हैं कि लड़के घबरा उठे हैं । इन लोगोको लड़कोको फेल करनेमे कुछ खास मज़ा आता है । [जोशसे] परन्तु हम भी दिखा देंगे इन प्रोफेसरोंको ! [उठ बैठता है] यह जो आमरण उपवासकी प्रतिज्ञा मैंने की है

माँ — [घबराकर] कैसा आमरण उपवास, कैसी परीक्षा ? तुम्हें

तो इस साल कोई परीक्षा नही देनी है। तुम क्यों भूखे रहोगे ? [उसके मायेपर हाथ फेरते हुए] मेरे लाल, अनशन करें वे जिनके सिरपर बला आयी है, तुम क्यों दूसरोंके लिए मुसीबत उठाओ। [भर्रायी हुई आवाजमें] न, मुझे अपने बेटेको महात्मा गान्धी नही बनाना है।

बलदेव लेकिन, माँ, तुम क्या अकेली ही माँ हो ? क्या उनकी माँ नही जिन्हें मुसीबतने घेरा है। मेरा यह कर्तव्य है कि मैं अपने साथियोंके लिए अपने-आपको बलिदान कर दूँ। [रुँधे हुए गलेसे] माँ, तुम धन्य हो जाओगी। तुम्हें अपने बेटेपर गर्व होगा।

माँ [आँखोंमें आँसू लाकर] नही, मुझे ऐसा महात्मा बेटा नही चाहिए। दुनिया ऐसोंको भी नही जीने देती। देखा नही, गान्धीजी जिनके लिए सारी उमर कष्ट उठाते रहे, उन्हींमें-से एक उनका काल बन गया।

बलदेव [माँकी ममतासे प्रभावित होकर अपने-आपको सँभालते हुए] पानी !

रमेश [पानी देते हुए] तुम घबराओ नहीं, चाची ! यह तो पागल है। अभी ठीक करता हूँ इसे मैं। आप चलिए, खाना परसिए। मैं अभी लेकर आया इसे।

माँ [जाते हुए] जल्दी करना बेटा, ठण्डी रोटीका कोई स्वाद नही रहता।

रमेश [बलदेवसे] क्यों, क्या खयाल है ?

बलदेव खयाल क्या है ! पगले हुए हो तुम ? कैसे खा सकता हूँ ! मुझे पानी पिलाओ जरा।

रमेश — कितना पानी पिओगे तुम, हर दो मिनिट बाद पानी। पानी।

दलदेव — क्या जी मचलाता है।

रमेश — इसीलिए तो कहता हूँ खाना खा लो।

दलदेव — फिर वही बहस, मैं नहीं खाता।

रमेश — अच्छा, तो पानीमें थोटा नीबूका रस डाल लो।

दलदेव — फिर उपवास कैसा हुआ ?

रमेश — अरे नीबू तो महात्माजी भी डाल लेते थे। तुम्हारा उपवास उससे तो कड़ा नहीं है।

दलदेव — [सोचता हुआ] तो दे दो थोटा।

रमेश — जरा-सा चीनी भी डाल लो। तबीयत साफ हो जायेगी। कहो तो जरा-सी बर्फ मँगवा लूँ।

दलदेव — कैसी बहकी-बहकी बातें करते हो तुम। मैंने अनशनका प्रण किया है और तुम

रमेश — तो मैं तुम्हें अन्न खानेको तो नहीं कह रहा हूँ। पानी ही तो है। नीबू और चीनी डालनेसे क्या होता है। कल डॉक्टर बुलाना पड़े और वह दवाई दे जाये, तो क्या करोगे ?

दलदेव — अच्छा लाओ, गुर, कुछ भी दो। बड़ी प्यास लगी है।

रमेश — [मुसकाकर] अभी भिजवाता हूँ [उठकर दरवाजे तक जाता है। फिर मुड़कर देखता है। गम्भीर सूरत बनाकर] कहो तो दो-चार बिस्कुट भी ले आऊँ, क्या ?

[बलदेव] चुप रहो।

[परदा]

[दूसरा दृश्य। समय दूसरे दिन सुबह आठ बजे।]

[बलदेवका कमरा। बलदेव पलंगपर सोया खर्राटे ले रहा है। उसका पिता कमरेमें आता है।]

पिता — बलदेव! [हाथसे हिलाकर] ओ बलदेव!

बलदेव — [हड़बड़ाकर उठ बैठता है] जी, पिताजी!

पिता — आठ बजनेको आये, आज उठना नहीं है क्या?

बलदेव — रातको नींद जरा देरसे आयी, इस वजहसे

पिता — खाना जो नहीं खाया, नींद कैसे आती! चलो उठो, हाथ-मुँह धोकर नाश्ता करो।

बलदेव — परन्तु पिताजी, मैंने तो उपवासकी प्रतिज्ञा की है।

पिता — बेवकूफ मत बनो। कैसा उपवास? तुम लड़कोंका तो दिमाग फिर गया है। परीक्षा है, कोई मज़ाक नहीं।

बलदेव — लेकिन हमारे अधिकार भी तो हैं। हम कोई पशु तो नहीं। हमारा भी व्यक्तित्व है।

पिता — बस, यही दो-चार, बड़े-बड़े वाक्य तुम लोगोंने सीखे हैं, और सीखा ही क्या है! हरामखोर हो तुम लोग। हम लोगोंने भी परीक्षाएँ दी थीं। तुम्हारा बस चले तो तुम बैठे-बिठाये डिग्रियाँ लेना चाहोगे।

बलदेव — सेनेटका भी तो कुछ फर्ज है कि परीक्षाकी तारीखें निश्चित

करते समय विद्यार्थियोंके सुभीतेपर ध्यान दें। हमने जो यूनियन बनायी है, वह उसके मन्त्रीसे सलाह क्यों नहीं लेती? पीछे गड़बड़ होनेका कोई बहाना ही न रहे।

पिता — क्या यार है वह तुमसे? पहले तो तुम लोग कहोगे कि तिथिक्रम बनानेसे पूर्व तुम लोगोंसे स्वीकार कराया जाये। फिर कहोगे पर्चे तुम्हारे परामर्शसे बनाये जायें। फिर यह माँग जमाओगे कि पर्चे जाँचनेवाले तुम्हारे चुने हुए हों। इससे आगे बढ़ोगे ना चाहोगे कि किताबें परीक्षा-भवनमें साथ ले जानेकी आज्ञा हो। कोई अन्त भी है ऐसी माँगोंका? डिग्रियाँ बी० पी० करके लड़कोंके घर ही भिजवा दी जायें?

बलदेव — [दबी हुई आवाजमें] हम कोई पढ़ाईसे मन थोड़े ही चुराते हैं।

पिता — [चिढ़कर] मैं जानता हूँ सब पढ़नेवालोंको। एक तुम्हीं हो न, बड़े मन्त्री बने फिरते हो विद्यार्थियोंके। जानते हो तुम उन्हें गलत रास्तेपर ले जा रहे हो? [बलदेव कुछ कहना चाहता है, पर पिता रोक देता है] बस, मैं और कुछ नहीं सुनना चाहता। तुम्हें व्यर्थ बहस करनेकी बहुत आदत हो गया है। 'खाना नहीं खाऊँगा', 'उपवास आमरण होगा' इत्यादि उल्टी-सीधी बातें कर-कर मुझको न डराओ। सीधी तरह उठो और तैयार होकर आओ। [उधर दरवाजे तक जाता है, फिर मुड़कर] इस समय तो मैं जा रहा हूँ दफ्तर। लौटनेपर मैं कोई शिकायत नहीं सुनना चाहता। समझे। इस घरमें रहना है तो यहाँका नियम पालन करना होगा, नहीं मानना तो अपना बिस्तर उठाओ और

जाओ यूनियनके दफ्तरमें जिसके लिए इतने दीवाने हो रहे हो। [जाता है]

[बलदेव उठकर शृंगार-मेजके पास जाता है। गालों तथा ठोड़ीपर हाथ फेरता है कि दाढ़ी कुछ बढ़ी या नहीं। इतनेमें कोई दरवाजा खटखटाता है। वह झटसे पलगमें घुस जाता है और इस प्रकार करवटें लेने लगता है मानो रात बड़ी मुश्किलसे कटी हो। अशोक और रजीत आते हैं।]

अशोक — कहो, कैसे हो, भाई ?

बलदेव — रात-भर जागकर बितायी। सोचता रहा कि किस प्रकार सफलता मिले। अबतक तो वक्तव्य भी छप गया होगा। पानी !

[रजीत पास रखी सुराहीमें-से पानी ढालता है। अखबारवालेकी पुकार नीचेसे सुनाई देती है।]

अशोक — मैं अभी आया। [जाता है]

बलदेव — [रजीतसे पानी लेकर] तुमने सुबहसे कोई अखबार नहीं देखा ?

रजीत — 'हिन्दुस्तान टाइम्स' देखा। उसमें तो कुछ नहीं था। 'स्टेट्समैन' ने भी नही दिया।

बलदेव — [जरा तेज होकर] तुम लोगोंने वक्तव्य इन अखबारोंके दफ्तरोंमें पहुँचाया भी था या मुर्गा ही खाते रहे ? [अशोक अखबार हाथमें लिये मुँह लटकाये आता है] क्यों, है कोई खबर ?

अशोक — 'नेशनल हेरल्ड' में तो नहीं है। 'लोक-वाणी' में देखता हूँ। [अखबारके पन्ने पलटता है। थोड़ी देरके लिए मुसकिल जाता है]

[illegible] — क्यों है ?

अशोक — हाँ, लेकिन उन्होंने तुम्हारा नाम गलत छापा है।

[illegible] — [अखबार छीनकर] देखें तो। [पढ़ता है] "महदेवने यह वक्तव्य प्रेसको भेजा है, सुना जाता है कि कुछ विद्यार्थियोंके निष्क्रमणसे शिकायत प्रकट करनेपर यूनियनके एक सदस्यने उपवास शुरू कर दिया है। शायद इस ख्यालसे कि सेनेट इस तरीकेसे मान जाये " [गुस्सेमें अखबार फेंक देता है] जला देना चाहिए ऐसे छापेखानोंको। लिखकर भेजा कुछ और, छापते कुछ और ही हैं। और इन बागी अखबारोंको तो देखो, जो खबरें जनतासे सम्बन्ध रखती हैं उन्हें तो छापते नहीं, वैसे कोई भी मन्त्री दुनियाके किसी भी कोनेसे कैसी ही फजूल बात कहे तो भी उसे पहले सफेपर मोटे-मोटे अक्षरोंमें छाप दिया जाता है।

पूँजीपति हैं ये सबके सब। हमारा प्रेस भी पूँजीपतियोंके तलवे चाटता है।

युवा, बुड्ढे — सब काली पट्टियाँ बाँधे, रोते हुए तुम्हारे साथ होंगे। तुम्हारा खुला मुख सूर्यकी किरणोंमें चमक उठेगा। चारों ओरसे फूलोंकी वर्षा होगी। और जब शामके धुँधले प्रकाशमें तुम्हारी चिता बनायी जायेगी तो उसकी लपटें सीधी आकाश तक पहुँचेंगी।

बलदेव — [आँखें मूँदकर, क्षीण स्वरमें] पानी!

रणजीत — और यही नहीं, जलूस सारे शहरका चक्कर काटता हुआ यूनिवर्सिटी हालके सामनेसे होकर जायेगा। बड़े-बड़े लीडर तुम्हारे बलिदानकी प्रशंसा करेंगे। यूनिवर्सिटीके इतिहास-में तुम्हारा नाम स्वर्ण-अक्षरोंमें लिखा जायेगा। दो साल तक सब परीक्षाएँ बन्द रहेंगी। कोई कॉलेज नहीं जायेगा।

अशोक — तुम्हारी चिता-भस्म सब यूनिवर्सिटियोंको भेजी जायेगी।

बलदेव — [खीझकर] पानी!

रणजीत — माफ करना, अभी देता हूँ। [पानी देता है] अशोक, अब हमें चलना चाहिए। नौ बज गये, साढ़े नौ तक तो वहाँ पहुँचेंगे। दस बजे तो परचा शुरू हो जाता है। परीक्षा-भवनके दरवाजेपर धरना देंगे, ताकि कोई विद्यार्थी अन्दर न घुसने पाये। नहीं तो हमारी सारी मेहनत बेकार हो जायेगी।

अशोक — हाँ, भाई, चलो। शामके जलसेका भी तो प्रबन्ध करना है।

लदेव — तो क्या अभीतक कुछ भी नहीं किया?

अशोक — कहाँ किया, रातको खानेपर ही इतनी देर हो गयी। जो लोग वहाँ थे, उनसे कह दिया था। तुम्हारे उपवासकी

खबर तो अबतक फैल चुकी होगी ।

बलदेव — कैसा रहा खाना ? खूब स्वादिष्ट होगा ?

अशोक — खाना तो अच्छा था, परन्तु तुम्हारे बिना सब अधूरा लगा । सारे वक्त तुम्हारी ही बातें करते रहे । कैसे महान् शक्तिशाली वीर हो ! यह उमंग और ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा !

रजाक — चलो, अब कुछ आगेकी सोचो ।

[जाते हैं । रमेश आता है । उसे देख बलदेव खुश हो जाता है ।]

रमेश — तुम अभीतक पलंगपर ही पड़े हो ?

बलदेव — और क्या करूँ ? तुम बताओ खबर क्या है ?

रमेश — खबर यही है कि तुम अपना उल्लू बना रहे हो । मैं अभी परीक्षा-भवनकी ओरसे आ रहा हूँ । सभी वहाँ थे । कालेजमें भी जमाते लगी हैं । और तुम यहाँ दीवाने बने बैठे हो ।

तो और क्या करूँ ?

रमेश — देखो, बलदेव, सच बात कहता हूँ। यदि तुम लड़ रहे होते किसी उद्देश्यके लिए तो मैं सब कुछ त्याग कर तुम्हारा साथ देता। परन्तु यह तो बचपन दिखाना है। तारीखके लिए झगड़ना। ऐसी छोटी-छोटी बातोंपर उत्तेजित होना तुम्हें शोभा नहीं देता। इनसान अपना हाथ उस चीज़में डाले जहांसे कुछ निकाल लेनेकी आशा हो, परन्तु यह हारकी बाजी है। इसमें अपनी शक्ति नष्ट करना बेकार है।

बलदेव — यह बात तो तुम ठीक कहते हो। मैं भी अब यही सोचता हूँ कि हमें अपना आन्दोलन बहुत दिन पहले शुरू करना चाहिए था। और उन्हें देखो न, अशोक और रजीत रात-को खाना ही खाते रहे। अभीतक शामके जल्से तथा दोप-हरके जलूसका ही प्रबन्ध नहीं किया।

रमेश — तभी तो कहता हूँ, छोड़ो इस झंझटको।

बलदेव — परन्तु एक बार प्रतिज्ञा जो कर चुका हूँ, उसे कैसे तोड़ूँ। अब तो सिद्धान्तोंका सवाल है।

रमेश — सिद्धान्त! वह क्या चीज है? सब मनुष्यके अपनी इच्छा-नुसार तथा समयानुसार बनाये हुए ढोंग हैं।

बलदेव — परन्तु सोचो तो, यह बात कितनी फैल चुकी होगी। और फिर यूनियनकी कार्यकारिणी सभाका वार्षिक चुनाव पन्द्रह-बीस दिनमें होनेवाला है। मैं अध्यक्षके पदके लिए खड़ा होना चाहता हूँ। अध्यक्ष बननेकी आशा तभी हो सकती है जब इस झगड़ेमें जीत हमारी हो। फिर जहां-जहां विद्या-र्थियोंकी कान्फरेन्सें होंगी मैं प्रतिनिधि बनकर जाऊंगा, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, शायद यूरोप, अमेरिकाका भी

चक्कर ला जावे। फिर दो सालमें पढ़ाई समाप्त करके असेम्बलीके चुनावके लिए प्रयत्न करूँगा।

रमण — और यदि इस झगड़ेमें हार गये तो ?

वसन्त — तब तो खेल बिगड़ जायेगा

रमण — वो खेल बिगड़ता ही दिखाई देता है।

वसन्त — तो कोई तरीका बताओ।

रमण — उपवास तोड़ दो। साथियोंसे मिलकर खाओ-पिओ। हो जाये एक पार्टी।

वसन्त — परन्तु उपवास तोड़नेका कोई बहाना भी तो हो।

रमण — बड़ी सीधी बात है, एक वक्तव्य और भेजो प्रेसको कि सारा[?] निरन्तर आग्रह करने तथा आश्वासन दिलानेपर

वसन्त — पर आग्रह और आश्वासन है कहाँ ?

रमण — उसका प्रबन्ध मैं किये देता हूँ। मेरे कुछ मित्र अमृतसरमें हैं, कुछ लुधियानेमें। उनसे कहता हूँ कि तुम्हारे नाम तार भेजें और टेलीफोन करें।

बलदेव	नही, नही, बाईमचान्सलरका नाम न लिखो।
रमेश	अच्छा, तो काटकर यूनिवर्सिटीके अधिकारी-वर्ग कर देता हूँ।
बलदेव	[कुछ सोच-विचारके बाद] नही भैया, तुम कोई गोल-मोल नाम लिखो।
रमेश	घबराते क्यो हो, कौन जाँच करने आयेगा।
बलदेव	कुछ कहा नही जा सकता। तुम यो लिखो। "कुछ ऐसे जिम्मेदार लोगोंके कहनेपर जिनका यूनिवर्सिटीसे घनिष्ठ सम्बन्ध है।"
रमेश	अच्छा, यो ही सही। [फिरसे लिखता हुआ] "स्टूडेण्ट्स यूनियनके मन्त्री बलदेवने एक वक्तव्यमें कहा है सहस्रा लोगोंके पत्र, तार, टेलेफोन-द्वारा तथा स्वय आग्रह करनेपर और कुछ ऐसे जिम्मेदार लोगोंके आश्वासन देनेपर, जिनका यूनिवर्सिटीसे घनिष्ठ सम्बन्ध है, मैंने अपना उपवास समाप्त कर देना स्वीकार कर लिया है। मुझे पक्का भरोसा है कि हम विद्यार्थियोंके बुनियादी हक हमें दिये जायेंगे तथा जो अत्याचारी नियम यूनिवर्सिटीकी ओरसे लगाये गये है उनका खण्डन किया जायेगा" अब तो ठीक है ?
[illegible]देव	हाँ, ठीक ही मालूम देता है।
[illegible]मेश	तो उठो अब। हजामत करो। खा-पी लो और फिर शामको सिनेमा चलेंगे।
[illegible]दे	परन्तु अभी कैसे खाऊँ ? पत्र, तार, टेलेफोन तो अभी आये नही।

रमेश यह। कमरेमें कौन देखने आता है।

[बलदेव केवल चुप रहकर अपनी अनुमति प्रकट करता है।]

रमेश अच्छा, तुम इस वक्तव्यको अपनी लिखाईमें तो लिखो। मैं अभी आता हूं।

[जाता है। बलदेव लिखना शुरू करता है। रह-रहकर दरवाजेकी ओर देख लेता है। थोड़ी देर बाद रमेश हाथमें चार पुड़ियाँ लिये लौटता है। वह एक-एकको खोलकर पूरी, कचौरी, नमकीन तथा मिठाई बलदेवके सामने मेज-पर रखता जाता है।]

[क्रमशः]

गृह-लक्ष्मी

[आधुनिक ढंगसे सजा हुआ गोल कमरा। उसकी बड़ी-बड़ी खिड़कियोंसे [illegible] बाहर आने-जानेवाले दिखाई देते हैं। सोफेके [illegible] एक [illegible] मेज रखी है। [illegible] प्लेट-प्याला लगा रहा है। बाहरसे [illegible] आवाज आती है। कमला खिड़कीके पास जाकर बाहर [illegible] है। फिर अन्दर आ जाती है।

बाहर [illegible] आवाज, फिर झटकेसे दरवाजे खुलने तथा बन्द होने-की आवाज आती है। ललिता कमरेमें आती है। उसकी उमर [illegible] [illegible] साल है। देखनेमें चुस्त और सुन्दर है। बगलमें हैण्ड-[illegible], हाथमें [illegible] लिफाफे लिये हुए है। उसके साथ [illegible] [illegible] पत्रिकाएँ लिये। ललिता लिफाफे सोफेपर रखती है। फिर स्वयं उसपर लेट जाती है।]

ललिता — [illegible]! मैं तो थक गयी।

कमला — [आरामकुरसीपर बैठकर सिर पीछे टिकाकर पत्रिकाओंके पन्ने पलटकर छपी हुई अभिनेत्रियोंकी तसवीरें देखती हुई]
हाँ, आनन्द आ गया आज! कितनी चीजें थीं वहाँ! वह [illegible] अभीतक मेरी आँखोंके सामने [illegible] है। क्या अच्छा होता जो तुम वह खरीद लेतीं।

कैलाश — हुजूर, मेम साहबने खुद चीज़े दी थी, और कहा था बस यही है।

ललिता — मोटर चली गयी ?

[कैलाशके जवाब देनेसे पहले ही मोटरके जानेकी आवाज़ आती है]

ललिता — कुसुम, इन सब चीजोंको अन्दर रखवा दो, तुम्हारे पापा-ने आते ही इन्हें देख लिया तो आफत आ जायेगी।

कुसुम — पापाका तो जैसे पैसा खर्च करते दिल बैठा जाता है।

ललिता — [कैलाशसे] और देखो, चाय जरा जल्दी ले आना। [कुसुमसे] सिरमें दर्द होने लगा है।

कुसुम — मैं मुँह-हाथ धोकर तैयार हो जाऊँ। लीलाने शामको आनेको कहा था, हम दोनो कॉफी हाउस जा रही हैं। कैलाश, कोई चिट्ठी है ?

[कैलाश पारसल वहीं रखके चिमनीपर पडे दो लिफाफे उठाकर देता है। कुसुम लिखाई पहचाननेकी कोशिश करती है]

ललिता — किसकी है ?

कुसुम — आपके ही नाम है। खोलूँ ?

ललिता — हाँ देखो तो कहाँसे आयी है ?

सुम — [लिफाफे खोलते हुए] यह तो बिल है।

ललिता — अरे, रख दो। ये पारसल भी अन्दर रखो। महीनेका शुरू

है अभी छह-सात दिन आते ही रहेंगे। [आँखें बन्द कर लेती है]

कुसुम [उठकर दरवाजेकी ओर जाते हुए रास्तेमें ललिताके सोफेके पास रुककर] माँ, तुम्हारे बुन्दे तो खूब खिल रहे हैं। पुखराज ऐसे चमक रहे हैं जैसे हीरे हों।

ललिता [उत्सुकतासे उठते हुए] सच ?

कुसुम और नहीं तो क्या ?

ललिता तब तो सौदा बुरा नहीं रहा। आजकल तो बहुत-सी औरतें झूठे गहने पहनने लगी हैं। इनका तो, खैर, किसीको क्या सन्देह होगा। [फिर सिर पकड़ती है] कुसुम, जा, जरा बैरागीसे कह एक प्याला चाय ले आये, जल्दी।

कुसुम पापा तो अभी आये नहीं।

ललिता आते ही होंगे, पाँच तो बज गये।

[कुसुम जाती है। दूरसे मोटरके हॉर्नकी आवाज आती है। ललिता जल्दीसे कुछ लिफाफे कोनेमें पड़ी मेजपर रख देती है। फिर वे दोनों लिफाफे तसवीरके पीछे रख देती है। बैरागी चाय लाता है। रामबाबू कमरेमें आते हैं]

रामबाबू [इधर उधर देखकर] मोहन और कुसुम कहां है ?

ललिता मोहन तो मैटिनी शो देखने गया है, साढे पांच बजे आयेगा। कुसुम अन्दर तैयार हो रही है, अभी आती होगी। [हाथोंसे बाल सँवारती है] आप चाय पीजिए। सारे दिन काम करते-करते थक गये होंगे।

रामबाबू [पत्नीके आदरसे मोहित होकर] ललिता, थकान तो घर पहुंचते ही दूर हो जाती है। जब तुम्हें और बच्चोंको हँसते हुए देखता हूँ तो दुनियाकी सब मुसीबतें भूल जाता हूँ।

[ललिता लजाते हुए नखरसे सिर नीचा कर लेती है। कानोंके बुन्दे ढलते सूर्यकी रोशनीमें झिलमिलाते हैं]

रामबाबू आज खानेको क्या मिलेगा ?

ललिता [रसगुल्लोंकी प्लेट आगे बढ़ाकर] यह लीजिए।

रामबाबू [एक रसगुल्ला उठाकर मुँहमें रख लेते हैं] यह रसगुल्ले तो बड़े स्वादिष्ट हैं। चांदनी चौकसे मँगवाये हैं शायद ?

ललिता हां।

रामबाबू आज इतनी कृपा क्यों ?

ललिता ऐसे ही।

रामबाबू [ललिताके पास सोफेपर बैठकर] नहीं, सच बताओ।

[कुसुम आती है]

कुसुम पापा, हम आज चांदनी चौक गये थे। खूब मज़ा किया, चाट खायी, कांचकी चूडियां खरीदीं, [हाथ बढ़ाकर दिखाती है] बरतनोंकी दुकानोंपर गये। [पापाकी सूरत

हुए गम्भीर-सी हो जाती है] आपके पसन्दकी चीजें भी लाये हैं। यह देखो, खुर्चन, आपको बहुत पसन्द है न। हम कोई ऐसे स्वार्थी थोडे ही हैं कि अपने पापाको भूल ही जायें।

रामदास अच्छा ! यह बात है ! तब तो और भी बहुत कुछ आया होगा। [ललिताकी ओर देखते हैं।]

ललिता [प्यालेमें चाय बनाते हुए] मेरा तो जानेका कोई विचार भी नहीं था। मालतीका टेलेफोन आया कि स्टेशन-पर एक नुमाइशी गाडी आयी है, कहते हैं वहाँ बहुत-सी अच्छी अच्छी चीजें हैं। मैंने सोचा साथ अच्छा है, चलो देख आयें। आप ही तो उस दिन कह रहे थे कि नुमाइशों-से बहुत सी नयी-नयी बातोंका पता चलता है। [प्याला देती है]

रामदास [चायका प्याला पकडकर] हाँ, तो मैंने कब कहा है कि जानेमें हर्ज है ?

रामबाबू [तनिक घबराकर] यह तो बताओ लायी क्या-क्या हो ?

[मोहन आता है]

मोहन [पापाको देखकर भाँप लेता है कि कोई बहस हो चुकी है या होनेवाली है । फिर कुसुमकी चूड़ियोंपर नजर जाती है] हूँ ! हूँ !

कुसुम [मुसकराकर] हूँ ! हूँ !

मोहन आज बाज़ारका चक्कर लगा है शायद ?

ललिता [बात टालनेका प्रयत्न करते हुए] चाय पीयोगे, मोहन ? [पतिसे] आपकी चाय तो ठण्ढी हो गयी होगी, दूसरा प्याला बनाये देती हूँ ।

मोहन चाय तो पीछे, पहले खुर्चन । [प्लेटमें-से उठानेको झुकता है । माँके कानोंपर नजर जाती है] हूँ ! हूँ !

[ललिता मुसकरा देती है]

रामबाबू [चिढ़कर मोहनसे] यह क्या है, जबसे आये हो 'हूँ, हूँ' कर रहे हो ? सीधी बात क्यों नहीं करते ?

मोहन पापा, आज तो बड़ी जबरदस्त खरीदारी हुई दीखती है ! माँके बुन्दे तो देखो कैसे चमक रहे हैं !

रामबाबू [कृत्रिम मुसकराहटसे] ओहो ! ये तो मैंने देखे ही नहीं थे । आज ही लिये हैं क्या ? जरा इधर देखो तो ।

ललिता [शरमाती है] आपको क्या ? आप तो कभी देखते ही नहीं मेरे पास क्या है, क्या नहीं ।

रामबाबू जानता क्यों नहीं, सब जानता हूँ । परन्तु आजकल चीज़ोंके

दाम तो देखो, लूट मच रही है। [मिठाईकी प्लेट मेजपर रखके ललिताकी ओर हाथ बढाते हुए] दिखाओ तो।

[ललिता बुन्दे उतारकर उन्हे देती है]

रामबाबू [देखकर] कितनेके मिले ?

ललिता सस्ते ही मिल गये।

रामबाबू फिर भी।

ललिता सौ रुपयेकी जोडी।

रामबाबू सौ रुपये !

ललिता हां, चीज तो देखो !

रामबाबू मगर नकली हुए तो इन राह चलते दुकानदारोका क्या भरोसा ?

कुसुम पापा, आपको तो कुछ भी पसन्द नही आता।

ललिता भले न आये। अबकी बार कोई इनके पैसोसे थोडे खरीदे है।

रामबाबू किसीने भेट किये है क्या ?

ललिता नही, मौसीकी लडकीकी शादीमे जो रुपये मिले थे उसके मैने बुन्दे खरीद लिये।

रामबाबू और उसकी शादीमे जो खर्च हुआ था, वह ?

ललिता कौन-सा खर्च ?

रामबाबू किराया खर्च करके लखनऊ गयी थी या नही ?

ललिता वह क्या, जानेका किराया आपने खर्चा, आती बार उन्होने टिकिट ले दिया। बस बराबर हो गया, खर्च क्या हुआ ?

रामबाबू [और भी खीझकर] और बहनको जो उपहार था वह ?

ललिता वह तो पिछले महीनेके हिसाबमें था।

रामबाबू तो उसे खर्चा नही कहते ?

ललिता आप ही तो कहा करते है कि पिछली बातें जाने दो, आगेसे हिसाब ठीक रखा करो।

रामबाबू बहुत खूब ! अच्छा इस महीनेका हिसाब क्या है ?

ललिता वह भी सुन लेना। पहले चाय तो पी लो।

रामबाबू बस, और नही चाहिए मुझे।

ललिता अच्छा, एक रसगुल्ला और ले लो। ये तो आपको पसन्द हैं।

रामबाबू नहीं, और नही चाहिए। तुम हिसाब बताओ। मुझे और भी काम करना है।

ललिता क्या काम ?

रामबाबू डिप्टी कमिश्नरसे मिलने जाना है।

ललिता वापस आकर सही।

रामबाबू नही ! अभी हो जाये तो ठीक है।

ललिता जैसी आपकी इच्छा। [कुसुमसे] वह बिल कहाँ है ?

रामबाबू कैसे बिल ?

कुसुम एक तो चीनीके बरतनोंका है।

रामबाबू चीनीके बरतनोंका ?

ललिता चीनीके बरतनोंका नही, शीशेके बरतनोंका। उस दिन शीशेका जग टूट गया था। [जरा दृढतासे] आपको याद तो होगा कैसे टूटा था ? उसके बदलेमें और लेने गयी थी।

वहाँ जाकर देखा केवल जग ही नहीं उसके साथ ग्लास भी मिल रहे थे। मैंने सोचा शीशेके बरतन तो रोज ही टूटते हैं। बराबर कौन लेने आयेगा। अब पूरा सेट मिल रहा है तो ले ही चले।

बिल कहाँ है?

[मेजपर प्लेटोंके नीचे देखती है] यहीं तो था।

वहाँ तसवीरके पीछे रखा है।

मोहन, जरा लाओ तो।

[मोहन बिल लाकर रामबाबूको देता है]

[बिल देखकर] यह तो पैंतीस रुपयेका है!

हाँ।

[क्रोधपूर्वक] एक पाँच-छह रुपयेके जगके बदले पैंतीस रुपये बरबाद कर दिये?

माफ कीजिए, जग छह रुपयेका नहीं, दस रुपयेका था।

और जो लायी हो, वह?

वह तो पूरा सेट पैंतीसका है।

जग कितनेका है?

तेरह रुपयेका। [यकायक उठकर बैठ जाती है, जैसे कोई नयी बात सूझी हो। हाथ बढ़ाकर] लाइए मेरे तीन रुपये।

र [तेवर चढ़ाकर] तीन रुपये कैसे?

[भौंहें चढ़ाकर] इतना सीधा हिसाब आपकी समझमें नहीं

आता ? जो जग आपने तोडा था, उसकी कीमत थी दस रुपये, जो उसके बदलेमें खरीदना पडा उसके दाम है तेरह रुपये, तीन आपको मेरे देने हुए या नही ? लाइए ! [हाथ पसारती है] ।

[रामबाबू हिचकिचाते हैं]

ललिता — लाइए, लाइए, पहले मेरे तीन रुपये दीजिए, पीछे और बात कीजिएगा ।

रामबाबू — रुपये मैं नही दूँगा ।

ललिता — देंगे कैसे नही, एक तो चीजोका नुकसान करते है, दूसरे पैसे देनेसे भी इनकार ?

रामबाबू — इस बिलके पैंतीस रुपये जो भरने पडेगे ।

ललिता — वह कोई मुझे थोडे ही मिलेंगे ?

रामबाबू — तुम्हारा ही तो बिल अदा करूँगा ।

ललिता — यह सब मैं नही जानती, मेरे तीन रुपये दीजिए ।

रामबाबू — अच्छा, बाकी हिसाब भी कर लो, फिर इकट्ठे ले लेना ।

ललिता — नही, पहले रुपये दीजिए, पीछे और हिसाब होगा ।

[रामबाबू हारकर जेबसे तीन रुपये निकालकर देते है]

ललिता — हाँ, अब कहिए ?

रामबाबू — ललिता, मैं चाहता हूँ कि हमारे घरका हिसाब बिलकुल सीधा और साफ रहे, जिससे हम दोनोंमें झगडा होनेकी कोई सम्भावना ही न हो, तभी मैं रोज़ तुमसे कहता हूँ कि एक कापी बनाओ, जिसमें पाई-पाईका हिसाब लिखो ।

ललिता मैंने तो एक और आसान तरीका सोचा है।

रामबाबू वह क्या ?

ललिता सब दुकानदारोंके पास बड़ी-बड़ी मोटी-मोटी कापियाँ होती है, जिनमें सबका लेना-देना लिखा रहता है। अगर हम भी कोई चीज़ नकद न खरीदें तो कैसा हो ?

रामबाबू क्या मतलब ?

ललिता मतलब यह कि एक तो नौकर लोग सौदा लेने जाते हैं तो पैसे खाते है। चीजें लाते है कम दामपर, बताते है ज्यादाकी। इनका इस तरह से पैसे बटोरना तो बन्द हो जायेगा।

रामबाबू यह तो तुमने अच्छी बात सोची।

ललिता [मन-ही-मन प्रसन्न होकर] दूसरा लाभ यह होगा कि आपके पास बिल आयेंगे और उन्हें देखते ही आपको मालूम हो जायेगा कि मैंने पैसे कहाँ-कहाँ खर्च किये।

रामबाबू [गम्भीर होकर] बिल तो मेरे पास वैसे ही बहुत आते है, ललिता।

ललिता [अनसुनी-सी करके] तीसरा लाभ यह होगा कि हमारी हर वक्तकी खटपट समाप्त हो जायेगी। आपका बहुत-सा कीमती वक्त जो हिसाब लेनेमें नष्ट होता है, बच जायेगा और दिमाग पर बोझ भी हलका हो जायेगा।

रामबाबू [बड़े ध्यानसे सुनते हुए] और ?

ललिता एक बात और जो सबसे अधिक जँचती है, वह यह कि जब किसी चीजकी जरूरत हो आप बिना किसी गहरे

सोच-विचारके उसे खरीद सकते हैं। पैसे जब चाहो, तब दो।

रामबाबू बात तो ठीक है, परन्तु ।

ललिता परन्तु क्या ? कोई नकद पैसे तो देने नही है। चीज़ तो अच्छी तरह ठोक-बजाकर देख लिया, दस दिन, बीस दिन, महीना भर इस्तेमाल करके भी देख सकते है। न पसन्द हो तो लौटा दी।

[कुसुम जो अब तक बैठी पत्रिका पढ रही थी, इस सुअवसरको पाते ही मॉके कानमें कुछ कहती है। ललिता सुन नहीं पाती]

कुसुम [फिरसे दबी आवाजमें] तब तो, मां, कण्ठी खरीदी जा सकती है।

रामबाबू [तनकर] कैसी कण्ठी ?

कुसुम [डरते हुए] जैसी मालती मौसीने खरीदी है आज, बडी सुन्दर है। आप देखेंगे तो मोहित हो जायेंगे।

रामबाबू तुम मालतीका मुकाबला थोडे ही कर सकती हो। उसका पति व्यापारी आदमी ठहरा। हमारी तरह नौकरी थोडे ही करता है।

ललिता आप क्या सोचते है कि जरा सी कण्ठीके लिए मैं उससे यह कह देती कि आप उसके पतिसे कम कमाते है ? ऐसा अपमान मैं कभी सह सकती हूँ, और फिर स्वय अपने मुँह-से ऐसी बात निकालूँ ? भगवान् ऐसे शब्द न लाये मेरी जबानपर।

रामबाबू — मै तो इसमे अपमान नही समझता।

ललिता — आपकी जो समझमे आये करें, पर मेरी सब सखियोको मालूम है कि आप किसीसे कम नही है। आज भी मैंने मालतीसे यही कहा।

रामबाबू — क्या ?

ललिता — यही कि बिलकुल ऐसी ही कण्ठी मैंने बम्बई बनने के लिए दे रखी है।

रामबाबू — झूठ क्यो बोला ?

ललिता — झूठ कहाँ, मुझे विश्वास है कि आप ले देंगे।

कुसुम — हाँ, हाँ, पापा, ले दीजिए न ? मै शीलाकी शादीमे पहनूँगी।

रामबाबू — [डाँटते हुए] मालूम है कण्ठी कितनेकी आती है ? और तुम्हे तो अपनी पढाई-वढाईकी फिक्र होनी चाहिए, न कि गहनोकी।

[मोहन कोनेमें बैठा रेडियोकी सूई इधर-उधर घुमा रहा था, कुसुम पर डाँट पड़ती सुनकर मुँह फेर लेता है। पापाको खुश करनेके लिए उनके हाँ-में-हाँ मिलाता है]

मोहन — हाँ, और क्या ! पापा, बिलकुल ठीक कहते है आप।

कुसुम — [कन्धे हिलाकर] हूँ ! स्वय तो सारे दिन हॉकी-फुटबाल खेलता रहता है, मुझसे कहता है पढो।

मोहन — और नही तो सारे दिन मधुबालाकी तसवीरें पास रखकर शीशेके सामने बैठी बाल सँवारा करो।

कुसुम — चुप रहो ! मेरी बातोमे दखल देने का तुम्हें कोई हक नही।

मोहन — हक क्यो नही, मै तुम्हारा बडा भाई हूँ।

[कुसुम कुछ जवाब देनेको होती है कि ललिता चुप करा देती है]

ललिता — यह लो, फिर झगडा शुरू हुआ ? कभी बात नही करने देते तुम लोग।

रामबाबू — चाय पी चुके, अब तुम लोग जाओ अपना-अपना काम करो।

मोहन — मुझे तो आपसे काम है।

कुसुम — पैसे लेने होगे।

रामबाबू — क्या हो गया है तुम सबको ? जिसको देखो, पैसे चाहिए, पैसे चाहिए, नही है मेरे पास पैसे-वैसे।

[ठहरना व्यर्थ समझकर मोहन चुपकेसे उठकर चला जाता है]

ललिता — आप व्यर्थ ही उसपर गुस्सा करते हैं। पढने-लिखनेवाला लडका, दो सालमे आपके साथ कमाने लगेगा। ऐसे ही उठा कर डाँट दिया। पूछ तो लेते क्या काम था ?

रामबाबू — मुझे मालूम है तुम सबके काम !

[कुसुम भी भाँप लेती है कि आज दाल नही गलनेकी। इसलिए वह भी चल देती है। रजीत लँगड़ाता हुआ आता है।]

रजीत — [ललितासे] माँ, यह नया जूता काटता है।

रामबाबू — [उसके पैरोंकी ओर देखकर] नया जूता !

ललिता — हां। आज ही लेकर दिया है। एक दुकानका दिवाला पिट गया, उसकी सब चीजे कम दामोपर बिक रही थी। यह फुलबूट अच्छे मजबूत नजर आये। मैंने ले दिये।

रामबाबू — इनकी क्या जरूरत थी ?

ललिता — मोटरमे साथ गया था। हर चीजको देखकर लेनेके लिए मचलता था। उन सबसे तो ये बूट ही अच्छे हैं, तीन-चार महीने चलेगे तो सही।

रामबाबू — तुम बहुत फजूलखर्च हो, ललिता।

ललिता — [व्यग्यात्मक हॅसीके साथ] लो, और सुनो, अठारह रुपयेके जूते ग्यारह रुपयेमें ले आयी हूँ, और वह भी फुल-बूट। इसीको आप फ़जूलखर्ची कहते है शायद ! पूछो कुसुमसे इस बूटके साथ जो परची लगी थी उसपर अठारह काट कर ग्यारह किया हुआ था या नही ?

रामबाबू — परचीसे क्या होता है ? अठारह भी उन्होने ही लिखे थे, ग्यारह भी उन्होने ही कर दिये। होगा ज्यादा-से-ज्यादा छह-सातका।

ललिता — इतना बडा बोर्ड लगा हुआ था 'सेल' का

रामबाबू — वह बोर्ड भी वो वही लगाते है। और फिर उसको कोई लडाईपर तो जाना नही जो फुलबूट चाहिए।

[रजीत मॉ बापकी बहस करते देख सहमा हुआ-सा खडा रहता है]

ललिता — क्यो, फुलबूट केवल लडाईपर जानेवालोंके लिए होते है ? तो फिर इतने छोटे बच्चेके लिए बनाये ही क्यों ?

रामबाबू	बननेको तो दुनियामें बहुत-सी चीज़ें बनती हैं, पर हर एक वही खरीदता है जो उसके कामकी हो ।
ललिता	तो यह रजीतके कामका क्यों नहीं है ?
रामबाबू	गरमियाँ आ रही हैं, फुलबूट
ललिता	[बात काटते हुए] गरमियोंके लिए ही तो है । छोटेवाले चटसे उतार फेंकता है । अब न उतार सकेगा, न नंगे पैर फिरेगा । फिर, देखो तो, मजबूत कितने हैं और दाम कितने
रामबाबू	इस हिसाबसे तो यदि तुम्हें कोई एक लाख रुपयेका हाथी पचहत्तर हज़ारमें दे तो तुम ख़रीद लो ।
ललिता	ऐसी बुद्धू नहीं हूँ कि इतने रुपये बेकारमें खर्च कर डालूँ ।
रामबाबू	और यह बेकार नहीं तो क्या
ललिता	बेकार कैसे, उसने पहने तो हैं ।
रामबाबू	लेकिन काटते जो हैं ।
ललिता	तो बच्चूको दे दूँगी । उसके पास कोई जूता नहीं है ।
रामबाबू	जमादारिनके लड़केको ? [माथा पीटकर] बलिहारी हूँ तुम्हारी समझपर ! इसीलिए तो कई बार कह चुका हूँ कि जब कुछ चीज़ खरीदो तो दुकानदारसे वादा करा लो कि यदि पसन्द न आयी तो वह वापस ले लेगा ।
ललिता	वापस ही करनी हो, तो खरीदनेकी क्या जरूरत है ।
रामबाबू	मेरा मतलब यह नहीं ।
ललिता	मैं नहीं सुनती । जैसे मेरी अपनी कोई समझ हो नहीं ।

रामबाबू मैं यह तो नही कहता, ललिता। मै तो केवल यह कहता हूँ कि पैसे व्यर्थ नही लुटाने चाहिए।

ललिता [रोनी-सी आवाजमें] सारा दिन आपके घर तथा बाल-बच्चोकी देख-भाल करती इधरसे उधर भागती फिरती हूँ। कभी नौकरोको डांटो, कभी बच्चोको नहलाओ तथा तैयार करके स्कूल भेजो, कमीज़ोमें बटन टांको, फटी जुराबे रफू करो, कभी घण्टो दुकानोके सामने खडी रहकर राशनका कपडा लाओ। ऊपरसे आप कहते है कि पाई-पाईका हिसाब लिखो। और कही ज़रा भूल हुई नही कि डांट पिला दी। [आँखोंमें आँसू डबडबा आते हैं]

[पत्नीकी आँखोंमें आँसू देख रामबाबू पसीज जाते हैं। उसे मनानेके लिए रजीतको, जो अबतक ललचायी हुई नजरोंसे मिठाईवाली मेजके पास खडा है, अपने पास बुलाते हैं]

रामबाबू कहाँ काटता है जूता ?

रजीत [पैरको हाथ लगाकर] यहां।

रामबाबू [मुसकराकर] रसगुल्ला खानेसे ठीक हो जायेगा ?

रजीत [शरमाकर हँसता हुआ] हाँ।

[रामबाबू रसगुल्ला देते हैं। रजीत एकदम सारा-का-सारा मुँहमें रख लेता है।]

रामबाबू अच्छा, बेटा, वह कविता तो सुनाओ जो मास्टरजी कल तुम्हे सिखा रहे थे।

रजीत मेरी प्यारी अम्मा, मेरी अच्छी अम्मा।

[रामबाबू बारी-बारी माँ-बेटेकी ओर देखते हैं। ललिता-के आँसू गायब हो जाते हैं]

रामबाबू — शाबाश! तुम्हें तो बहुत अच्छी तरह याद है। यह लो इनाम। [एक रसगुल्ला और देते हैं]

रंजीत — [मुँहमें रसगुल्ला रखकर] एक बार फिर सुनाऊँ?

ललिता — [उसकी बाँह पकड़के अपने पास खींचती हुई] नहीं, बेटा, बहुत लालच नहीं करते।

[रंजीत पहले माँकी ओर देखता है, फिर बापकी ओर। फिर एक रसगुल्ला और उठाता है और चटसे मुँहमें रख-कर भाग जाता है]

ललिता — [स्नेह-भरी दृष्टिसे बच्चेकी ओर देखती हुई] शैतान कहीं का! [कैलाश आता है] ये बरतन उठा ले जाओ।

[कैलाश बरतन उठाता है। रामबाबू अखबार देखने लगते हैं। ललिता खिड़कीके बाहर देखती है। बरतन उठाकर ले जाते हुए अचानक कैलाश चौखटसे ठोकर खा जाता है। बरतन गिरकर टूट जाते हैं]

ललिता — [क्रोधसे] गधा कहींका! तुम्हें चलना भी नहीं आता!

रामबाबू — [गुस्सेमें उबलते हुए] इस घरका कोई भी काम ठीक नहीं होता। किसीको किसी चीजकी रत्ती-भर भी परवा नहीं। [दरवाजेके पास पहुँचकर] कुछ बना भी कि नहीं? और यह पारसल कैसे है? [घूरकर ललिताकी ओर देखते हैं, जैसे जवाब माँग रहे हों]

ललिता — यही घरकी कुछ चीज़ें हैं।

रामबाबू — किस तरहकी ?

ललिता — यों ही कुछ खाना पकानेकी।

रामबाबू — देखें तो। [पारसल उठा लाता है]

ललिता — [बड़े विनीत भावसे] एक तो कुकर है। मैं इन नौकरोंसे बहुत तंग आ गयी हूँ। नित्य नयी चीज़ तोड़ देते हैं, और फ़जूलखर्ची, सो अलग। मैंने तो ठान लिया है कि इन सबको छुट्टी दे दूँगी।

रामबाबू — और रोटी ?

ललिता — मैं बनाऊँगी।

रामबाबू — [सन्देहसे] तुम ?

ललिता — हाँ। क्यों नहीं ? कुकरमें रोटी बनाना कोई कठिन थोड़े ही है। सब चीज़ें अलग-अलग काटके उनमें मसाला डालकर अलग-अलग डिब्बेमें भर देनी हैं। नीचे अँगीठीमें कोयले सुलगा देने हैं। सारा खाना दो घण्टेमें तैयार हो जायेगा। और केवल पाव-भर कोयले लगेंगे। ज़रा सोचो तो कितनी बचत है!

[रामबाबू बचतके विचारसे नम्र पड़ जाते हैं, पर सन्देह फिर भी नहीं जाता]

रामबाबू — तुम खाना बनाओगी ?

ललिता — और नहीं तो क्या! तुम तो मुझे न मालूम क्यों इतना नालायक़ समझते हो।

रामबाबू — पहले आइस बॉक्स जो लायी थी, वह कितने दिन बरता ?

ललिता — वह तो, खैर, और बात थी, उसमें झंझट कितना था ! बरफ मँगाओ, पानीकी बोतलें भरो, इसीलिए तो रेफ्रिजरेटर खरीद लिया था ।

रामबाबू — [व्यंग्यसे] कैसी कमालकी बचत है ! अब पचड़ेसे बचनेका क्या उपाय सोचा है ?

ललिता — कुकरका झंझट कैसा ? यही न कि डिब्बेमें-से निकालकर रोटी प्लेटमें रखो तो ठण्डी हो जायेगी ?

रामबाबू — हूँ ।

ललिता — उसकी भी व्यवस्था कर ली है मैंने । एक हाटकेस लायी हूँ ।

रामबाबू — [चौंककर] एँ ?

ललिता — क्यों, चौंक क्यों गये ? आपने क्या सोचा था कि मुझे रोटी बनाकर उसे गरम रखनेका तरीका भी न आयेगा ?

[रामबाबू हतबुद्धि-से देखते रहते हैं । ललिता कुकर खोलकर दिखाती है]

ललिता — यह देखिए, ये डिब्बे, यह नीचे कोयले रखनेकी छलनी । सबसे नीचेके डिब्बेमें चने रखना चाहिए, क्योंकि वह देरमें पकते हैं । सबसे ऊपरवाला डिब्बा चावल उबालनेके लिए है । जैसे ही खाना तैयार हुआ, उसे प्लेटोंमें परसा और हाटकेस [खोलकर दिखाती है] में रख दिया । फिर जिस वक्त चाहिए, अलमारी खोलिए, गरमागरम खाना परसा-परसाया मिल जायेगा ।

रामबाबू — यह है कितनेका ? कुछ कीमतका भी तो अन्दाज़ा हो ।

ललिता	कुकर तो है सत्तर रुपयेका और हाटकेस पचास रुपयेका ।

रामबाबू	एक चूल्हेके कामके लिए एक सौ बीस रुपये ?

ललिता	बहुत तो नही है ।

रामबाबू	तुम्हारे पास इतने रुपये आये कहाँसे ?

ललिता	कहाँ है मेरे पास रुपये ?

रामबाबू	तो ये कहाँसे खरीदे ?

ललिता	इनके पैसे तो हिसाबमे लिखवा दिये है ।

रामबाबू	कैसे हिसाबमे ?

ललिता	अभी तो फैसला किया था कि सब चीजें हिसाबमें लिखवा दी जायें । फिर महीनेके बाद सारा बिल इकट्ठा ही दे दिया जायेगा ।

रामबाबू	तो एक दम वापस करो इन्हें । बुलाओ ड्राइवरको ।

ललिता	क्यों, वापस क्यों ?

रामबाबू	नही, तुम खाना नही पकाओगी । मुझे नौकर रखना मंजूर है ।

ललिता	रखिए, मेरा क्या बिगडता है ? बरतन टूटेंगे, फजूलखर्ची होगी ।

रामबाबू	यही ठीक है । तुमने जितने पैसे बचत करनेके विचारमे ही खर्च कर दिये उतनेमें तो चार महीनेका खर्च निकलता ।

ललिता	करने भी तो नही देते कुछ । अभी देखो, कुकर लौटानेको कहते हो । मै कहती हूँ हाटकेस लौटा दो, कुकर रख लो ।

रामबाबू	कदापि नहीं । दोनो चीजें वापस करो । कहाँ है ड्राइवर ? बुलाओ उसको ।

[कुसुम, जो बरतनोंके टूटनेकी आवाज सुनकर अन्दर आयी थी, मौका पाकर माँके कानोंमें कुछ कहती है]

कुसुम [चुपकेसे] माँ, यदि ये चीजें लौटानी हैं, तो मुझे वह साड़ी ले लेने दो। हाटकेस भी पचास रुपयेका है और साड़ी भी पचासकी, कोई फालतू खर्च तो होगा नहीं।

ललिता हाँ, मोटर तो जा रही है, तुम भी चली जाओ।

[कुसुम जल्दीसे दरवाजेकी ओर बढ़ती है]

रामबाबू कहाँ जा रही हो ?

[कुसुम रुककर माँके मुँहकी ओर देखती है]

ललिता आप ही तो कह रहे हैं कि हाटकेस वापस करो।

रामबाबू हाटकेस ही नहीं, कुकर भी।

ललिता कुकर भी ?

रामबाबू हाँ। और ड्राइवर वापस कर आयेगा। कुसुमके जानेकी कोई जरूरत नहीं।

ललिता वह तो साड़ी लेने जा रही है।

रामबाबू मेरे पास साड़ीके लिए फालतू पैसे नहीं हैं।

ललिता आपसे माँगे कब हैं ?

रामबाबू साड़ी लेनेमें पैसे खर्च होंगे कि नहीं ?

ललिता नहीं।

रामबाबू क्यों ?

ललिता वह तो हाटकेसके बदलेमें आयेगी।

रामबाबू और हाटकेसके पैसे ?

ललिता उसके पैसे कैसे ? वह तो वापस भेज रहे हैं।

रामबाबू [भड़ककर] ललिता, इतनी छोटी-सी बात तुम्हारी समझमे नही आती ?

ललिता मेरी समझमे तो ठीक आ गयी। हाटकेस लौटा दिया और साडी ले ली। वह भी पचास रुपयेका, यह भी पचास रुपयेकी, न लेना, न देना।

रामबाबू परन्तु वह दोनोमें-से एक चीजके पैसे तो अवश्य लेगा।

ललिता [एकदम] न, न ! कभी मत देना ! कही ऐसी भूल न कर बैठना !

रामबाबू [सिरको दोनों हाथोंसे पकडते हुए] हे भगवन् ! [फिर जरा दम लेकर] जाओ, बाबा, जाओ। जो जीमें आये करो। जो चाहो खरीदो।

[कुसुम डरती हुई खडी रहती है]

रामबाबू जाओ, जाओ ! अब देखती क्या हो ? [कुसुम धीरे-धीरे वहाँसे चली जाती है] जाओ, मेरी जान छोडो। [फिर स्वय गुस्सेसे भरे हुए उठते हैं और जमीनपर पैर पटकते हुए दरवाजा झटकेसे खोल बाहर हो जाते हैं। दरवाजा इतनी ही जोरसे बन्द हो जाता है।]

[ललिता पहले तो हतबुद्धि-सी खडी रहती है। फिर सोफेपर बैठकर अपने बटुएमें-से एक छोटा-सा शीशा निकाल कानोंके बुन्दोंको बार-बार देखकर खुशीसे मुसकराती है]

[परदा]

जनता बेचारी

•

[मन्त्री महोदयका रेलवे-मिनिस्टरके नाम पत्र पहुँचा। वह अपने सचिवसहित किसी गम्भीर समस्याको सुलझानेमें व्यस्त थे। पत्रके ऊपर लगी 'आवश्यक' की मोहर देखकर जिज्ञासा-सी हुई। खोलकर पढने लगे। जैसे-जैसे पढते जाते माथेकी भृकुटियाँ चढती जातीं। सचिव अपने मिनिस्टरके चेहरेके हर वल और त्योरीको अब खूब पहचानने लगे थे।]

सचिव — क्या कोई दुर्घटना हो गयी ?

मिनिस्टर — लो, पढकर देख लो।

सचिव — [पत्रपर जल्दीसे दृष्टि दौड़ाता है।]

पत्र

1 अप्रैल 1949

"प्रिय मिनिस्टरजी,

मेरा विचार है कि आगामी 11 तारीखको मैं अपने निर्वाचन-क्षेत्र तथा कुछ और स्थानोका दौरा करने निकलूँ। आपको कष्ट इसलिए दे रहा हूँ कि मैंने निश्चय किया है कि अपने सैलूनका प्रयोग न करके तीसरे दर्जेके डिब्बेमें ही जाऊँगा, क्योंकि मुझे विश्वास है कि जनतासे सम्बन्ध बनाये रखनेका यही सबसे अच्छा और उचित उपाय है, दूसरी बात जो मुझे तीसरे दर्जेमें यात्रा करनेके लिए प्रेरित करती है, वह है अपने देशकी गरीबी। मैं समझता हूँ कि जहाँ दरिद्रताका इतना कोप है वहाँ हमारा प्रधान कर्त्तव्य यही होना चाहिए कि हम अपने उदाहरण-द्वारा

जनताको सीधा-सादा जीवन व्यतीत करनेकी शिक्षा दे। अत मैं आपको अपने पर्यटन कार्यक्रमकी एक प्रति भेज रहा हूँ। आशा है कि आप अपने रेलवे अधिकारियोंसे कहकर मेरी यात्राकी उचित व्यवस्था करवा देंगे। इसके लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।"

तो क्या इसका प्रबन्ध करना होगा?

मिनिस्टर अब कहते जो हैं तो कुछ करना ही पड़ेगा। किसीके दिमागमें कोई धुन समा जाये तो फिर

[उसी शामको रेलवे-मिनिस्टरके सचिवका मन्त्री महोदयके सेक्रेटरीसे क्लबमें भेंट हुई।]

रेलवे-सचिव हैलो! कैसे हो!

सेक्रेटरी मैं तो अच्छा हूँ। तुम सुनाओ।

रेलवे-सचिव भाई, तुम्हारा आजका पत्र तो बहुत रुचिकर था। मैं यह नहीं जानता था कि मिनिस्टरोंमें भी पहली अप्रैलके मजाक चलते हैं।

सेक्रेटरी क्यों, क्या हुआ?

रेलवे-सचिव तुम्हारे मन्त्री महोदयका कृपापत्र आया है आज। कहते हैं कि दौरा करने तीसरे दर्जेमें जायेंगे, उसके लिए व्यवस्था करवा दीजिए।

सेक्रेटरी सच? मुझे नहीं मालूम।

रेलवे-सचिव पहली अप्रैलका लिखा हुआ पत्र है। मैंने तो समझा मज़ाक है।

सेक्रेटरी उनके अपने हस्ताक्षर हैं?

रेलवे-सचिव बिलकुल! क्या कहने है, भाई, इन लोगोके! जैसे और मुसीबते काफी न थी।

सेक्रेटरी हूँ! अब समझा! बताऊँ यह कैसे हुआ होगा? तीन-चार दिन हुए हम एक पार्टीमे गये थे। वहाँ कुछ लोग बडे जोर-शोरसे आलोचना कर रहे थे कि लोग वोट लेनेके लिए तो बहुत प्रेमसे मिलने आते है, बढ-बढकर बाते करते है, परन्तु मिनिस्टर बननेकी देर है कि उनके कोशसे जनताका शब्द ही लोप हो जाता है। शानदार बँगलोमे रहते है जहाँ सर्वसाधारणको प्रवेश करनेकी आज्ञा ही नही। जब बाहर निकलते है तो मोटरोमे घूमते है या सैलून व हवाई जहाजमे, जनतासे कोसो दूर। मालूम होता है मत्रीजीके मनमे यह बात चुभ गयी है।

रेल्वे-सचिव दोस्त, इस बलाको टालो किसी तरह।

सेक्रेटरी इसका टालना मुश्किल ही है। जो धुन सवार हुई है उसे पूरा करके ही रहेंगे। तुम्हारे गले पडा है यह ढोल, बजाओ जैसे-तैसे।

रेल्वे-सचिव तो फिर प्रबन्ध करना ही पडेगा। [व्यग्यसे] अच्छा, तुम उसी डिब्बेमे जाओगे या सर्वेण्ट्सने? [मुसकराता है]

सेक्रेटरी पहले तो सर्वेण्टसका डिब्बा होता था। अब एक नये प्रकारके डिब्बे बनवाओ जिनका नाम हो पब्लिक सर्वेण्ट्स। [दोनों खिलखिलाकर हँसते हैं]

रेल्वे-सचिवका स्टेशन सुपरिण्टेण्डेण्टके नाम पत्र

"महोदय,

मैं इस पत्रके साथ मन्त्री महोदयके पहली अप्रैलके पत्रकी

कापी आपको भेज रहा हूँ। इससे सारी स्थिति आपकी समझमें आ जायेगी। कृपा करके आप अपने स्टेशनपर ११ अप्रैलके लिए उचित प्रबन्ध करवा दीजिए और उस लाइन-पर स्थित अन्य स्टेशनोंको भी सूचित कर दीजिए। रेलवे पुलिसको विशेष तौरपर आदेश कर दें कि जहाँ-जहाँ गाड़ी ठहरती हो उन सब स्टेशनोंपर मन्त्रीजीकी सुरक्षाकी व्यवस्था की जाये।

जैसे मैंने आपको टेलीफोनपर समझाया था, तीसरे दर्जेके एक नये-से डिब्बेमें पंखे फिट करवा दें, पुराने किस्मके डिब्बेमें नहीं।

छह तारीख तक सारा प्रबन्ध ठीक हो जाना चाहिए। सब तैयारी हो जाये तो हमें सूचित कीजिए।"

सात अप्रैल सन्ध्या समय प्लेटफार्मपर दिल्लीके असि-स्टेण्ट स्टेशन मास्टर और एक टिकिट कलेक्टरको यह बातें करते हुए।

टिकट कले० आज आप इस समय यहाँ कैसे? आपकी ड्यूटी तो पाँच बजे समाप्त हो जाती है।

अ० स्टे० मा० हाँ, नामको तो पाँच ही बजे समाप्त हो जाती है, पर यह हमारी सरकारके मालिक जो आये दिन [illegible] छोड़ते रहते हैं।

टिकिट कले० यह नयी बला क्या है?

अ० स्टे० मा० मन्त्री महोदय कहते हैं कि तीसरे दर्जेमें जायेंगे, सैलून नहीं।

टिकिट कले० तो इसमें कठिनाई क्या है? तीसरेमें ही भेज दीजिए।

अ० स्टे० मा० कठिनाई ? पहले तो एक अच्छा नया-सा तीसरे दर्जेका डिब्बा ढूँढा गया है। उसमे पखे लगा रहे है। नये सिरेसे पेण्ट पालिश हो रहा है। अच्छे-भले पांच सैलून यार्डमे खडे है, कील-कांटेसे लेस। आज्ञा होती तो दस मिनिटके नोटिसपर भी लगा सकते थे। किन्तु यह तो बेकार काम बढाते है। पहले ही काम इतना है कि मरे जाते है और ऊपरसे यह

टिकिट कले० कामका तो नाम ही न लो, दिन पर दिन बढता ही चला जाता है।

अ० स्टे० मा० [धीरेसे] एक बात बताऊँ ?

टिकिट कले० क्या है ?

अ० स्टे० मा० किसीसे कहना नही।

टिकिट कले० यह आप कैसी बात करते है।

अ० स्टे० मा० सुरक्षाकी व्यवस्थाके सम्बन्धमे पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टने स्टेशन सुपरिण्टेण्डेण्टसे साफ-साफ़ कह दिया कि या तो साथवाले डिब्बेमे वरदी पहने पुलिसमैन जायेंगे या आसपासके तीन-चार डिब्बोमे साधारण वस्त्र पहने हुए सी० आई० डी० के आदमी। नही तो वह सुरक्षाका उत्तरदायित्व लेनेको तैयार नही। फैसला यही हुआ कि सी० आई० डी० वाले ही जायें।

टिकिट कले० [हँसता है] क्या कहने है अपने लोकप्रिय मन्त्रियोके !

अ० स्टे० मा० ऊपरसे तो सब तीसरे दर्जेके यात्री ही दिखाई देंगे। वही गठरियां, लाठियां, हुक्के और वैसा ही शोर मचायेंगे, केवल ज़रा आदरके साथ।

[आठ अप्रैलको भेजा गया डायरेक्टर पब्लिसिटीका असिस्टेण्ट डायरेक्टर पब्लिसिटीके नाम नोट

"मन्त्री महोदयके पर्यटनके कार्यक्रमके सिलसिलेमें जो आदेश पहले दिये गये हैं उनके अतिरिक्त एक फोटोग्राफर और एक प्रेस रिपोर्टरको साथ भेजनेका भी प्रबन्ध किया जाये। रिपोर्टरको चाहिए कि प्रत्येक बड़े स्टेशनसे टेलीफोन व तार-द्वारा सारा वृत्तान्त यहाँ भेजे और फोटोग्राफरको यह समझा दिया जाये कि तसवीरें ऐसी हों जिनमें मन्त्री महोदय तीसरे दर्जेके अन्य यात्रियोंसे बातचीत तथा मेलमिलाप बढ़ाते दिखाई दें, विशेषकर छोटे स्टेशनोंपर इस बातको खास तौरसे ध्यानमें रखा जाये।"

दिल्लीके रेलवे स्टेशनपर ११ अप्रैलकी सुबहके कोई पाँच बजेके लगभग।

प्लेटफार्म साफ़ सुथरा है। छिड़काव किया गया है। तीसरे दर्जेके एक डिब्बेके सामने एक पुलिसमैन खड़ा है। एक साधारण यात्री, बेचारा भूला भटका, अनजान, अपना बोरिया बँधना उठाये, हाथमें हुक्का पकड़े तीसरे दर्जेके डिब्बेके सामनेसे गुजरता है, और उसे खाली पड़ा देख लपक कर अन्दर जानेको बढ़ता है। किन्तु पुलिसमैन उसे दरवाजेपर ही रोक देता है।]

पुलिसमैन — [कड़ककर] देखते नहीं, इस डिब्बेमें तुम नहीं बैठ सकते। चलो, चलो आगे! यह तुम्हारे लिए नहीं है। चलो!

यात्री — मेरे लिए क्या नहीं, भाई? मेरे पास भी टिकिट है।

[जेवमें हाथ डालता है ।]

पुलिसमैन तुमको कहा, जाओ । क्या धक्के खाकर ही हिलोगे ? जाओ ।

यात्री कुछ पता भी तो चले कि आखिर क्यो ?

पुलिसमैन इसमे मिनिस्टर साहब जा रहे हैं ।

यात्री क्यो ? उनकी अपनी सफेद गाडी जो है, उसमे क्यो नही जाते ? क्या वह पचर हो गयी है ?

पुलिसमैन तेरे साथ बहस करनेको समय नही है मेरे पास । चलो, आगे बढो । मान जाओ मेरी वात और चलते वनो । कही वैठनेको जगह न मिले तो मुझे वताना, मै दिलवा दूँगा ।

यात्री [व्यग्यसे] इनमें वैठने नही देते जो खाली पडा है और दूसरे डिब्बमे जगह दिलवा देनेको कहते हो जहाँ इतनी भीड है ।

पुलिसमैन तुमको भीडसे क्या मतलव ? तुम्हें तो वैठनेको जगह चाहिए ।

यात्री मन्तरीजी महाराज, हम तो गँवार लोग ठहरे, हमे आपकी वातोकी वारीकियाँ नही समझमे आती । पर हमारी मोटी अक्ल तो यही कहती है कि मन्त्रीजी अपनी सफेद गाडीमें जाते तो अच्छा था । वह भी आरामसे जाते और इस डिब्बे-मे पचीस-तीस आदमियोको वैठनेको जगह मिलती । किन्तु आप तो वडे लोग ठहरे, हमारा और आपका क्या मुका-

बला। आप सरकार हुए, आपसे कैसे टक्कर लें! आपकी ही लाठी आपकी ही भैंस। [गठरी उठाकर हुक्का हाथ में थामते हुए] चल रे, मना!

[धीरे-धीरे चल देता है। पुलिसमैन अपनी जगह पर अटल खड़ा रहता है।]

[परदा]

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित कुछ विशिष्ट नाट्य-कृतियाँ

- घाटियाँ गूँजती हैं

  डॉ० शिवप्रसाद सिंह

  चीनी आक्रमणकी पृष्ठभूमिमें लिखा गया यह नाटक चीनके बर्बर विश्वास-घातका कोई इतिहास-जैसा न देगा, उस समूचे परिवेशका यह जलता साक्ष्य है जिसे आधार-रूपमें इतिहास मानेगा। तीन अंकों और तीन दृश्योंमें सहज ही अभिनेय। **मूल्य २ ५०**

- आदमीका ज़हर **लक्ष्मीकान्त वर्मा**

  आजके जीवनके अनेक प्रश्नों और समस्याओंसे सम्बन्धित पाँच रेडियो नाटक, जिन्हें पढ़ना अच्छा लगेगा और फिर जिनपर सोचना लाभदायक होगा। **मूल्य ३ ००**

- तीन ऐतिहासिक नाटिकाएँ

  परिपूर्णानन्द वर्मा

  एक ऐसी कृति जो इतिहासके तीन घटना-अध्यायोंकी आवृत्ति-मात्र नहीं करती, उन्हें नयी व्याख्या भी देती है। **मूल्य ४ ००**